हस्तलिपि-विज्ञान



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६ पटना ६

॥हस्तलिपि-विज्ञान॥

॥ बालकृष्ण मिश्र ॥

प्रथम संस्करण
१९६८

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
दिल्ली ६

आवरण
रिफार्मा स्टूडियो दिल्ली ६

मूल्य
१

मुद्रक
नवीन प्रेस दिल्ली ६

समपण

उस मालिक को जिसने
ज्ञान के दीप
जलाये

प्रस्तावना

कुछ वर्ष हुए मैंने हस्तलिपि विज्ञान के विषय में एक लेख लिखा था। यह 'विज्ञान-ज्ञान पत्रिका' ग्वालियर में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पुस्तक की वास्तविक भूमिका वही लेख है। कुछ संशोधन के साथ वह लेख इस पुस्तक के प्रारम्भ में दिया गया है। विषय की सहज व्याख्या इसमें मिलेगी। हस्तलिपि विज्ञान की उपयोगिता—सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में प्रयोग, इसके प्रति मेरा अपना दृष्टिकोण आदि मूल प्रश्नों का संक्षिप्त विवेचन इस लेख में मिलेगा।

इस लेख के प्रकाशन के उपरान्त अनेक गम्भीर प्रश्न मेरे सामने आए। हस्तलिपि विज्ञान की वैज्ञानिकता के विषय में बहुत-सी शंकाएँ, आलोचनाएँ प्रस्तुत हुईं। जो विद्वान गम्भीर विचारक महानुभाव इस विषय की ओर आकर्षित हुए, और जिन पाठकों को इस विषय की मनोवैज्ञानिक क्षमता प्रदर्शित की गई तथा इसका कुछ अनुभव हुआ, उन्होंने समय समय पर मुझे यथोचित प्रोत्साहन दिया। इन महानुभावों से मुझे ऐसी प्रेरणा मिली कि हस्तलिपि विज्ञान के विषय पर और अधिक प्रकाश डाला जाए तथा इस विषय की विधिवत् प्रक्रिया का सुविस्तृत विवेचन किया जाए। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत पुस्तक की रचना का प्रयास किया गया है।

पाश्चात्य देशों में प्रायः गत एक शताब्दी से इस विषय पर गम्भीर खोज हो रहा है। अनेक प्रयोग एवं अनुसन्धान कार्य चल रहे हैं। फलस्वरूप इस विषय का पर्याप्त एवं गम्भीर साहित्य प्रकाशित हो चुका है। यह साहित्य मूलतः जर्मन एवं फ्रेंच भाषाओं में है। अंग्रेजी में भी इस विषय का काफी साहित्य उपलब्ध है। इन देशों में यह विषय विशिष्ट ज्ञान के रूप में

पुष्टता प्राप्त कर चुका है तथा मनोविज्ञान शास्त्र का एक आवश्यक एव उपयोगी अग मान लिया गया है। हैम्बर्ग बोन म्यूनिख आदि कई महाविद्यालयो म यह विषय प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है। परन्तु वहा के पण्डितो ने केवल रोमन लिपि का ही उपयोग किया है।

जो मूल तत्व रोमन लिपि पर सिद्ध हो सकते हैं वे अथवा उस प्रकार के अन्य सिद्धान्त अन्य लिपि-रूपो पर सामान्यत लागू हो सकते हैं। इस प्रकार के विचार से मैंने हस्तलिपि विज्ञान का उपयोग देवनागरी आदि उत्तर भारतीय लिपियो पर प्रारम्भ किया है। हिन्दी म इस विषय की कोई आदर्श पुस्तक प्राप्त न होने सकने म इस अनुसन्धान प्रयोग एव लेखन कार्य म असुविधाए रही हैं जिनको सुलझाने का प्रयास मैंने किया है सफलता कहा तक मिल सकी है इसका उचित अकन पाठकगण ही कर सकेंगे। मेरा मूल प्रयास इस विषय से सम्बन्धित ज्ञान एव प्रारम्भिक सामग्री का सचय करना रहा है और आशा रही है कि यह आगे आने वाले जिज्ञासु मनोविज्ञान के विद्वानो के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

पाश्चात्य देशो म हस्तलिपि विज्ञान का लक्ष्य जीवनोपयोगी व्यावसायिक, औद्योगिक आदि पक्षो म रहा है जिनमें मानव-स्वभाव के मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म निरीक्षण की महत्ता है, जैसे कि विभिन्न प्रकार के पदो के लिए प्रार्थी आवेदको का चुनाव छात्रो के लिए शिक्षा सम्बन्धी सलाह नवयुवतियो एव नवयुवको के लिए व्यवसाय सम्बन्धी मार्गदर्शन मानसिक स्वास्थ्य एव सदाचार म सलाह तथा बाल मनोविकार-सम्बन्धी परामर्श आदि। अत यदि भारतीय विद्वान् समीक्षक इस विषय का लक्ष्य निर्धारित करके इसकी गम्भीरता म प्रवेश करेंगे तो निश्चय ही विषय-परिचय एव तत्सम्बन्धी उपयोगिता अधिक सफल सिद्ध होगी।

प्राय पिछले पच्चीस वर्षों स यह कार्य धीरे धीरे अवकाशानुकूल चलता रहा है। इस काल म बहुत-से विद्वान् महानुभावो शिक्षको तथा मनोविज्ञान के वरिष्ठ अधिकारियो तथा सहृदय मित्रो न प्रोत्साहन एव योगदान किया है। इसके लिए मैं अपना आभार प्रदर्शित करता हू। श्री प्रफुल्ल चन्द्र चटर्जी भूतपूर्व प्रधानाचार्य विपिनविहारी विद्यालय

झाँसी तथा श्री एफ० सी० चौबिया वरिष्ठ अधिकारी, व्यावसायिक परामर्श संस्था, महाराष्ट्र राज्य बम्बई एवं श्री रामचन्द्र रिछारिया प्रचार अधिकारी, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय का विशेष आभारी हूँ। इनके निर्देशन प्रेरणा एवं सहयोग के बिना सम्भवतः प्रस्तुत कार्य सम्पन्न नहीं हो पाता।

श्री राजेन्द्र शर्मा का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस पुरुषोत्तमदास टण्डन, राहुल सांकृत्यायन, सरदार वल्लभभाई पटेल और रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि की बहुमूल्य हस्तलिपियाँ प्रदान कर इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ाने में मेरी सहायता की। महात्मा गांधी के पत्र के लिए मैं राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली का आभारी हूँ।

परमावश्यक आभार श्रीमती शीला संधूजी, निदेशक राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० को भी है जिनकी उदारता से यह नवीन विषय प्रकाश में आ रहा है।

झाँसी —बालकृष्ण मिश्र

सूची

हस्तलिपि-विज्ञान

हस्तलिपि विज्ञान का लेखक के स्वभाव व्यक्तित्व और मानसिक अवस्था से सीधा सम्बन्ध है। इस सत्य का अनुभव हम सब नित्य ही करते हैं। लिखने वालों की लिखावट पहचानी जाती है। उदाहरणार्थ जैसी मेरी लिखावट है वैसी आपकी नहीं है। और जैसा आप लिखते हैं वैसा केवल आप ही लिखते हैं। आपकी लिखावट का अपना मौलिक रूप है जिसे आपके परिचित व्यक्ति भली भाँति पहचानते हैं।

लिखावट के थोड़े से चिह्नों अधोगामी अग्रगामी ऊर्ध्वगामी वक्राकार सीधी रेखाएं कुछ विसर्ग और विराम का गढ़ लिखने वाले अपने विशेष ढंग से लिखते हैं। ऐसा क्यों? हस्तलिपि विज्ञान की उत्पत्ति इस क्या? सूचक प्रश्न के सहारे होती है। जैसा आप लिखते हैं आप वैसा ही क्यों लिखते हैं? आपके इस विशेष ढंग से लिखने में अवश्य ही कोई रहस्य है। इस रहस्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना हस्तलिपि विज्ञान का ध्येय है।

हस्तलिपि विज्ञान से लिखने वाले के स्वभाव मानसिक गठन तथा चरित्र के ऐसे विशेष लक्षणों का पता चलता है जो उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। यह विद्या कोई भूत भविष्य बताने वाली ज्योतिष विद्या नहीं है वरन् विज्ञान पर आधारित मनुष्य के चरित्र का दर्पण है। इसके द्वारा हम यह देखते हैं कि अमुक व्यक्ति वास्तव में क्या है। कितने गहरे पानी में है।

बात यह है कि मनुष्य के स्वभाव में, मन में तथा चरित्र में जो भी शक्तियाँ भली-बुरी प्रवृत्तियाँ प्रधान होती हैं वे मनुष्य की प्रत्येक क्रिया पर अपना प्रभाव अपनी छाया डालती हैं। क्रोधी अथवा अशान्त प्रकृति का मनुष्य जिस विशेष प्रकार से चलता फिरता है अथवा विशेष हाव भाव से बात चीत करता है उसी प्रकार वह विशेष ढंग से विशेष चिह्नों शब्दों घुमाव बिन्दुओं मात्राओं द्वारा लिखता भी है। उसका अन्तःकरण उसे बाध्य करता है कि वह अपनी हस्तलिपि में

अपनी विशेषता की छाप लगा दे। इस प्रकार से भिन्न भिन्न मानसिक अवस्था में लिखे गए पत्रो को देखते हुए एक ही प्रकार के चरित्र-गुण वाले भिन्न भिन्न व्यक्तियों की लिपि को देखते हुए इस विद्या को वैज्ञानिक रूप मिलता है और हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि अमुक प्रकार की लेखन शैली वाला व्यक्ति अमुक प्रकार की मानसिक विशेषता रखता है। अमक प्रकार का आचरण करता है। उदाहरण के लिए कह सकते हैं कि विभिन्न प्रकार के व्यक्ति जैसे कि आत्म निर्मित व्यक्ति उत्साही व्यक्ति लोभी तथा कायर व्यक्ति चचल व्यक्ति अपनी विभिन्न लिखावटें लिखते हैं। इन लिखावटो पर उनकी सामयिक एव मानसिक परिस्थितियों का प्रभाव पडता है। जैसा कि भय घबराहट क्रोध दु ख निराशा आदि उत्तेजना की अवस्था में लिखी गई पक्तियाँ तथा अक्षर अपने स्वभाव के अनुरूप विभिन्नता प्रदर्शित कर देते हैं। जो मनुष्य स्वभाव से गम्भीर और स्थिर चित्त है उसे अपने उत्तेजना जनित आवेश तथा घबराहट को रोक लेने की आदत होती है। उसे अपने मन पर अधिकार होता है। उसकी आत्मशक्ति दृढ होती है। परिस्थितियाँ उसे हिला नहीं सकती। अत लेखनी भी उसके अधिकार में चलती है। उसके बनाए हुए अक्षर स्थिर रहते हैं। कारण क्या है? उसके भावुकता के आवेग से उसकी आत्मशक्ति की मात्रा कही अधिक बलवान होती है। भावुकता में मनुष्य क्या नही दे डालता क्या त्याग नहीं कर देता है? तो क्या वही व्यक्ति लेखनी चलाते समय स्याही अथवा स्थान की कजूसी करेगा? उसकी लेखनी में स्याही उसकी भावुकता के प्रवाह की तरह प्रचुर मात्रा में बहना स्वाभाविक ही है। भावुकता प्रधान व्यक्ति की लिखावट में परिवर्तनशीलता की मात्रा अधिक पाई जाती है। इसमें आत्म निर्माण की शक्ति निर्बल रहती है। आध्यात्मिक वृत्ति वाला व्यक्ति अपने मन को अपने विचारों को ऊपर अनन्त की ओर उठाने का प्रयत्न करता है। इसलिए जब वह लिखता है तब उसके अक्षरों का ऊपरी भाग अधिक स्पष्ट और उन्नत होता है। अपने आपको कुछ विशेष महत्वपूर्ण समझने वाले व्यक्ति अपनी बात को असाधारण और आवश्यक जोर देकर कहता अथवा दोहराता है। कारण यह है कि उसका अन्तर्मन अपनी दुर्बलता को जानता है कि उसकी बात को साधारण ढग से वह महत्त्व नहीं मिलेगा जो कि वह प्राप्त करना चाहता है। इसमें आत्म विश्वास की कमी है। यह व्यक्ति जब लिखता है अथवा अपने हस्ताक्षर करता है तो उसके नीचे रेखना पर विशेष दबाव देकर एक रेखा अथवा एक से अधिक रेखाएं खीच देता है। ऐसा कोई अन्य व्यक्ति बडे आकार के अक्षर बनाता है। देखा गया है कि अधिकतर ऐसे व्यक्ति अपने अक्षर बडे आकार के तथा अस्पष्ट बना देते हैं। ये आचरण किसी प्रकार की विलक्षणता के चिह्न बनाने के लिए होते हैं जिसमें पाठकों का ध्यान उनकी ओर विशेष रूप से आकर्षित हो सके। मानो वह चिल्लाकर कहता है कि देखिए श्रीमानजी मैं हूं। मैं यहाँ हूं मुझे भी देखिए।

मेरे महत्त्व की ओर ध्यान दीजिए। इस तरह से हम देखते हैं कि लिखावट मनुष्य की एक ऐसी क्रिया है जिस पर उसकी मानसिक अवस्था का तुरन्त स्पष्ट एवं शुद्ध प्रभाव पड़ता रहता है।

इस प्रकार के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस विषय का अध्ययन तथा शुद्ध वैज्ञानिक आधार तैयार होता है जिस पर सन्देह नहीं किया जा सकता। मनुष्य के व्यक्तिगत मूल्यांकन उसकी वास्तविक पहचान करने का सबसे अच्छा और सही माध्यम उसकी लिखावट ही है। मनुष्य अपना काम निकालने के लिए एक बार अपनी भाषा वाणी हाव भाव मुख चेष्टा इत्यादि को समयानुकूल नाटकीय बनाकर आपको धोखे में डाल सकता है। परन्तु अपनी लिखावट में वह अपने अन्तःकरण की अज्ञात प्रेरणाओं को स्पष्ट होने से नहीं रोक सकता है। इससे पहचान होती है कि लिखने वाला व्यक्ति किस प्रकार का व्यक्ति है। कितने गहरे पानी में है।

आज से प्रायः ८० वर्ष पूर्व फ्रांस के प्रसिद्ध इतिहासकार पादरी मिको ने इस विद्या की खोज की थी और इस विषय के अध्ययन की नींव डाली थी। उन्होंने बहुत से प्रयोग किए थे। उनके आधार पर हस्तलिपि विज्ञान के अनेक मूल तथ्यों का निर्माण किया था। तदुपरान्त इनमें से कतिपय तथ्य प्रामाणिक आधार को प्राप्त कर सके। अन्य अनेक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं ठहर सके। पादरी मिको के बाद यूरोप के अनेक विद्वान विभिन्न परिस्थितियों में इसकी छानबीन के प्रयोग करते रहे। इसमें अनेक दृष्टिकोण जैसे कि शरीर शास्त्र, मनोविज्ञान शास्त्र दर्शन शास्त्र शिशु विज्ञान शास्त्र आदि सम्मिलित हो गए थे।

सन् १८९५ से १९२० तक फ्रांस जर्मनी, इटली स्विट्जरलैंड व आस्ट्रिया में इस विषय पर बड़े-बड़े गम्भीर अनुसंधान होते रहे। शिशु विज्ञान के विशेषज्ञ डाक्टर प्रायर मनोविज्ञान के डाक्टर मायर दार्शनिक डाक्टर क्लाग्स के द्वारा इस विषय की नींव मजबूत और विधिवत् होती गई। तदुपरान्त डाक्टर राबर्ट सोडव और हन्स स्वाबो ने भी इस क्षेत्र में विशेष कार्य किया है। आज दिन भी रिचार्ड एडन हैरी ओ टेलर एरिक सिंगर आदि बहुत से यूरोप और अमरीका के महान् विद्वान् इसके प्रसार और प्रचार के कार्य में लगे हुए हैं।

इस विद्या का सबसे अधिक प्रचार जर्मनी में हुआ। द्वितीय महायुद्ध के पहले बोन हैम्बर्ग बर्लिन म्यूनिक लिपजिग इत्यादि अनेक महाविद्यालयों में इस विद्या की शिक्षा होने लगी थी। जो युद्ध के काल में गेस्टापो के विशेष कारणों से बन्द कर दी गई थी। युद्ध के उपरान्त पुनः इसका पठन-पाठन वहाँ प्रारम्भ हो चुका है। क्योंकि इसका उपयोग समाज तथा राजनीति कुटुम्ब तथा उद्योग के प्रत्येक अंग में होता है। इसलिए जर्मनी ने इसे अपनी उन्नति और राजनीति का विशिष्ट अंग बनाया। यही कारण है कि जर्मन अपने कर्मचारियों के विशिष्ट चुनाव में इतने सतर्क रहते हैं। जर्मनी में उपयुक्त कर्मचारी का चुनाव बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

करने का प्रयास करता है और दूसरी तरफ अपने भाग्य को कोसने में लगा रहता है। कभी वह देश की आर्थिक दशा को भला-बुरा कहता है और कभी राज्य-प्रणाली एवं उसकी कार्यधारा में दोष निकालता रहता है। उसका जीवन किसी प्रकार से व्यतीत होता जाता है।

पश्चिमी यूरोप के देशों और अमरीका ने इस विज्ञान का प्रयोग अपराध की छानबीन और अपराधी प्रवृत्ति को सुधारने के काम में भी किया है और जहां-जहां इसको अवसर मिला है इसे सफलता मिली है।

न्यायप्रियता, उत्तरदायित्व, आत्मसम्मान की भावना, दृढ़ निश्चय, उदारता, सहनशीलता और धैर्य इत्यादि स्वस्थ लक्षण और इसके विपरीत कपट, मत्सरता, आडम्बर, कायरता इत्यादि हीन लक्षण प्रायः मानव समाज में ऐसे साधारण अपितु व्यापक लक्षण हैं जो व्यक्तिगत आचरण का संचालन करते हैं। परन्तु बहुधा यह मुख्य और आवश्यक लक्षण होते हुए भी तब तक अपने यथार्थ रूप और मात्रा में दृष्टिगोचर नहीं होते जब तक व्यक्तिगत स्वभाव का लगातार और बहुत समय तक गम्भीरतापूर्वक अध्ययन न किया जाए। ये स्वस्थ अथवा हीन लक्षण आचरण के द्वारा ही दृष्टिगोचर होते हैं। हस्तलिपि व्यक्तिगत आचरण का छपा हुआ रिकार्ड है। जो जैसा एक बार छप जाता है उसे मिटाना अथवा बदलना सम्भव नहीं हो सकता और इसको समय समय पर पुनः निरीक्षण के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है।

हस्तलिपि विज्ञान नूतन अवश्य है परन्तु अनुसन्धान और प्रयोग के क्षेत्र में यह अपनी उपयोगिता पूर्णतया और बार बार सिद्ध कर चुका है। पिछले महायुद्ध में अमरीका की सरकार ने अपनी सेना के लिए विश्वस्त पदाधिकारियों का चुनाव और उनकी नियुक्ति जैसे कठिन कार्य की पूर्ति के लिए इस विद्या को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया था।

हस्तलिपि द्वारा उच्च पदाधिकारी अपने विभागों में नौकरी के लिए चुने जाने वाले व्यक्तियों की उपयोगिता या अनुपयोगिता जान सकते हैं। सरकारी नौकरी में उत्तरदायित्व का बहुत ऊंचा स्थान है और कौन सा व्यक्ति किस स्थान के लिए उपयुक्त है यह बहुत कठिन प्रश्न है यदि मनुष्य के व्यक्तित्व के महत्त्व का सम्बन्ध उसके कार्य से है। इस प्रश्न का हल करने का अभी तक कोई विश्वसनीय साधन नहीं है। यदि सही आदमी सही पद पर नियुक्त हो सकें तो हमारी बहुत सी ऐसी समस्याएं जिनके कारण जीवन कठिन हो रहा है सुलझ जाएं। हस्तलिपि-विज्ञान इस क्षेत्र में भी सहायता का हाथ बढ़ाने के लिए तैयार है।

२

हस्तलिपि और व्यक्तित्व

लिखावट मे मौलिकता

हस्तलिपि का लेखक के व्यक्तित्व से गहरा सम्बन्ध है और इस सत्य का अनुभव हम सब नित्य ही करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की लिखावट का एक अपना निराला रूप होता है। इसकी सचाई की जांच यह है कि सब लिखने वालों की लिखावटें अलग अलग पहचानी जाती हैं। उदाहरण के लिए कह सकते हैं कि जैसी मेरी लिखावट है वैसी आपकी लिखावट नहीं है। जैसा मैं लिखता हूं वैसा केवल मैं ही लिख सकता हूं। जैसा आप लिखते हैं वैसा केवल आप ही लिखते हैं।

लिखावट की इस मौलिकता को हम भली भांति और सहज ही पहचान लेते हैं। यह पहचान इतनी ही सहज है जितनी कि किसी भी परिचित व्यक्ति की आकृति से उसकी पहचान लेना। परिचित व्यक्ति अपने स्वर, चाल ढाल एवं अन्य आचरणों से भी पहचाने जाते हैं। परन्तु इस प्रकार के व्यवहारों का कोई स्थायित्व नहीं है। इस प्रकार के अनेकानेक व्यक्तिगत व्यवहारों को अथवा अनेकानेक व्यक्तिगत आचरणों में से किसी एक को भी कोई स्थायी मान प्रमाण तथा प्रमाण नहीं है। ये व्यक्ति के प्रमाण नहीं माने जा सकते। परन्तु लिखावट इन सबसे भिन्न है। यह निश्चय ही व्यक्ति का एक आचरण है। ऐसा ही व्यक्तिगत आचरण है जैसा कि उसका स्वर, चलने फिरने का निजी ढंग आदि। परन्तु इसमें एक विशेषता है, वह है इसका चिर और चिरस्थायी स्थायीत्व। जो लिखा है सामने है। इसमें शब्द कागज के पत्र पर स्याही की स्पष्ट कालिमा है और इसी के लिए है। समय पड़ने पर निरापद उदाहरण एवं प्रमाण के लिए ये अनेकानेक लिखावटें प्रस्तुत की जा सकती हैं। ये सदा पहचानी जा सकती हैं। इस लिए व्यक्ति की आकृति पहचानी जाती है। उदाहरण के लिए कहा जाता है कि जब

आपके पास कोई पत्र आता है तो लिफाफे के ऊपर लिखे हुए पते की लिखावट से ही पत्र लिखने वाले का पहचान हो जाता है यदि उस व्यक्ति की लिखावट से परिचित होते हैं।

एक कक्षा के विद्यार्थी अपने सहपाठी अन्य विद्यार्थियों की लिखावटें पहचानते हैं। वे सब अपने अध्यापकों की लिखावटें पहचानते हैं। अध्यापक-गण भी अपनी कक्षा के सब विद्यार्थियों की लिखावट पहचानते हैं। आप अपने साथ में काम करने वालों की लिखावट पहचानते हैं और किसी समय भी उनमें से किसी एक को देखते ही कह उठते हैं कि यह अमुक व्यक्ति ने लिखी है। इस तरह से हमको विश्वास कर लेने का अवसर प्राप्त होता है कि सब लिखने वालों की लिखावट अपना निजी मौलिकता रखती हैं और लिखावट का उसके लिखने वाले से इतना सीधा सम्बन्ध है कि दोनों को एक ही मान लेने में हमको किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती।

इस प्रसंग में एक और सर्वत्र असंगत प्रतीत नहीं होता। राजकीय स्तर पर भी लिखावट की मौलिकता को मान्यता प्राप्त है। बहुधा स्थान प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र आवेदक की अपनी लिखावट में ही मंगाए जाते हैं। अनेक आवश्यक लेख हस्तलिपि में ही लिखे जाते हैं। और किसी भी स्थान पर जहाँ व्यक्तिगत अधिकार को प्राथमिकता देना आवश्यक है अपने हाथ से ही हस्ताक्षर करना पड़ता है। बैंकों में पोस्ट आफिसों तथा कचहरियों में जहाँ कहीं भी किसी प्रकार का लेन देन होता है वहाँ निजी हस्ताक्षर की स्थिरता को विशेष महत्व दिया जाता है।

लिखावट के विषय में ये सामान्य विचार हैं। जबकि हम सब अपने व्यवसायी जीवन में तथा परस्पर-व्यवहार में नित्य ही देखते हैं अनुभव करते हैं तथा उनको मानते आए हैं। लिखावट सम्बन्धी इस प्रकार के अनेक उदाहरण हम लिख सकते हैं तथा वे प्रस्तुत भी किए जा सकते हैं। परन्तु वैज्ञानिक के लिए इतना पर्याप्त नहीं है। हो सकता है कि यह विचार सरसरी तौर पर सामने आए हैं। गवेषणात्मक व्यक्तियों की अभिरुचि में तथा गुणदोष निरपेक्ष समालोचकों की दृष्टि में इस प्रकार की शंका उत्पन्न हो सकती है और यह न्याययुक्त भी है जब तक हम इसके समर्थन में पर्याप्त निश्चित प्रमाण नहीं मिल जाएं। बहुत-सी बातें जो हमारे मन में उत्पन्न होती हैं वे हमारी अल्पज्ञता के कारण भी हो सकती हैं। गम्भीर मानसिक परिपक्वता यही है कि किसी भी धारणा को मान लेने से पहले उसके विषय में पर्याप्त छानबीन हो जाए और उसके समयुक्त प्रमाण मिल जाएं।

अतः वैज्ञानिक पद्धति मानने वाले प्रतिभावान विचारकों ने इस विषय पर अनेक तथा विभिन्न तरह के प्रयोग किए और यह सिद्ध किया कि लिखावट की मौलिकता की कल्पना निराधार नहीं है। इसके अनेक स्पष्ट आधार हैं।

विशेषज्ञों ने लिखावट की मौलिकता के मूलतत्वों का पर्यवेक्षण किया और लाखों व्यक्तियों की लिखावटों के चिह्नों का मिलान करके देख लिया कि कोई

भी तो लिखावटें पूर्णरूप में समान नहीं हैं।

इस क्षेत्र में हस्तलिपि विज्ञान के जो अनेक विशेषज्ञ ख्याति प्राप्त कर चुके हैं उनमें से हैन्स ग्रासो का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने अपनी पुस्तक में अपने तत्सम्बन्धी प्रयोग का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। वह लिखते हैं हस्तलिपि विज्ञान इस मूल सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक अकेली लिखावट अपनी निजी अनोखी मौलिक विलक्षणता रखती है। यह भी मान लिया जा चुका है कि हस्तलिपि पर लिखने के साधन जैसे कि लेखनी की नवीनता का प्रभाव पड़ता है। विविध भाषाओं के अक्षरों के लिखित स्थायी आकार आकार विभिन्न होते हैं। अतः इनसे भी लिखावट की बनावट पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु हस्तलिपि विज्ञान का यह अधिकृत कथन है कि हस्तलिपि की ऐसी मौलिक विविधता का मुख्य मूलभूत कारण लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व की विचित्रता और अनूठापन है।

तथापि प्रश्न यह उठता है कि लिखावट बनाने वाले तत्व क्या इतनी अधिक संख्या में हैं कि उनके अनेक संयोगों से बने हुए लिखावट के अनेक उदाहरण एक दूसरे से पूर्णतः विभिन्न एवं मौलिक हो जाते हैं।

इस प्रकार की कठिनाइयों को सुलझाने के लिए समस्या का साधारण रूप से भी परीक्षण किया जा सकता है। इस समस्या का निरूपण करने से मुख्य प्रश्न रह जाता है कि हस्तलिपि में किसी एक चिह्न की बनावट के अधिक-से-अधिक कितने विभिन्न रूप एवं प्रकार हो सकते हैं?

ऐसा परीक्षण करने के लिए निम्नलिखित विधि अपनाई गई थी —

दो सौ एक लिफाफे लिये गए जिन पर पता लिखा हुआ था। इन लिफाफों पर से W C I' के अक्षर 1 अलग काट लिए गए थे। ये एक साथ अलग चिपका दिए गए थे। ये पुस्तक के लिखावटों के उदाहरण संख्या (१) और (२) में प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार से हम हस्तलिपि का एक अकेला चिह्न एक स्थान पर दो सौ विभिन्न नमूनों में मिलता है। पाठक इन चिह्नों का सावधानी से निरीक्षण कर सकते हैं। इनकी बनावट को एक-दूसरे से मिलान कर सकते हैं, मुकाबला कर सकते हैं। ऐसा करने में उन्हें पता चलेगा कि कोई भी दो चिह्न पूर्णतः एक-दूसरे से नहीं मिलते तथा उनमें समानता भी नहीं दिखाई देती। (यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि लिफाफों पर से लिये गए ये अनेक चिह्न अपनी विभिन्नता के आधार पर नहीं छाँटे गए थे। ये सहज तथा स्वाभाविक रूप से आए बारह पत्रों पर से ही काटकर शामिल किए गए थे।)

अतः इस प्रकार के अनेक उदाहरणों का निरीक्षण वास्तव में रोचक एवं रचनात्मक है। इन दो सौ चिह्नों की बनावट में जो विविधता है उससे स्पष्ट होता है कि इस प्रकार का कोई भी एक चिह्न अनेक प्रकार से बन सकता है। यह चिह्न प्रभावित है करनी लम्बाई से थोड़ा से लिखावट के प्रवाह में लगना के

ऱ्याव इन्ता और अन्य ऱ्क्षणा से। कुछ चिह्न भाले की तरह ऊपर माट और नीचे की तरफ पतले बन है कुछ चिह्न नीचे आधार रेखा की तरफ आते हुए मोटे हो जाते हैं। कुछ हिलते डुलते हैं कुछ ऱ्खनी के सम दबाव से प्रभावित हैं। कुछ चिह्न सुगम तथा कोमल हैं। कुछ मोटे तथा कठोर है। कुछ सहज सरल ऱ्खनी की गति से बने है। कुछ अक्षरों की परिधि रेखाए स्पष्ट एव उपयुक्त हैं। कुछ अक्षर अस्पष्ट फटे हुए और भद्दे हैं। कुछ अक्षर दाइ ओर अथवा बाइ ओर एक कुलावदार जैसे चिह्न से प्रभावित होते हैं। कुछ अक्षरों की अन्तिम रेखा का कुण्डलाकार जसे चिह्न से अन्त होता है। कतिपय अक्षरों के आदि तथा अन्त म कुछ अतिरिक्त रेखाए जुडी हुई हैं जो कि ... यय हैं। कुछ अक्षरों का झुकाव स्थिर एक सा है। कुछ अक्षर अपने झुकाव म बार बार बदल रहे हैं। कुछ अक्षर सीधे हैं। दूसरे हिलती हुई ऱ्हरियादार रेखाओं म हैं। कुछ अक्षरों की रेखाए नोकदार हैं। दूसरे अक्षर मिटे हुए हैं। कुछ अक्षर बीच बीच म टूटे हुए हैं अथवा सभाले गए है। कुछ अन्य अक्षर पुन लिखे जाने के कारण बाद म ठीक किये गए हैं साथ गए हैं। इस प्रकार के विवरण से विदित होता है कि लिखावट के चिह्नों के बहुत म ... ण है जो कि इस प्रयोग के २०० उदाहरणों म मौलिक रूप म अलग-अलग मिलते हैं। इस विवरण से यह सकेत भी मिलता है कि इस प्रकार की विभिन्न अनोखी मौलिकता से प्राप्त योग म भी कितना अनगणित अनुमापन मिल जाता है। कितने प्रकार की विविध लिखावटें मिलेंगी इसकी गणना करने के लिए कई प्रकार से इन विविध ऱ्क्षणों का गुणन करते रहना पड़ेगा।

समय-समय पर मैंने अनेक व्यक्तियों से पता लगाने का प्रयास किया है कि उनकी समझ म अनेक प्रकार से लिखने के कितने अधिक लक्षण हो सकते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि ये एक सौ से भी कम होंगे। बहुत से थोडे विचारक हैं जो कि इस प्रकार की विविधताओं की सख्या हजारों तक सम्भावित कहते हैं। केवल एक ही व्यक्ति ऐसा था जिसने अपनी कल्पना पचास हजार तक पहुचा दी थी। कुछ वर्ष पहले मेरे मित्र एव सहयोगी जूल्स सपू जामिन ने भी इसी प्रकार का प्रयोग किया था और बताया था कि उन्हें एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसने लिखावट के प्रकारों की सख्या दस हजार से आगे कल्पना की हो।

मैं यह समस्या अपने उत्कठित पाठकों की क्रियाशीलता पर ही छोड़ता हूँ। उन्हें यह जानने के लिए लिखने के विविध कोणों की सख्या की अक्षरों की विविध लम्बाई विविध चौड़ाई म लेखनी के दबाव व अक्षरों की परिधियों म अतिरिक्त चिह्न एव अचानक प्रारम्भिक उतार चढाव एव अन्त के कुण्डलों के उठाव म तथा रेखाग्रों के उतार चढाव से गणन करते रहना पड़ेगा।

अत इस प्रकार के प्रयोग विचारशील पाठक जो कि हस्तलिपि विज्ञान की वैज्ञानिकता म प्रवेश करना चाहते हैं अपने स्वय के अनुभव द्वारा प्राप्त कर

सकते हैं।[1]

लिखावट में परिवर्तनशीलता

लिखावट बदलती रहती है। प्रत्येक व्यक्ति जहाँ कि एक तरफ अपनी मौलिक लिखावट लिखता है दूसरी तरफ उसे समय-समय पर बदल भी देता है। कुछ लोग तो कई बार अपनी लिखावट बदल देते हैं और स्वयं भी उसको पहचानने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

वास्तव में यह कहना उचित नहीं है कि लिखने वाले अपनी लिखावट बदल देते हैं। यह कहना अधिक सही होगा कि इन व्यक्तियों की लिखावट समय समय पर बदलती रहती है। यह परिवर्तन लेखक की सामयिक मानसिक अवस्था के अनुसार होता है। कभी आप जल्दी में हैं और घसीट कर लिख देते हैं। कभी आपकी मानसिक अवस्था अनिश्चितता की उलझन में है उस समय लेखनी निश्चित रूप से आगे बढ़ने में असमर्थ होती है। ऐसी दशा में लिखावट अस्थिर रहती है। जगह-जगह पर अशुद्धियाँ होती हैं। लेखनी रुकती है काट-छाँट होती है और कागज पर एक ऐसा उलझा हुआ चित्र बनता है जिससे कोई भी निश्चित निष्कर्ष निकालना सम्भव नहीं होता।

अतः हम यह सहज ही देखते हैं कि लेखक की मानसिक अवस्था का प्रभाव लिखावट पर रहता है और एक की अवस्था में परिवर्तन दूसरी अवस्था को प्रभावित करता है। मानसिक अवस्था का सम्बन्ध व्यक्तिगत स्वभाव तथा चरित्र की शक्ति से भी है। इसलिए यह कहना भी असंगत नहीं होगा कि लिखावट में परिवर्तनशीलता व्यक्तिगत स्वभाव एवं चरित्र शक्ति से सम्बन्धित है।

ऐसा कहते हैं कि लिखावट लिखने के भौतिक साधनों पर निर्भर रहती है, जैसे रोज के प्रयोग में आने वाली लेखनी, कागज, मेज, बैठने की शैली, प्रकाश आदि। यदि भौतिक परिस्थितियाँ एवं लिखने के साधन पूर्ववत् रहें तो सम्भव है कि लिखावट अपने पूर्व रूप की तरह ही बनी रहेगी और उसमें परिवर्तन नहीं आएगा। यह सही है कि जब आपको खड़े होकर अथवा अपरिचित स्थानों में अथवा चलती हुई गाड़ियों के भीतर बैठकर लिखना पड़ेगा तो निश्चय ही आपकी लिखावट में परिवर्तन आ जाएगा। सम्भव है कि निपुण लिखने वालों में चलती हुई गाड़ियों में बैठकर लिखना ही नहीं बनेगा। परन्तु अनुभव से यह देखा गया है कि लोग अपनी सहज भौतिक सुगमता में लिखते हुए भी बदलती हुई लिखावटें लिखा करते हैं और यह मानते हैं कि मानसिक परिस्थिति का प्रभाव लिखावट की बनावट पर भौतिक परिस्थिति से अधिक है। समान लेखन-सुविधा होते हुए भी लिखावट में परिवर्तन मानसिक अवस्था में परिवर्तन आने के कारण से ही हो जाता है।

१ देखिए परिशिष्ट ३।

स्वाभाविक मानसिक अवस्था का संतुलन बिगड़ने से लिखावट में परिवर्तन आता है। स्थिरता जाती रहती है। जब चित्त स्थिर नहीं होता तो लेखनी को ग्रहण करने वाले और उसको संचालन करने वाले स्नायु भी स्थिर नहीं रह पाते। इस प्रकार की परिस्थिति का उदाहरण हमने ऊपर दिया है जबकि हम जल्दी में घसीट लिखते हैं अथवा अनिश्चितता की परिस्थिति में अटक अटक कर लिखते हैं। खेद क्रोध आवेग डर की अवस्था में लेखनी अपनी स्वाभाविक गति प्राप्त नहीं करती। अनिश्चित मन निश्चित कार्यक्रम पर नहीं चलता। इस प्रकार के विचारों को अनुभवों को लेकर हस्तलिपि विज्ञान का विश्लेषण आगे बढ़ता है और लिखने वाले व्यक्ति की मानसिक अवस्था में परिवर्तनशीलता के तथ्य एवं उसकी मात्रा की जांच करता है।

चंचल बुद्धि वाले व्यक्तियों के स्वभाव में परिवर्तनशीलता स्वाभाविक है। उनके मन की चंचलता की मात्रा के समान ही उनकी लिखावट में भी चंचलता रहती है। जैसे छोटे बच्चे जब कलम से लिखने बैठते हैं तो अनेक प्रकार के अक्षर बनाते हैं। उनकी लिखावट स्थिर होने लगती है। शनैः शनैः जैसे उनमें गंभीरता स्थिरता एकाग्रचित्त होने की वृत्तियां पुष्ट होने लगती हैं यह संचार कुछ बच्चों में जल्दी होने लगता है और दूसरों में कुछ देर से धीरे धीरे होता है। प्रखर बुद्धि वाले बच्चे जल्दी ही अपनी स्वभावसिद्ध मानसिक चंचलता पर काबू पा लेते हैं।

दृढ़ विचार वाले व्यक्तियों में इस प्रकार की चंचलता का अभाव रहता है। उनका व्यवहार आचार विचार स्थिर रहता है, जिसमें अस्थिरता को स्थान नहीं मिलता। ऐसे व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करते हैं। अपनी विचारधारा तथा कार्यक्षमता में विचलित नहीं होते। वे भावुकता के आवेग में बह नहीं जाते। ऐसे व्यक्ति अपने निजी चरित्रबल से अपनी मानसिक तथा शारीरिक परिस्थितियां अपने अधिकार में रखते हैं।

ऐसे व्यक्ति जिस परिस्थिति में भी लिखते हैं स्पष्ट और स्थिर लिखते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो चलती हुई रेलगाड़ियों में नित्य ही लिखते हैं। यह उनका लिखना है और यदि वे स्थिर और स्पष्ट लिखावट न लिखें तो उनका काम ही नहीं चल सकता जैसे रेलगाड़ियों के गार्ड। चाहे भौतिक परिस्थिति अनुकूल हो अथवा प्रतिकूल रेलगाड़ी के गार्ड को अपनी मानसिक परिस्थिति इतनी स्पष्ट कर लेनी पड़ती है कि वह अपनी यात्रा की डायरी स्पष्ट रूप से लिखता चला जाए और उसका उच्च अधिकारी जब चाहे उसका स्पष्ट रूप में निरीक्षण एवं अवलोकन कर सके। चलती हुई रेलगाड़ी में बैठकर लिखने में अपने शरीर एवं हाथ को इस तरह से संभालना पड़ता है कि जिससे वह कम-से कम हिले।

एकाग्रचित्त से किसी भी कार्यक्रम में लगे रहने के लिए आवश्यक है कि भावुकताप्रधान आवेग पर अधिकार पा लिया जाय। यह कथन लिखावट के लिए

उतना ही सत्य है जितना कि किसी दूसरे कार्यक्रम के लिए।

परिवर्तनशीलता लिखावट का एक अत्याज्य लक्षण है परन्तु मौलिकता लिखावट का सर्वप्रथम लक्षण है। समय समय पर सबकी लिखावट परिवर्तन प्रदर्शित करती है कोई कम कोई अधिक परन्तु किसी भी हालत में इतना नहीं बदल जाती कि उसको पहचाना न जा सके। यह परिवर्तन इतना अधिक नहीं होता कि वह अपने मौलिक रूप को बदल दे। लिखावटें बदलने पर भी पहचानी जाती हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो उसकी मौलिकता का पहला लक्षण जोकि स्थिरता है स्थिर न रहेगा।

लिखावट में परिवर्तन होते हुए भी मौलिकता बनी रहने का कारण है लिखावट के भौतिक अंगों की बनावट जैसे कि सीधी रेखाएं कोण गोलाकार रेखाएं मात्राएं एवं बिन्दु आदि। इनमें से कुछ ऐसे अंग हैं जिन पर परिवर्तन का प्रभाव कुछ कम होता है और दूसरे ऐसे होते हैं जो थोड़े से प्रभाव से ही बदलने लगते हैं। इनमें से कौन से स्थिर हैं अथवा कौन से अस्थिर हैं ये अपनी-अपनी निजी लिखावटों की बनावट से सम्बन्ध रखते हैं। लिखावट में परिवर्तनशीलता एक छाया के समान है, जो समय-समय पर लिखावट का रूप प्रभावित करता हुई भी मूल लिखावट को प्रभावित नहीं कर पाता। इस विषय में दूसरा कथन यह भी है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव में कुछ ऐसे लक्षण होते हैं कि जो विभिन्न परिस्थितियों में समानरूप से स्थिर रहते हैं। दूसरे कुछ लक्षण समय तथा परिस्थिति के अनुकूल प्रभावित होते रहते हैं। यह मनुष्य की उस वृत्ति की ओर संकेत करता है जिससे वह समय तथा परिस्थिति के अनुकूल अपने आपको बदलता रहता है। नई परिस्थिति में रहना तथा उससे लाभ उठाना मांगता है। परन्तु अपने आपको किसी भी परिस्थिति में मिला नहीं लेता है। अपना निजी व्यक्तित्व बनाए रखता है। ये उसके व्यक्तित्व के लक्षण हैं जो सदा ही इसे रहते हैं। ये उसके स्थायी स्तम्भ हैं। इस कथन का स्पष्ट छाया हम लिखावट की बनावट में मिलती है जिससे हमें मानने में कठिनाई नहीं होती कि लिखावट लेखक की मानसिक परिस्थिति का अनुसरण करती है। और यह उतना ही स्वाभाविक सचेतन सूक्ष्मग्राही तथा स्पष्ट है जितना कि उसको लिखने वाले व्यक्ति का अपना निजी व्यक्तित्व होता है।

शंका और समाधान—लिखावट में मौलिकता का विवेचन करते हुए दो प्रश्न हमारे सामने आते हैं जो कि शंका-युक्त प्रतीत होते हैं।

(अ) लिखावट की जालसाजी—किसी दूसरे व्यक्ति की मौलिक लिखावट गढ़ना जालसाजी है। यह कानून के विरुद्ध है और एक दण्डनीय अपराध भी हो सकता है।

हस्तलिपि विज्ञान के विषय में यह प्रश्न उठता है कि जब किसी लिखावट की इतनी सही नकल की जा सकती है कि एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की

लिखावट लक्षण एक सी बना दे तो उसमें मौलिकता की जो कि लिखावट का प्रारम्भिक तथ्य है श्रेष्ठता कहाँ रहा ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हम लिखावट की मूल रचना का विवेचन करना पड़ेगा। साधारण मौलिक लिखावट की रचना में लेखनी स्वतन्त्र गति से चलती जाती है। इसमें स्वच्छन्दता है और गति भी है। परन्तु गढ़ी हुई लिखावट की रचना में परिस्थिति विपरीत होती है। उसमें न स्वच्छन्दता है और न गति है। यह चिह्न प्रतिचिह्न सावधानी से गढ़ी जाती है। ऐसी लिखावट को हम लिखावट नहीं कह सकते।

लिखावट गढ़ने वाला व्यक्ति जिस लिखावट की नकल करता है उसके प्रत्येक चिह्न को वह सावधानी से और अलग अलग बनाता है। इसमें लेखनी चित्रवत बहुत धीरे धीरे और सावधानी से बार बार उठा-उठाकर चलाई जाती है। इस लिखावट को बहुत सावधानी से तथा वर्द्धन-यन्त्र (आतशी शीशा) से अथवा अन्य वैज्ञानिक विधि से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि लिखावट गढ़ी गई है। गढ़ी हुई जालसाजी की लिखावट तुरन्त पहचानी जाती है। अतः इस लिखावट में जालसाजी किये जाने के कारण लिखावट के मौलिक तथ्य की श्रेष्ठता में कमी नहीं आती। व्यक्तिगत लिखावट से तात्पर्य स्वच्छन्द एवं गतिशील लिखावट से है। इसमें अविच्छिन्नता का प्रवाह रहता है। यह लिखावट अनिवार्य रूप से मौलिक होती है अतः हम स्वयं देख सकते हैं कि लिखावट का प्रथम तथ्य श्रेष्ठ है और इसमें *किसी भी प्रकार का तर्कायुक्त प्रश्न नहीं उठता।*

वास्तव में हस्तलिपि विज्ञान लिखावट की जालसाजी की जाँच के कार्य से कहीं आगे बढ़ा हुआ है। इससे जालसाजी करने वाले व्यक्ति के व्यक्तिगत लक्षण तथा जालसाजी करने के प्रयोजन तक का पता लगाना सम्भव हो सका है।

(ब) लिखावट की परिवर्तनशीलता के विषय में—हस्तलिपि विज्ञान के माध्यम से चरित्र निर्धारण करने के विषय में बहुधा एक प्रश्न और सामने आता रहता है। ऐसा कहते हैं कि लिखावट बदलती रहती है। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि वे अपनी लिखावट विभिन्न प्रकार से लिख सकते हैं। फिर ऐसी लिखावटों से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कैसे किया जा सकता है और उनसे निर्धारित चरित्रांकन किस प्रकार से विश्वसनीय मान लेना सम्भव है।

वास्तव में यह प्रश्न हस्तलिपि विज्ञान के मूल तत्वों को पुष्ट करता है जैसा कि हम लिखावट के विषय में पहले कह चुके हैं।

फिर लिखावट में यदि स्वाभाविक परिवर्तनशीलता का लक्षण न हो तो मनोवैज्ञानिक ज्ञानवर्द्धन के लिए माध्यम ही न मिले। परिवर्तनशीलता में ही मानव का चेतन अवस्था का स्पन्दन है उसकी जड़ता में नहीं। जिस प्रकार से व्यक्तिगत मानस चलता है सोचता है विचार करता है आचरण और परस्पर-व्यवहार

करता है उसी प्रकार से उसकी लिखावट समय एवं परिस्थिति के अनुरूप प्रभावित होती रहती है।

लिखावट का भौतिक आधार

प्रत्येक भाषा का लिखित रूप होता है। जैसे अंग्रेजी भाषा रोमन अक्षरों में लिखी जाती है। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। मराठी भाषा भी देवनागरी में ही है। गुजराती भाषा भी देवनागरी से मिलती जुलती है। बंगला व असम भी बहुत कुछ इसी आधार पर मान जा सकते है।

इन सब लिखित भाषाओं में बहुत-सी बातें समान हैं। जैसे बाइं ओर से दाइं ओर को लिखना मात्राएं लगाना अक्षरों को मिलाना अनुस्वार विराम, अर्धविराम आदि का प्रयोग करना।

लिखना सीखने के लिए इन भाषाओं का अपना एक निजी रूप है। स्थायी आधार है। अक्षरों के तथा मात्राओं आदि के निश्चित रूप है। ये स्थायी आकार छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों के निर्देशन के लिए उदाहरण के रूप में कापियों में छपे हुए आते हैं। अध्यापकगण बहुधा बच्चों को इन कापियों पर ही सुलेख का अभ्यास कराने का प्रबन्ध करते हैं।

अक्षरों की लम्बाई और चौड़ाई भी निर्धारित है। साधारणत अंग्रेजी के अक्षर चौथाई से तिहाई इंच तक लम्बे तथा चौड़े लिखने का अभ्यास किया जाता है।

इन बातों के अतिरिक्त लिखावट में ऐसी भौतिक परिस्थितियों का ध्यान भी रखा जाता है जिनसे सुलेख सुगम हो जाता है और नित्य के अभ्यास से बालकों के स्वास्थ्य पर भी अनुचित दबाव नहीं पड़ता। जैसे कि लिखने बैठने की सही विधि जमीन पर हो अथवा डेस्क या मेज पर यथोचित प्रकाश की सुविधा रखने का सही तरह से पकड़ना और सफाई का ध्यान रखना आदि। ये सभी बातें हैं जो सब लिखित भाषाओं के लिए लागू हैं।

जब लिखने वाला व्यक्ति लिखने के लिए सही विधि से बैठता है तथा लिखने के साधनों का उचित प्रयोग करता है तो उसके अंगों पर अनुचित भार नहीं पड़ता। साथ ही उसकी लिखावट भी स्पष्ट स्थिर एवं सुव्यवस्थित बनती जाती है। लिखने की क्रिया से शरीर पर भार नहीं होती और क्रिया के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने से आत्मिक सन्तोष भी प्राप्त होता है। अतः आवश्यक है कि लिखने की क्रिया का उचित अभ्यास लिखावट के प्रारम्भ से ही होना चाहिए।

लिखना सीखने वाले विद्यार्थी बालक तथा युवा सब लिखावट के ऊपर लिए हुए आधार पर लिखना सीखना प्रारम्भ करते हैं। अध्यापकगण भी सुलेख का ध्यान रखते हुए ऊपर लिए हुए आधार पर ही अभ्यास कराते हैं। लिखने का

अभ्यास होने पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी शैली अपना लेता है जिसको हम कहते है कि यह उसका मौलिक लिखावट है।

लिखित भाषा का विश्लेषण करने से विदित होता है कि सब लिखित भाषाओं में लिखावट के मूल तत्त्व समान ही हैं। जैसे कि रेखाएं खींचना। ये रेखाएं अधोगामी अग्रगामी ऊर्ध्वगामी सीधी वक्राकार कोणाकार, गोलाकार हो जाती हैं। जहाँ जैसी जरूरत पड़े और अक्षरों में जहाँ जैसी निर्धारित कर दी गई हो। इसके अतिरिक्त मात्राओं के चिह्न अलग-अलग निर्धारित कर दिए गए हैं। विराम तथा विसर्ग आदि भी किसी न किसी रूप में प्रयोग किए जाते है। यह लिखावट के चिह्न बनाते समय कभी लेखनी भारी हो जाती है जैसे ऊपर से नीचे की तरफ रेखा खींचते समय। कभी यह रेखा हल्की हो जाती है जैसे कि नीचे से ऊपर की ओर जाने पर।

हस्तलिपि से मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए और व्यक्तिगत शैली के सुधार के अभ्यास के लिए लिखावट के ऊपर लिए गए आधारों को जोकि लिखावट के मूलतत्त्व है समझ लेना आवश्यक है क्योंकि हर बार इन मूलतत्त्वों से ही काम पड़ता है।

लिखावट का मनोवैज्ञानिक आधार

जैसा कि हम पहले कह आए है प्रत्येक लिखावट सीखने वाला विद्यार्थी लिखने का अभ्यास हो जाने पर अपनी निजी शैली अपना लेता है। ऐसा क्यों होता है? हस्तलिपि के मनोवैज्ञानिक अध्ययन तथा अनुसंधान का प्रारम्भ इस छोटे-से प्रश्न से होता है।

आपकी लिखावट की शैली विचित्र है। अपनी निजी है मौलिक है किसी दूसरे से नहीं मिलती। ऐसा क्यों है? आपके इस विशेष ढंग से लिखने में अवश्य ही कोई रहस्य है। इस रहस्य की खोज करना हस्तलिपि विज्ञान का लक्ष्य है क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि लिखावट आपके स्वभाव एवं व्यक्तिगत चरित्र आदि के लक्षणों से प्रभावित होती है तथा उनको प्रदर्शित करती है।

लिखना सीखने वाले विद्यार्थी लिखने का प्रारम्भिक अभ्यास हो जाने पर सुलेख लिखते हैं तो उनकी लिखावट प्राय लिखावट के स्थायी आकार के समान बनती है। ऐसा भी कह सकते है कि इनकी ये सब लिखावटें एक-सी बनी हुई प्रतीत होती हैं क्योंकि सुलेख लिखते समय सावधानी का विशेष प्रयोग किया जाता है। लिखते समय धीरे धीरे लेखनी को बार-बार उठाना ध्यान एकाग्र करके लिखावट की बनावट के प्रत्येक चिह्न को धीरे धीरे सावधानी से क्रमपूर्वक बनाना आवश्यक होता है। इस सावधानी की अवस्था में प्रमुख लक्षण लेखनी की गति का अवरोध है। लेखक इस अवरोध के साथ व्यक्तिगत सावधानी एकाग्रचित्त क्रम

सुन्दरता स्थिरता आदि निर्माणकारक वृत्तियों का प्रयोग करता है। ऐसी परिस्थिति में हम मान लेते हैं कि सुन्दर या ये लिखावटें समान हैं। और साथ-साथ यह भी मान लेते हैं कि इन लिखावटों के लिखने वालों में वे व्यक्तित्व लक्षण मौजूद हैं जिनसे कि सावधानी से काम करने की क्षमता प्राप्त होती है।

इसके विपरीत ऐसी लिखावटें भी हैं जो कितनी भी सावधानी से प्रयोग करने पर भी सुन्दर के स्थायी रूप के समान नहीं बनतीं। अथवा थोड़े-से प्रारम्भिक सुन्दर के अभ्यास के बाद ही अपनी निजी शैली पर आने लगती हैं। इस लिखावट का अनुभव हम व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार में करते हैं। हस्तलिखित रूप में पत्र हमारे पास आते हैं। उनमें हम देखते हैं कि कुछ पत्र ऐसे हैं जो लिखने वाले ने सावधानी से लिखे हैं और जिनकी विशेषता यह है कि आदि से अन्त तक वे प्रारम्भिक एक-सी सुन्दर शैली में लिखे गए हैं। दूसरे वे हैं कि जो प्रारम्भिक भाग में सुलिखित प्रतीत होते हैं और अपनी स्वाभाविक घसीट पर आकर समाप्त हो जाते हैं। इनमें तीन प्रकार हैं। पहले वे जो प्रारम्भ में कुछ शब्द सुलिखित हैं कुछ दो चार पंक्तियों तक कुछ एक पहली ही पंक्ति तक और बाद में अपनी स्वाभाविक घसीट पर, अन्त में लिखने वाले के हस्ताक्षर भी स्पष्ट पढ़े नहीं जा सकते। दूसरे वे जो आदि बीच में घसीट के बाद फिर से अन्त में सुलिखित हैं—इन पत्रों में लिखने वाले के हस्ताक्षर स्पष्ट पढ़ने में आ जाते हैं। और तीसरे पत्र हैं जो कि किसी किसी स्थान पर स्पष्ट पढ़े जा सकते हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि लिखने वाले ने जिस आशय को स्पष्ट करने की आवश्यकता समझी है उन अक्षरों को तथा शब्दों को सावधानी से लिख दिया है। जिससे इतना तो हो कि कम-से-कम पढ़ने वाले को उसके आशय के आवश्यक अंग समझने में गलती न रह जाए।

इस प्रकार से लिखी गई तीनों लिखावटों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी अलग-अलग होगा। परन्तु इनमें अपनी विभिन्नताएँ होते हुए भी लक्षण समान है—वह है लिखावट में गति का प्रयोग। इस तरह की लिखावट लिखने वाला व्यक्ति सावधानी का प्रयोग आवश्यक नहीं समझता जिससे लिखावट की गति को सम एवं स्थिर रखा जाए। यह लक्षण लिखावट में वेग व गति प्रदर्शित करता है। लिखने वाला अपनी भावना कल्पना विचारधारा आदि को प्रदर्शित करने में ध्यान रखता है। वह स्वभाव से ही प्रदर्शक स्वभाव का होता है। भावुक व्यक्ति अपनी तार्किक शक्ति का उपयोग अपने निजी आचरण के विश्लेषण के लिए नहीं कर सकते। जो व्यक्ति अपने विचारों के प्रवाह को रोकने में असमर्थ हैं अथवा एकाग्रचित्त होकर सोचने अथवा काम करने में असमर्थ हैं, इस प्रकार की लिखावट की गति का प्रयोग करते हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि ये वे व्यक्ति हैं जो अपने विचारों को अपने मन में आई हुई बातों को तुरन्त ही कह डालना चाहते हैं। चाहे उनको इस तरह

अभ्यास होने पर प्रत्येक व्यक्ति अपना निजी शैली अपना लेता है जिसको हम कहते है कि यह उसकी मौलिक लिखावट है।

लिखित भाषा का विश्लेषण करने से विदित होता है कि सब लिखित भाषाओं में लिखावट के मूल तत्त्व समान ही हैं। जैसे कि रेखाएं खींचना। ये रेखाएं अधोगामी अग्रगामी ऊर्ध्वगामी सीधी वक्राकार कोणाकार गोलाकार हो जाती हैं। जहां जैसी जरूरत पड़े और अक्षरों में जहां जैसी निर्धारित कर दी गई हो। इसके अतिरिक्त मात्राओं के चिह्न अलग-अलग निर्धारित कर दिए गए हैं। विराम तथा विसर्ग आदि भी किसी न किसी रूप में प्रयोग किए जाते है। यह लिखावट के चिह्न बनाते समय कभी लेखनी भारी हो जाती है जैसे ऊपर से नीचे की तरफ रेखा खींचते समय। कभी यह रेखा हल्की हो जाती है जैसे कि नीचे से ऊपर की ओर जाने पर।

हस्तलिपि से मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए और व्यक्तिगत शैली के सुधार के अभ्यास के लिए लिखावट के ऊपर दिए गए आधारों को जो कि लिखावट के मूलतत्त्व हैं समझ लेना आवश्यक है क्योंकि हर बार इन मूलतत्त्वों से ही काम पड़ता है।

लिखावट का मनोवैज्ञानिक आधार

जैसा कि हम पहले कह आए है प्रत्येक लिखावट सीखने वाला विद्यार्थी लिखने का अभ्यास हो जाने पर अपनी निजी शैली अपना लेता है। ऐसा क्यों होता है? हस्तलिपि के मनोवैज्ञानिक अध्ययन तथा अनुसंधान का प्रारम्भ इस छोटे से प्रश्न से होता है।

आपकी लिखावट की शैली विचित्र है। अपनी निजी है मौलिक है किसी दूसरे से नहीं मिलती ऐसा क्या है? आपके इस विशेष ढंग से लिखने में अवश्य ही कोई रहस्य है। इस रहस्य का खोज करना हस्तलिपि विज्ञान का लक्ष्य है क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि लिखावट आपके स्वभाव एवं व्यक्तिगत चरित्र आदि के लक्षणों से प्रभावित होता है तथा उनको प्रदर्शित करती है।

लिखना सीखने वाले विद्यार्थी लिखने का प्रारम्भिक अभ्यास हो जाने पर सुन्दर लिखते हैं तो उनकी लिखावट प्राय लिखावट के स्थायी आकार के समान बनती है। ऐसा भी कह सकते हैं कि इनकी ये सब लिखावटें एक सी बनी हुई प्रतीत होती हैं क्योंकि सुन्दर लिखते समय सावधानी का विशेष प्रयोग किया जाता है। लिखते समय धीरे धीरे लिखना को बार-बार उठाना ध्यान एकाग्र करके लिखावट की बनावट के प्रत्येक चिह्न को धीरे धीरे सावधानी से क्रमपूर्वक बनाना आवश्यक होता है। इस सावधानी की अवस्था में प्रमुख लक्षण लिखने की गति का अवरोध है। परन्तु इस अवरोध के साथ व्यक्तिगत सावधानी एकाग्रचित्त श्रम

सम्पन्नता स्थिरता आदि निर्माणकारक वृत्तियों का प्रयोग करता है। ऐसी परिस्थिति में हम मान लेते हैं कि सुन्दर और ये लिखावटें समान हैं। और साथ-साथ यह भी मान लेते हैं कि इन लिखावटों के लिखने वालों में व्यक्तिगत लक्षण मौजूद हैं जिनसे कि सावधानी से काम करने की क्षमता प्राप्त होती है।

इसके विपरीत ऐसी लिखावटें भी हैं जो कितनी भी सावधानी से प्रयास करने पर भी सुन्दर के स्थायी रूप के समान नहीं बनती। अथवा थोड़ा-सा प्रारम्भिक सुन्दर व अभ्यास के बाद ही अपनी निजी शक्ल पर आने लगती हैं। इस लिखावट का अनुभव हम व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार में करते हैं। हस्तलिखित रूप में पत्र हमारे पास आते हैं। उनमें से हम देखते हैं कि कुछ पत्र ऐसे हैं जो लिखने वालों ने सावधानी से लिखे हैं और जिनमें विशेषता यह है कि आदि से अन्त तक वे प्रारम्भिक एक-सी सुन्दर शैली में लिखे गए हैं। दूसरे ऐसे हैं कि जो प्रारम्भिक भाग में सुलिखित प्रतीत होते हैं और अपनी स्वाभाविक घसीट पर आकर समाप्त हो गए हैं। इनमें तीन प्रकार हैं। पहले ये जो प्रारम्भ में कुछ शब्द सुलिखित हैं कुछ दो चार पंक्तियों तक कुछ एक पहली ही पंक्ति तक और बाद में अपनी स्वाभाविक घसीट पर अन्त में लिखने वाले के हस्ताक्षर भी स्पष्ट पढ़े नहीं जा सके। दूसरे ऐसे आदि बीच में घसीट के बाद फिर से अन्त में सुलिखित हैं—इन पत्रों में लिखने वाले के हस्ताक्षर स्पष्ट पढ़ने में आ जाते हैं। और तीसरे पत्र हैं जो कि किसी किसी स्थान पर स्पष्ट पढ़े जा सकते हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि लिखने वाले ने जिस आशय को स्पष्ट करने की आवश्यकता समझी है उन अक्षरों को तथा शब्दों को सावधानी से लिख दिया है। जिससे इतना तो हो कि कम-से कम पढ़ने वाले को लेखक के आशय के आवश्यक अंग समझने में शंका न रह जाए।

इस प्रकार से लिखी गई तीनों लिखावटों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तो अलग-अलग होगा। परन्तु इनमें अपनी विभिन्नताएं होते हुए भी लक्षण समान है—वह है लिखावट में गति का प्रयोग। इस तरह की लिखावट लिखने वाला व्यक्ति सावधानी का प्रयोग आवश्यक नहीं समझता जिससे लिखावट की गति को सम एवं स्थिर रखा जाए। यह लक्षण लिखावट में वेग व गति प्रदर्शित करता है। लिखने वाला अपनी भावना कल्पना विचारधारा आदि को प्रदर्शित करने में व्यस्त रहता है। वह स्वभाव से ही प्रभाव स्वभाव का होता है। भावुक व्यक्ति अपनी तार्किक शक्ति का उपयोग अपने निजी आचरण के विश्लेषण के लिए नहीं कर सकते। जो व्यक्ति अपने विचारों के प्रवाह को रोकने में असमर्थ हैं अथवा एकाग्रचित्त होकर सोचने अथवा काम करने में असमर्थ हैं इस प्रकार की लिखावट का गति का प्रयोग करते हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि ये वे व्यक्ति हैं जो अपने विचारों को अपने मन में आई हुई बातों को तुरन्त ही कह डालना चाहते हैं। चाहे उनको इस तरह

से कही गई बात सुनने वाले व्यक्ति की समझ में आई हो अथवा न आई हो। उन्हें इसका आभास नहीं है परवाह भी नहीं है। वे कह सकते हैं कि हमने तो अपनी बात कह दी और स्पष्ट कर दी। सुनने वाला व्यक्ति यदि उनकी बात को समझने की कोशिश न करे तो वे क्या कर सकते हैं।

लिखने वालों का या यों कहिए कि लेखनी द्वारा व्यक्त करने वालों का भी यही हाल है। उनको तो लिख देने से मतलब पढ़ने वाला समझने की कोशिश में लगा रहे। समझे अथवा नहीं समझे यह उसकी समस्या है।

इस स्थान पर यदि आप इस पुस्तक को बन्द कर दें और अपने मिलने वाले व्यक्तियों की बातचीत हाव भाव आदि व्यावहारिक आचरण के विषय में सोचें तो सम्भव है कि तुरन्त ही आपका ध्यान ऊपर दिए हुए प्रकार से अपनी बात को व्यक्त करने वाले व्यक्तियों की ओर आकर्षित हो जाएगा। इस प्रकार के व्यक्ति समाज के प्रत्येक स्तर एवं वर्ग में मिलते हैं। ये व्यक्ति अपनी बात को किसी-न किसी तरह से कह डालना चाहते हैं। कई व्यक्ति बहुत जल्दी-जल्दी बोलते हैं। कोई ज़ोर ज़ोर से बोलते हैं। मालूम होता है कि लड़ने वाले ही हैं। कोई हकलाते हैं फिर भी ज़ोर लगाते हैं। ध्यान देने से इस प्रकार के भावावेग-व्यक्तीकरण के अनेक एवं विभिन्न प्रकार के उदाहरण मिलते हैं। परन्तु समानता इनमें एक व्यक्तिगत लक्षण की है। ये सब बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति हैं। इनका जीवन शक्ति प्रसारित है।

इस वर्ग में आने वाले कुछ व्यक्तियों में एक लक्षण और होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से वह भी महत्वपूर्ण है। वह है अपनी कहना परन्तु दूसरे की न सुनना। दोनों बातों में सीधा सम्बन्ध है। जिसे अपनी कहने की जल्दी है उसे दूसरे की बात सुनने का कहां अवकाश है। यह अधीरता है। दूसरे की बात सुनने के लिए धैर्य आवश्यक है। अधीर व्यक्तियों के लेखन में भी अधीरता की मात्रा का अधिकाधिक समावेश होना स्वाभाविक है और होता भी है।

व्यावहारिक परिस्थिति में ऐसी मानसिक अवस्था वाले व्यक्ति को आवश्यकता से अधिक बोलना पड़ता है। कभी-कभी आपके पास लम्बे चौड़े पत्र आते हैं जिनका यदि सूक्ष्म रूप से विश्लेषण किया जाए तो तथ्य की बात थोड़ी ही निकलेगा। सावधानी से सोचे हुए विचार थोड़े में ही स्पष्टतः व्यक्त हो जाते हैं। असावधानी से कहा गया बात का अन्त नहीं होता।

लिखावट की सामाजिकता

लिखावट एक सामाजिक आवश्यकता है। यह हस्तलिपि विज्ञान में दूसरा दृष्टिकोण है। एक व्यक्ति लिखता है दूसरे व्यक्ति के पढ़ने के लिए उससे कुछ जानने के लिए कुछ मालूम करने के लिए कुछ समझाने के लिए कुछ मांगने के

लिए। आप पत्र पाते हैं पत्र लिखने वाले व्यक्ति के आशय को स्पष्ट समझ लेने के लिए। बाद में उस पत्र को म्याया रस की तरह रख भी लिया जा सकता है। समय आने पर यह पुनः देखा जा सकता है। अतः यह मानना पड़ता है कि जो व्यक्ति शुद्ध और स्पष्ट लिखावट लिखते हैं वे सामाजिक दृष्टि से दूसरे व्यक्तियों की भावनाओं का, उनकी व्यक्तिगत सामर्थ्य का ध्यान रखते हैं और जो व्यक्ति ऐसा घसीट लिखते हैं जो कि पढ़ी नहीं जा सकती अथवा जिसका साफ-साफ अर्थ ही नहीं निकाला जा सकता, वे अपना काम तो करना चाहते हैं परन्तु दूसरों की अवहेलना करते हैं। सहज ही वे अपना भार दूसरे व्यक्ति के ऊपर डाल देना चाहते हैं। ऐसा आचरण सामाजिक दृष्टिकोण से वांछनीय नहीं है।

अस्पष्ट लिखावटें जो कि साफ-साफ पढ़ी नहीं जा सकतीं, लिखने वाले व्यक्ति की अव्यवस्थित अवस्था सूचित करती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने भावावेश में अपना ध्यान कहीं डालता है। उसे इस बात का ध्यान नहीं रहता कि कोई दूसरा व्यक्ति इसे पढ़ेगा और वह अस्पष्ट लिखावट को पढ़ने में असमर्थ रहेगा। ऐसे व्यक्तियों में अहं की भावना मुख्य रहती है। वे व्यक्त करते हैं कि जो वे समझते हैं अथवा कहते हैं वही ठीक है। और उसमें अच्छी बात कोई दूसरी नहीं हो सकती। कुछ लोग जानबूझकर अस्पष्ट लिखते हैं। ऐसे हस्ताक्षर बहुधा देखने में आते हैं जिनमें कुछ भी पढ़ा नहीं जा सकता। वे केवल घसीटी मात्रों की तरह होते हैं। संभवतः ऐसा लिखने वाला व्यक्ति परिस्थिति को सन्देहजनक ही रखना चाहता है।

जो महानुभाव अपनी स्वयं की लिखावट सुगमता से न पढ़ सकें उनके लिए क्या कहा जाए। और जो अपनी लिखावट स्वयं न पहचान सकें उनके लिए क्या कहा जाए इसकी कल्पना पाठक स्वयं कर लें। ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व तथा चरित्र भरोसा करने योग्य है अथवा नहीं यह समस्यात्मक तथा विचारणीय विषय है। हो सकता है कि यह केवल व्यावहारिक वास्तविकता की अजानता हो स्वाभाविक असावधानी हो अथवा अहंकारयुक्त स्वार्थ की भावना हो या उद्दण्डतायुक्त आचरण हो। निश्चय ही यह एक सावधान, स्पष्ट और भरोसा करने योग्य व्यक्तित्व का चालक रूप लिपि कदापि नहीं है।

अतः लिखावट में गतिशीलता के विषय में कहा जा सकता है कि ऐसी घसीट लिखावट जिस पर लिखने वाले व्यक्ति का जागरूक अवरोध नहीं है उसके अधिकार के बाहर है। ऐसी लिखावट विकृत है, अस्पष्ट है और रूपहीन है। लिखने वाला व्यक्ति जैसे चाहे रूपहीन लेखनी चलाता हुआ स्वयं अपने लक्ष्य को खो बैठता है और उस आचरण में उसका निजी व्यक्तित्व भी विलीन हो जाता है। यह व्यक्तित्व को नष्ट कर देने वाला लक्षण है।

इसके विपरीत एक ऐसी लिखावट है जो कि गतिशील होते हुए भी स्पष्ट है। यह लिखने वाले व्यक्ति की उच्च एवं श्रेष्ठ मानसिक समर्थता को व्यक्त करती

है। ऐसा व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में गतिशीलता को अपनाता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ होता है। वह भावुक आवेग में बह नहीं जाता। उसकी भावुकता एवं जीवनशक्ति नियम एवं संयम के अवरोध के बाहर नहीं जा सकती। वह जितना चाहता है स्पष्ट शब्दों में कहता है। दृढ़ता से कहता है और चाहता है कि उसको पढ़ने वाले अन्य व्यक्ति भी उसके आशय को बिना किसी प्रकार की शंका के समझ सकें। इसमें शक्ति का संचार है आत्मविश्वास है स्वावलम्ब है प्रज्ञा है सामाजिकता है और अधिकार की श्रेष्ठता है।

लिखावट में परिवर्तन के विषय में लिखते हुए यह कहा गया था कि लिखावट के कुछ चिह्न बदलते रहते हैं और कुछ स्थायी आकार में बने रहते हैं। वे बदलते नहीं हैं। इनके कारण लिखावट में मौलिकता बनी रहती है। जो चिह्न बदलने वाले हैं, वे लिखावट में गति का संचार होने से बदलने लगते हैं। इस प्रकार के चिह्नों में परिवर्तन की मात्रा एवं प्रकार का निर्धारण लिखावट के सूक्ष्म निरीक्षण से होता है। उदाहरण के लिए कहा जा सकता है कि ये चिह्न पार्श्वों अक्षरों के अंतिम सिरे मात्राएं आदि आगे की ओर भागते हुए से दिखाई देते हैं। इस प्रकार के सूक्ष्म निरीक्षण से लिखावट की गति तथा लय की मात्रा का निर्धारण होने लगता है। और यह समझ में आने लगता है कि अमुक लिखावट धीरे धीरे मध्यमगति से अथवा तेज-गति से लिखी गई है।

हस्तलिपि विज्ञान के विशेषज्ञों ने विवेचन एवं विधिवत प्रयोगों से हस्तलिपि के अनेक चिह्नों के स्थायी एवं परिवर्तित आकार से लिखावट में गति की मात्रा माप करने के गुर (फार्मूला) सिद्ध कर लिए हैं। इनके उपयोग से लिखावट को किसी भी तस्वीर में उसकी गतिशीलता की मात्रा का माप किया जा सकता है। अमुक लिखावट कितनी गति से लिखी गई है। यह माप हस्तलिपि विज्ञान के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए पर्याप्त होता है। जैसे कि तीव्र सम तथा मन्दगति।

व्यक्तित्व के वर्ग—मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखावट में गतिशीलता का तत्व व्यक्तित्व को मोटे तौर पर तीन वर्गों में विभाजित कर देता है। बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति अन्तर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति और उभयमुखी अथवा समप्रवृत्ति वाले व्यक्ति।

इस वर्गीकरण में लिखावट के अन्य चिह्नों से भी समर्थन मिलता है। किसी भी एक चिह्न का भरोसा करना व्यक्तित्व का वास्तविक निर्धारण करने के लिए खतरे से खाली नहीं है। एक चिह्न अनेक लक्षणों की ओर संकेत कर सकता है। परन्तु उनमें से किसी एक लक्षण को व्यक्तित्व का स्थायी लक्षण मान लेने के लिए कम से कम वाले दो अन्य चिह्नों का समर्थन मिलना आवश्यक है। अतः ऊपर दिए हुए नाना वर्गीकरणों के निर्धारण के साथ लिखावट में अन्य चिह्नों से पाए जाने वाले लक्षणों की खोज करना नितान्त आवश्यक है। यह समर्थन ऊपर दिए हुए

व्यक्तित्व के लक्षण जैसे कि बहिर्मुखी, अन्तर्मुखी, उभयमुखी के निर्धारण के लिए मिलना चाहिए।

लिखावट का आकार एक दूसरा ऐसा चिह्न है जो यह गतिशीलता से प्राप्त हुए संकेत का समर्थन करता है। बड़ी लिखावट बहिर्मुखी, छोटी लिखावट अन्तर्मुखी और मध्यम आकार की लिखावट उभयमुखी प्रवृत्ति सूचित करती है।

इसका तीसरा चिह्न लिखने में लेखनी का दबाव है। भारी लिखावट जिसमें लेखनी दबाकर लिखी है बहिर्मुखी, हल्की लिखावट जिसमें लिखावट हल्के हाथ से चलती है अन्तर्मुखी और मध्यम दबाव वाली लिखावट उभयमुखी प्रवृत्ति की प्रतीक होती है। लिखावट के अन्य चिह्न इस प्रकार के अंकन में सहायक होते हैं। परन्तु व्यक्तित्व के लक्षणों के वैज्ञानिक तथ्य के लिए यदि ऊपर दिए हुए तीन चिह्नों का समान समर्थन मिल जाए तो पर्याप्त है। लिखावट के ये चिह्न (१) गतिशीलता (२) आकार और (३) लेखनी का भारी दबाव एसे मोटे चिह्न हैं जो कि प्रत्येक लिखावट में मिलते हैं और इनको पहचानकर अनुभव करना बहुत ही सुगम होता है। इसलिए लिखावट में गतिशीलता का निर्धारण एवं उसके तीव्र वेग, समवेग, वेगहीन गति से बहिर्मुखी, उभयमुखी एवं अन्तर्मुखी प्रतिमा वाले व्यक्तित्व का वर्गीकरण लिखावट के ऊपर दिए हुए तीन चिह्नों से जैसे कि गतिशीलता, आकार और लेखनी के भारी दबाव से ही किया जाता है। इसमें यदि किसी प्रकार की शंका रह जाए तो अपने प्राप्त किए हुए निर्धारण के समर्थन करने के लिए लिखावट के अन्य चिह्नों का सहारा लेना ही उचित होता है।

यह मूलतः ध्यान देने का विषय है कि लिखावट की गतिशीलता—तीव्र एवं समगति—का प्रभाव लिखावट के आकार और लेखनी के दबाव आदि लिखावट के अन्य चिह्नों पर भी होता है।

इस प्रकार से व्यक्तित्व का एक मोटा-सा परन्तु निश्चित वर्गीकरण हो जाता है। हमें यह पता चल जाता है कि अमुक लिखावट लिखने वाला बहिर्मुखी अन्तर्मुखी तथा उभयमुखी प्रवृत्ति में से किस क्षेत्र में आता है। इतना निर्धारण हो जाने से हस्तलिपि विज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति का एक निश्चित साँचा मिल जाता है जिसके अन्य सूक्ष्म स्थान व्यक्तित्व के दूसरे अनेक गुणों की परीक्षा के द्वारा पूरे किए जा सकते हैं।

लिखावटों का वर्गीकरण

व्यक्तित्व के वर्गीकरण के अनुरूप लिखावटों का वर्गीकरण भी किया गया है जिसका उपयोग व्यक्तित्व के तीन वर्गों (बहिर्मुखी, उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का अंकन करने में हो सके।

द्रुतगामी लिखावट

ऐसी लिखावटें जिनकी गति तीव्र है जो अक्षरों के आकार में बड़ी हैं फैलती हुई स्थान छोड़ती हुई लिखी गई है अक्षर प्रवाहयुक्त हैं एक दूसरे से मिलाकर लिखे हैं तथा जिनमें लेखनी का दबाव अधिक है मात्राएं तथा बिंदु विराम आदि आगे की ओर भाग रहे हैं द्रुतगामी लिखावटें कहलाती हैं। इस प्रकार के लिखावट के चिह्न प्राप्त होने से बहिर्मुखी प्रवृत्ति सूचित होता है।

समगति लिखावट

ऐसी लिखावटें जिनकी गति सम है अक्षर अधिक बड़े अथवा अधिक छोटे आकार के नहीं हैं समान स्थान के प्रसार में लिखी गई हैं और जिनमें लेखनी का दबाव अधिक नहीं है समगति लिखावटें कहलाती हैं। ये उभयमुखी प्रवृत्ति सूचित करती हैं। इनमें बहिर्मुखी प्रवृत्ति के कुछ लक्षण हैं तथा प्रतिरोध के भी हैं।

प्रतिरोधी लिखावट

ऐसी लिखावटें जिनमें मन्दगति के चिह्न हैं जैसे कि छोटे आकार के अक्षर रिक्त स्थानों का अभाव छोटे हाशिए पीछे की ओर झुके अक्षर लेखनी का दबाव हल्का प्रतिरोधी लिखावटें कहलाती हैं। ये अंतर्मुखी प्रवृत्ति सूचित करती हैं।

वैज्ञानिक खोज के लिए लिखावट

हस्तलिपि विज्ञान द्वारा व्यक्तिगत विश्लेषण के लिए स्याही से लिखी हुई लिखावटों की आवश्यकता है। यह कम से कम आधा पृष्ठ सादे कागज पर हो। अच्छा हो यदि यह एक पूरा पृष्ठ हो। हो सके तो सफेद रंग का सादा कागज हो। लिखावट स्वतंत्र तथा स्वच्छन्द गति एवं रुचि से लिखी गई हो। अच्छा तो यह है कि वैज्ञानिक खोज के लिए विशेषतः न लिखी गई हो। लेखक के मन में अपने बचाव की भावना नहीं हो। सहज रूप में लिखी हुई लिखावट उत्तम मानी जाती है।

लिखने की क्रिया साधारण भौतिक परिस्थिति में बैठकर की गई हो। लिखने वाले व्यक्ति को पहले से इस बात की आगाही न हो कि उसकी लिखावट मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए प्रयोग में लाने के लिए उदाहरण मानी जाएगी। लिखावट का भला सहज स्वभाव से व्यवहार में लाई जाने वाली हो। पोस्ट कार्ड पर लिखी गई लिखावटें सही आधार नहीं मानी जाती क्योंकि लिखने वाले को उसमें स्थानमात्र में ही लिखना पड़ता है और स्थानाभाव के कारण बहुधा उसमें लिखावट के चिह्न अपना सहज बनावट बदल लेते हैं।

इस प्रकार से लिखावट के आधार के लिए सही उदाहरण मिलने पर हस्तलिपि-विज्ञान द्वारा लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही निर्धारण

निश्चित रूप से किया जा सकता है। यदि लिखावट की सहज बनावट में शंका हो तो एक से अधिक नमूनों की आवश्यकता पड़ सकती है।

हस्तलिपि विज्ञान व्यक्तित्व की जाँच करने का ऐसा माध्यम है जिससे लिखने वाले व्यक्ति के गूढ़तम लक्षणों का पता लगाया जा सकता है। इस प्रकार की जाँच करने की क्षमता किसी भी अन्य व्यक्तित्व निर्धारण प्रणाली में नहीं पाई जाती। पाश्चात्य देशों के विज्ञानों ने यह अपने वैज्ञानिक अनुसंधानों से बारबार सिद्ध कर दिया है।

३

हस्तलिपि विज्ञान का विकास

किसी भी विषय का वर्णन करते समय यह आवश्यक समझा जाता है कि उसकी उत्पत्ति एवं विकास पर भी प्रकाश डाला जाए। अतः हस्तलिपि विज्ञान के विकास का संक्षिप्त वर्णन यहां दिया जाता है जो कि इस छोटी-सी पुस्तक का आशय समझने के लिए पर्याप्त होगा।

साहित्य की प्राचीन पुस्तकों मे लिखावट से मनुष्य के स्वभाव तथा गुणों की पहचान करने के संकेत मिलते रहते हैं। एक प्रचलित किंवदन्ती है —

पाग बाग बानी शक्ल ग्यानी बुद्धि विवेक
अक्षर होय न एक से देखे पुरुष अनेक।

इससे स्पष्ट है कि अक्षर अपनी मौलिकता के कारण विचित्र माने गये हैं तथा अपने लेखक की निजी विचित्रता के द्योतक भी माने गये हैं। ग्राफोलॉजी अर्थात् हस्तलिपि विज्ञान की उत्पत्ति फ्रांस देश के निवासी श्री जीन हिपोलाइट मिशों से मानी जाती है। यह एक विद्वान पादरी थे। बहुत समय तक इन्होंने विविध लिखावटों का निरीक्षण एवं अध्ययन किया तथा उन लिखावटों के लिखने वाले व्यक्तियों के व्यक्तिगत चरित्र का भी अवलोकन किया। इन्होंने अपने अनुभव से लिखावटों के मूल चिह्नों का पृथक्करण किया उनकी विशेषता को पहचाना और उनमें से प्रत्येक को लिखने वाले व्यक्तियों के विविध व्यक्तिगत लक्षणों से सम्बंधित किया। जैसे कि लिखावट के बड़े अक्षर सूचित करते हैं। लिखने वाले व्यक्ति की विचारशक्ति की विशालता उसकी अभिलाषाएं एवं मानसिक शक्ति उच्चता बहादुरी आदि। इसी तरह से पीछे की ओर झुकने वाली लिखावट लिखने वाले व्यक्ति की मानसिक स्थिरता आत्मसंयम एवं स्वयं को भावना स्पष्ट करने में रुकना आदि व्यक्तिगत लक्षणों को सूचित करते हैं। इस प्रकार से मिशों ने अपने अनुभवों का संकलन किया। यह संकलन एक छोटी-सी पुस्तिका के रूप में सन् १८७१ में प्रकाशित हुआ। यह अपने विषय का माना हुआ सर्वप्रथम प्रकाशन

कहा जाता है। इसके द्वारा मिको ने हस्तलिपि विज्ञान को जन्म दिया तथा इस विषय का नामकरण भी किया। मिको के कथनानुसार ही यह विषय ग्राफोलाजी अर्थात् हस्तलिपि विज्ञान कहलाया।

तत्पश्चात् यह विषय दो प्रकार के लोगों के हाथ लगा। पहले तो वे अव्वल व्यक्ति थे जो मानव स्वभाव को एक पहेली बतलाते थे और हस्तलिपि-विज्ञान को उस पहेली को सुलझाने का साधारण साधन। इन व्यक्तियों ने इस विषय को तुरन्त ही अपनी जीविका कमाने का अनुचित साधन बना लिया। ये जिप्सियों की तरह जगह जगह फिरते थे और इसके द्वारा लोगों के स्वाभाविक लक्षण ही बताने का दावा ही नहीं करते थे बल्कि उनके भविष्य सम्बन्धी अनेक प्रश्नों का उत्तर भी इसके माध्यम से देने का दावा करते थे। ऐसे व्यक्तियों का काम मानवीय दुर्बलताओं से ग्रस्त लोगों का शिकार करना था। सीधे-सादे स्वभाव के लोग इनकी बातों में आ जाते थे। ये लोग मिको के वास्तविक अनुयायी नहीं थे। ये तो अवसर से लाभ उठाने वाले स्वार्थी लोग थे। ऐसे लोगों के स्वार्थपूर्ण आचरण के कारण शीघ्र ही ग्राफोलोजी मज़ाक का साधन बनकर रह गई। प्रभावान प्रतिभाशाली विद्वानों ने इस विषय को एक हीन साधन समझकर त्याग दिया तथा इस विषय को किसी भी बौद्धिक वर्ग में स्थान प्राप्त नहीं हो सका। इसकी अवहेलना होने लगी।

फिर भी कुछ ऐसे गम्भीर विचारक थे जो कि मिको के प्रयासों को व्यर्थ मानने को तैयार नहीं थे। यह सत्य था कि मिको का हस्तलिपि विज्ञान सूक्ष्म एवं बौद्धिक परीक्षा की कसौटी पर पूर्णतः सही नहीं उतर सका था। इस स्तर पर इस को चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्धारण करने की प्रणाली के रूप में माना जा सकना भी सम्भव नहीं था। परन्तु यह निश्चित था कि इसमें एक नवीन क्षमता का आभास था। यह एक नवीन मार्ग था मनुष्य के अज्ञात तत्वों के निरावरण का। इन विज्ञान विचारकों ने मिको के आधारभूत तत्वों की गहराई को देखा और उनमें प्रगतिशील अन्वेषण के लिए पर्याप्त मसाला पाया। इन विचारशील महानुभावों में उन दिनों के शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान, अध्यात्म आदि विषयों के कुछ माने हुए पण्डित भी थे। इन लोगों ने हस्तलिपि विज्ञान के पुनः अध्ययन, नवीन खोज तथा प्रयोगों की क्रिया को बनाये रखा। कालान्तर में अपनी खोजों से अपने हस्तलिपि विज्ञान को एक पूर्णतया नवीन स्तर प्रदान किया।

इसमें हस्तलिपि विज्ञान को पुनर्जन्म मिला। एक नया आधार मिला और इसकी प्रणाली व्यक्तिगत कतिपय अच्छे अथवा बुरे लक्षणों को बताने के बजाय एक पूर्णतया मनोवैज्ञानिक भूमिका पर आधारित हो गई।

ग्राफोलोजी के इस नवीन रूप में, मिको की ग्राफोलोजी से बहुत अन्तर आ चुका था। इन विचारकों ने हस्तलिपि विज्ञान के अनेक चिह्नों को (मिको की

तरह) अलग-अलग आधार न मानकर सपूण लिखावट क चित्र को मनोवनानिक विश्लेषण का आधार माना था। और यह सिद्ध किया था कि लिखावट एक सपूण चित्र है जो कि कागज पर लिखने वाल ने स्वेच्छा स बना लिया है। लिखावट के चिह्न अलग-अलग अपनी महत्ता नही रखत और विभिनता मे उनका काई अस्तित्व ही नहा है। लिखावट के सपूण अगो का सयाग ही अपनी मौलिकता प्रदर्शित करता है। यह लिखावट की अपनी निजी कहानी है और इस कहानी को ग्राफोलोजी क विद्वान लिखने वाल के व्यक्तिगत मनोविनान का अवलोकन करने क लिए मनावनानिक आधार मान लते हैं।

नवीन ग्राफोलाजी म ऐसा ही हाने लगा है। इसम सपूण लिखावट का उसके विश्लषण का मूलभूत आधार मान लते हैं। लिखावट के विभिन्न चिह्न मूल आधार तत्वो के समयन मात्र क लिए मान जाते हैं। ग्राफालोजी की प्रारम्भिक अवस्था म लिखावट के अनेक चिह्न व्यक्तित्व क मूलतत्वा क प्रतीक माने जाते थ। नवीन ग्राफोलोजी म यह परिस्थिति बदल चकी है। और अब उस अनेक चिह्नो का महत्ता गौण हा चकी है।

एसी पुस्तकें अभी मिलती हैं जिनम ग्राफोलोजी की प्राचीन पद्धति का विवरण प्राप्त होता है। यह लिखावट क विभिन चिह्ना का महत्ता प्रदान करती है। य पुस्तक पादरी मिका की प्रणाली पर ही आधारित है। अत इन पस्तको स प्राप्त नान भी उसी तरह से गलतयुक्त है जसा कि मिका की ग्राफोलोजी की विश्लषण प्रणाली थी।

नवीन प्रणाली ग्राफालोजी मिका मे बाद म किय गए अनुसधाना पर आधारित हान क कारण अधिकाश म भिन है।

नवान ग्राफालाजी व्यक्तिगत चरित्र को खाज क लिए मनोवनानिक क्षत्र म एक गम्भार विषय माना जान लगा है। प्राजकल पराक्षा के रूप म भी यह एक विशष स्थान प्राप्त कर चका है। यूराप एव अमरिका क अधिकृत साहित्य म इसक पयाप्त उदाहरण मिलत हैं। ग्राफालाजा अथात् हस्तलिपि विनान के इस नवान युग म डा लडविग क्लागस डा रावर सौडक तथा डा वागनर क नाम अग्रगण्य हैं। डा लडविग क्लागस दिमाग क विशेषज्ञ है। इन्हान हस्तलिपि विनान क विषय पर दिमाग-सम्बन्धी अनक अनुसधान किय हैं। इनका कहना है कि लिखन का प्ररणा तथा शक्ति कवल दिमाग स ही मिलता है हाथ तथा लखनी कवल साधनमात्र हैं। जमन भाषा म इसपर अनक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। जमनी म हस्तलिपि विनान का सब अच्छा विकास हुआ। पिछल महायुद्ध क पहल वहाँ क कम-स-कम नौ महाविद्यालय इस विषय पर शिक्षा द रह थ। इनम शिक्षा पाने वाला म अध्यापक वकाल चिकित्सक तथा मनावनानिक भी थ।

महाविद्यालय म आचाय का पद सबस पहल डा० क्लागस को ही मिला

था। यह आदर उनको कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मिला था।

डा० रावट सौडक चकोस्लोवाकिया के निवासी थे। अनेक भाषाओं का ज्ञान होने के कारण उनका कई प्रकार की लिखावटों का अच्छा ज्ञान था तथा इनका तत्सम्बन्धी गहन अध्ययन इनकी प्रकाशित पुस्तकों में उपलब्ध है। इनका कहना है कि लिखावट पर व्यक्तिगत चरित्र के अलावा अनेक कारण अपना प्रभाव डालते हैं। लिखावट पर इनका असर बहुत अधिक रहता है। जैसे कि लिखने का सामान थका हुआ शरीर बीमारी की हालत आराम के शुद्ध रूप यानी न रख सकने की कमजोरी प्राथमिक पाठशाला में किये हुए अभ्यास की कमी आदि। डा० सौडक ने हस्तलिपि विज्ञान के प्रवाह में बौद्धिक अवरोध देकर इसके रूप को विकृत होने से बचाया तथा इसे स्पष्टता गहनता तथा व्यावहारिक क्षमता प्रदान की। यह निश्चय ही सत्य है कि दिमाग के अलावा भी अनेक कारण लिखावट को प्रभावित करते हैं।

इनका दूसरा अनुसन्धान लिखावट की गति की नाप करना था। इनके अनुसार लिखावट में ऐसे अनेक चिह्न हैं जिनसे तीव्रगति व्यक्त होती है। लिखावट के ऐसे चिह्न भी हैं जिनसे अवरोध व्यक्त होता है। ये प्रसार एवं अवरोध के दोनों चिह्न किसी भी एक लिखावट में प्राप्त हो सकते हैं। जैसे कि एक व्यक्ति कुछ क्षेत्रों में चचल होता है और वही व्यक्ति कुछ अन्य क्षेत्रों में संयम का परिचय देता है।

डा० सौडक का मुख्यतः कहना यह है कि हस्तलिपि द्वारा चरित्रांकन करने से पहले यह निरीक्षण करना परम आवश्यक है कि लिखावट स्वच्छन्द रुचि से लिखी गई हो। यदि ऐसा है तो इसका वैज्ञानिक विश्लेषण सफलता से किया जा सकता है। उन्होंने इस सूक्ष्म जाँच के क्रम भी विधिवत बतलाए हैं।

सबसे आकर्षक शोधकार्य इस विषय में श्री टल्पार का है। यह वास्तव में आस्ट्रिया के निवासी हैं परन्तु कालान्तर में उत्तरी अमरिका में जाकर बस गए। उनकी पुस्तक हस्तलिपि से मनोवैज्ञानिक बोध बहुत ही रोचक और प्रभावशाली है। यदि किसी पाठक को हस्तलिपि विज्ञान की सत्ता में संशय हो तो इस पुस्तक के अध्ययन से उसे पर्याप्त प्रमाण मिल सकते हैं। इनके हस्तलिपि-सम्बन्धी लेखों से इस विज्ञान को कलात्मक क्षमता प्राप्त हुई।

ऐसा पता चलता है कि श्री टल्पार ने अपने अध्ययन एवं अनुसन्धान का क्षेत्र अस्पतालों को बनाया था जहाँ रोगी पड़े रहते थे। उपचार के कारण रोग दूर होने से शरीर में शक्ति का संचार होने से लिखावट भी तदनुसार परिवर्तित होती रहती है यह उन्होंने देखा और इसके कारणों पर अपने विचार निश्चित किये।

जर्मनी फ्रान्स स्विट्जरलैण्ड इटली आदि देशों में हस्तलिपि विज्ञान की प्रगति बहुत आगे बढ़ चुकी है तथा प्रायः प्रत्येक प्रकार के व्यक्तियों की लिखावटों

पर शोध ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। अंग्रेजी भाषा में जिन पुस्तकों का भाषान्तर हो चुका है व प्राप्य है परन्तु यह निश्चित है कि इस विषय का अधिकांश वैज्ञानिक साहित्य अभी जर्मन और फ्रेन्च भाषाओं के बाहर नहीं आया है। यद्यपि अन्य व्यक्तियों ने भी इस ओर प्रगति की है परन्तु वास्तविक विकास अभी भी जर्मनी और फ्रांस में ही हैं।

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के उदाहरण

लिखावट का आधार मानकर व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने का अभ्यास
करने के लिए तथा इस प्रणाली को भलीभाँति समझने के लिए अनेक लिखावटों
के उदाहरणों की आवश्यकता पड़ती है। जितने लोग लिखते हैं उतनी ही अलग
अलग लिखावटें बनती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी मौलिकता को उदाहरण
अपनी लिखावट में प्रकाशित करता है। अतः लिखावट के द्वारा व्यक्तिगत मनो
वैज्ञानिक विश्लेषण का अभ्यास करने के लिए प्रारम्भिक अवस्था में यह नितान्त
आवश्यक है कि जहाँ तक सम्भव हो सके विभिन्न प्रकार की लिखावटों का
संकलन कर लिया जाय। इन विभिन्न प्रकार की लिखावटों का विधिवत निरी
क्षण करने में प्रत्येक का स्थायी आकार विदित होता है। प्रत्येक भाषा की लिखावट
का एक स्थायी रूप एवं आकार होता है। इसमें किसी भी मौलिक लिखावट
को मिलान करने से उसमें मौलिकता के चिह्नों की पहचान होती है। इससे विदित
हो सकेगा कि अमुक लिखावट स्थायी आकार से किन किन बातों में किन किन
लक्षणों में भिन्न है और उसमें अपनी मौलिकता का व्यक्तिगत अंश क्या है। आगे
चलकर एक लिखावट का दूसरी लिखावट में भी मिलान किया जा सकता है और
उसमें विभिन्नता के लक्षण एवं उनमें उपलब्ध मनोवैज्ञानिक संकेतों का भी पता
लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए कह सकते हैं जैसे कि लिखावट का स्थायी
आकार एक इंच का तीसरा भाग है एक अक्षर तिहाई इंच लम्बा और इतना ही
चौड़ा है। यदि किसी मौलिक लिखावट के अक्षर इस माप से बड़े हैं तो उस लिखा
वट को बड़े आकार की लिखावट कह सकते हैं।

लिखावट कागज पर बना एक चित्र है। यदि आप एक अच्छे सुलिखित
पत्र का नमूना देखेंगे तो आप पाएँगे कि कागज पर लिखने वाले ने अपने लिखे हुए
चित्र को कागज के उपलब्ध स्थान के बीच में इस तरह से जमाया है कि उसके
चारों तरफ के हाशिए बराबर हैं। देखिए उदाहरण संख्या १। इस चित्र में बाईं

MAYA
GEORGE TOWN
ALLAHABAD

January 24 1950

Dear Sir,

I am grateful to you for your letter and the copy of your paper on Psycho-Graphology. I shall read it with great interest

Yours truly
Amaranatha Jha

चित्र १

और दाएँ ओर के हाशिए स्पष्ट हैं। ऊपर और नीचे भी समान स्थान छोड़ा गया है। इसके चित्र को देखने से आभास हो जाता है कि लिखनेवाले व्यक्ति ने लिखना प्रारम्भ करने से बहुत पहले अपने दिमाग में एक नक्शा बना लिया होगा कि अमुक स्थान मेरे पास उपलब्ध है और इतना मसाला इस दिए हुए स्थान में मुझको भरना है। यह क्रिया इस प्रकार से होना चाहिए कि दिए हुए स्थान का सब सुन्दर तथा सर्वोचित सदुपयोग हो जाए। अतः यह समझना कठिन नहीं है कि सावधानी पूर्व निश्चय तथा कार्यकुशलता इस प्रकार के लिखनेवाले व्यक्ति के प्रमुख लक्षण हैं। आगे लिखावट के चिह्नों से इस प्रकार के व्यक्तित्व के दूसरे धनात्मक तथा ऋणात्मक लक्षणों का पता चलाया जा सकेगा।

दूसरे उदाहरण संख्या २, ३, और ४ में देखेंगे कि बाएं तथा अन्य हाशिए पहले चित्र के विपरीत हैं।

चित्र २ चित्र ३ चित्र ४

उदाहरण २ में बायाँ हाशिया कम होता जा रहा है। यह स्वाभाविक-मानसिक प्रवाह में अवरोध का लक्षण है। व्यक्ति अपना आचरण प्रारम्भ करने के साथ ही सावधानी से आगे कदम रखता है। इसमें डर है कि वह कहीं गलती नहीं कर जाए और चाहता है कि वह सावधानी से अपने उपलब्ध साधनों में ही अपना गुजारा कर सकने में सफल रहे।

उदाहरण ३ इसके विपरीत है। इसमें दायाँ हाशिया घट रहा है। हम इस लिखावट को पहचानते हैं। यह बापू हैं। काफी दृढ़ता और तेजी से लिखते थे। यह समझ में नहीं आया कि इनकी पंक्तियों के अंतिम शब्द क्या वहीं थोड़ी-सी बची हुई जगह में भर दिए जाते थे। देखेंगे कि पंक्ति के अन्तिम अक्षर सीमित स्थान में ही लिख दिए गए हैं। जब कि लिखावट के अन्य लक्षण जैसे कि तीव्र गति और लेखनी पर भारी दबाव प्रदर्शित करते हैं आन्तरिक शक्ति और आवेग दाएं हाशिए की कमी सूचित करती है भविष्य की योजना में पूर्वनिर्धारण की कमी। यद्यपि इसमें सर्वश्रेष्ठ धनात्मक लक्षण जो कि प्राप्त होता है वह है दृढ़ निश्चय का। जिस कार्य का प्रारम्भ किया है उसे पूर्णशक्ति से पूरा करना इसमें दरकिनार की आवश्यकता नहीं है। यह आत्मनिर्णय तथा कार्यक्षमता का श्रेष्ठ उदाहरण है।

उदाहरण ४ की लिखावट में बाईं ओर का हाशिया फैलता हुआ है। यह तत्त्व लिखावट के सम्पूर्ण चित्र को प्रभावित करता है। जैसे लेखनी आगे बढ़ती है और लिखनेवाले व्यक्ति का ध्यान अपने विषय को व्यक्त करने में संलग्न हो जाता है वैसा हाशिया धीरे धीरे चौड़ा होने लगता है और फैलने लगता है।

यह लक्षण लिखावट में गति तथा उदारता का है। इसमें सावधानी की मात्रा कम और असावधानी की मात्रा अधिक है। यह व्यक्ति अपने आचरण में अधिकतर भावुकता प्रधान है। भविष्य में क्या होगा यह नहीं सोचता। जो होगा वह सामने आएगा ऐसा व्यक्ति बहुधा अपनी शक्ति का व्यर्थ नाश करता है जिसका कि सदुपयोग किया जा सकता था। फिर भी ऐसे व्यक्ति अपनी मानसिक उदारता

इनके ऋणात्मक लक्षण इनकी अस्थिरता म हैं। ये स्वभाव से ही अधिक माना मे अस्थिर हैं। उचगी स्वभाव क ह। आत्मनिश्चय सकल्प समान आचरण की इनम कमी है। किसी एक विषय म किसी इस प्रकार की परिस्थिति म जिसम निश्चय सकल्प नियम दृढता आदि लक्षणा की मुख्य आवश्यकता है य व्यक्ति उपयोगी सिद्ध नही होत। ये कठिनाई का सामना नहा कर सकते।

इस प्रकार की लिखावट म समानता एव असमानता इनकी गति म भावुक आवग एव नतिक नियम इनके सद्गुणो म सकल्प एव शिथिलता की माना क्या है और कितनी है इसम विशेषता क्या है यह सब व्यक्तिगत लिखावट के अय चिह्ना स व्यक्त हाता है। इसके लिए लिखावटा का व्यक्तिगत निरीक्षण एव मनोवैज्ञानिक निराकरण अधिक सूक्ष्म रूप स करना आवश्यक हा जाता है। इस परीक्षा क नियमा का उल्लेख हम आग चलकर करेंगे।

उदाहरण सख्या २ म हाशिए बाइ आर सकीण है। बहुत-से लोग बाइ आर का हाशिया छोडते ही नही हैं अथवा यदि लिखना प्रारम्भ करत समय थोडा सा स्थान छोडते भी है ता यह स्थान धीरे धीरे नीचे की पक्तियो म कम होता जाता है। यह सावधानी क लक्षण की अधिक माना का एक सकेत देना है। यह मानसिक मितव्ययिता का कारण भी है। इसम प्रारम्भिक सस्कारा का अनुभवो का तथा प्रशिक्षण का प्रभाव इनकी व्यावहारिक सकीणता म दृष्टिगोचर होना है। इसमे कलात्मक सुन्दरता भावुकता प्रेरक गति कल्पनाजनक विचार एव वायवीयता का अभाव रहता है ऐस विचारा स इनका सम्पर्क नही है। ऐसे व्यक्ति यह सोच ही नहा सकत कि व किसी अय प्रकार स आचरण कर सकत हैं। यदि इनस कहा भी जाए कि व स्वच्छन्दता म आग बढ सकते हैं तो वे मानने लगेंगे कि यह कम हा सकता है। इनम स्वरक्षा की भावना प्रधान है।

इसम अपने विचार एव अपना भावना का दमन करने की प्रवृत्ति सक्रिय हाती है। एस लाग अपन दिमाग की खिडकियां नही खालना चाहते। गाग होत हुए भी दखना नही चाहत। अपन हाथ को रोक रहत हैं। बिना चल फिर यदि काम चल सकता है ता घर स बाहर निकलना नही चाहत। हिचकिचाहट आत्म विश्वास की कमी डर अविश्वास आदि लक्षणा का सावधानी क रूप म प्रदर्शित करना चाहत हैं।

एसा व्यक्ति अपन व्यावहारिक आचरण म किसी भी प्रकार स आग बढने म पहल दस बार साचता है हिचकिचाता है और आग कदम उठान स रुक जाता है। यदि किसी बन्धन म जान बच जाए ता अच्छा है। इस प्रकार की आन्तरिक भावना इस व्यक्ति का व्यक्तिगत भूमिका म सलग्न रहती है।

लिखावट क अय लक्षणा म व्यक्तिगत आचरण क भी इसी प्रकार क सकेत मिलना आवश्यक हैं व्यक्तित्व निर्माण क लिए। जसा कि बाइ आर हाशिए का

न होना बाद आर का हाशिया छोटा होना अथवा बाद आर का हाशिया छोटा होना जाना ऊपर दिये हुए लक्षण व्यक्त करता है। यह साथ-साथ हो सकता है कि दिये हुए अक्षर छोटे हों, पंक्तियों के बीच का स्थान और बीच का स्थान भी कम प्रयोग किये गए हों। यह लिखावट सूक्ष्म संकोच प्रकार की होगी। जिसमें लिखने वाला अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के कारण अपने आगे बढ़ने वाले हाथ को रोकने लिए विवश है। ऐसा प्रकार का संकीर्ण व्यवहार वह अपने अन्य लोगों के वातावरण में करता है। इस प्रकार के व्यक्तियों के साथन के लिए समाज बन्द कुछ मिलेगा परन्तु और किसी भी प्रकार की सहायता प्राप्त हो सकना सम्भव नहीं है।

समाज में सब प्रकार के व्यक्ति होते हैं और समय-समय पर इन सब प्रकार के लोगों से एक-दूसरे का मिलना होता रहता है। समान वृत्ति वाले लोग मिल बैठते हैं। परन्तु जिस व्यवस्थापक को इन सब लोगों से काम लेना होता है वह इन लोगों की मनोवृत्तियों का आभास पा करके इनसे यथोचित व्यवहार करते हुए अपने अभिलषित को प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है।

उदार प्रवृत्ति के व्यक्तियों में भावुकता प्रधान होने से भावना की मात्रा अधिक होती है। इनमें स्वच्छन्द व्यवहार करने में कल्पना हास्य विनोद मनोरंजन मैत्री की भावना पारस्परिक प्रेम-व्यवहार सामूहिक संस्कार आदि की मात्रा अधिक रहती है और ऐसे व्यक्तियों के साथ में मनोरंजन अधिक हो जाता है। इनकी लिखावट में रचनात्मक और बलवान लक्षण यदि रहते हैं तो निश्चय ही ये व्यक्ति समय पड़ने पर थोड़ी देर के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को एकाग्र करके अपने लक्ष्य को आगे अग्रसर हो जाते हैं। परन्तु लगन से काम करते रहना बहुत समय के लिए अथवा एक जगह एक विचारधारा पर एक ही लक्ष्य पर जमे रहना इस प्रकार के व्यक्तियों के लिए किसी प्रकार से भी सम्भव नहीं होता। ऐसे व्यक्तियों को काफी बड़ा काम नहीं चाहिए। इसके विपरीत मितव्ययिता को अपनाने वाले व्यक्ति स्वभाव से ही अपनी लगन को पकड़े रहते हैं और अधिक स्थिरता व्यक्त करते हैं। मितव्ययिता सावधानी कार्यक्षमता की सतर्कता के अन्य लक्षण भी उनकी लिखावट में पाये जाएँ तो उनका व्यक्तित्व और अधिक स्पष्ट हो जाता है।

इस प्रकार के व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से हम देखते हैं कि व्यक्तिगत प्रवृत्तियों में प्रारम्भिक संस्कारों से मूलतः विभिन्नता की प्रधानता रहती है। जितने लोग हैं उतनी तरह के हैं। मोटे तौर से उनका वर्गीकरण कर लीजिए सामाजिक राजकीय तथा व्यापारिक परिस्थितियों में सब प्रकार के व्यक्तियों का उपयोग होता है और अधिक अच्छा सदुपयोग हो जाने के लिए अनेक पदों के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का चुनाव किया जाता है।

व्यक्तिगत प्रवृत्तियों की छानबीन में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। ऐसे पदों पर नियुक्ति के लिए जिनमें प्रशासन योग्यता प्रबन्ध योग्यता,

योजना की प्रवृत्ति नियम पालने की क्षमता आदि अनेक सबल योग्यताएं उनमें परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए अनिवार्य होती हैं।

ऐसी प्रवृत्तियाँ जिनमें स्वाभाविक गम्भीरता मानसिक एवं भावक स्थिरता, संकल्प की दृढ़ता सावधानी स्पष्टता ध्यान आदि पुष्ट लक्षणों की अधिकता रहती है सुयोग्य व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। इन लक्षणों के समावेश से व्यक्तित्व महान बनता है जिससे विश्वास उत्पन्न होता है। प्रशासन में शक्ति का संचार होता है। ऐसे व्यक्तियों से सचालित प्रशासन सब तरह की कठिनाइयों का मुकाबला करता हुआ अपने गन्तव्य मार्ग से अपने निर्धारित सिद्धान्तों से व अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता।

योजना के विचार विमर्श की अवस्था में विभिन्न प्रकार के व्यक्ति अपने अनुभव के अनुसार एवं अपनी आंतरिक वृत्तियों के अनुसार अपनी गति प्रदर्शित कर सकते हैं। क्या उचित है क्या अनुचित है क्या आवश्यक है क्या होना चाहिए तथा क्या नहीं होना चाहिए आदि का विमर्श किया जा सकता है किसी एक योजना का निर्धारण करने के लिए। इस अवस्था में कल्पना की उड़ान को स्वतन्त्रता है।

परन्तु योजना को क्रियान्वित करने में परिस्थिति बदल जाती है। एक बार कार्यक्रम निर्धारित हो जाने के उपरान्त उस कार्यक्रम को कार्यान्वित कर

[illegible]

चित्र ५

Ramayan is the story of Ram
and of Rams fight against
Pyare Mohan

चित्र ६

Jawaharlal Nehru

चित्र ७

[illegible]
Vallabhbhai Patel

चित्र ८



चित्र १ म

लिखान के लिए दृढ़ निश्चय, एक लक्ष्य, लगन एवं अनवरत उद्योग की आवश्यकता होती है और कार्य को केवल ऐसे व्यक्ति सम्पूर्ण सफल एवं सम्पन्न कर सकते हैं जिनकी सक्रियता, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, स्वभाव से ही स्थिर, लक्ष्यपूर्ण एवं शक्तिशाली हो, यह नितान्त आवश्यक है। उदाहरण के लिए देखिए लिखावट संख्या ५ और ६। लिखावट संख्या ७, ८, ९ और १०। ये सुप्रसिद्ध प्रबन्धकों की लिखावटें हैं। अगले पृष्ठ में संख्या १४ से १७ तक के उदाहरण सब शुद्ध एवं ऊँचे वर्ग की लिखावटें हैं, इसी प्रकार की हैं। उदाहरण के लिए अनेक सुव्यवस्थित लिखावटें प्रस्तुत की जा सकती हैं जैसे कि संख्या ५ से १० तक की लिखावटें हैं।

उदाहरण संख्या ५ स्पष्ट, स्थिर, सम्पूर्ण, दृढ़ और बड़े आकार की लिखावट है। इसमें आवश्यकता से अधिक कोई अतिरिक्त रेखाएँ, पाइयाँ, मात्राएँ, बिन्दु आदि नहीं हैं। जितना लिखना आवश्यक है उतना लिखा गया है, परन्तु पूर्ण आत्मविश्वास से, निश्चय से। ऐसा व्यक्ति संस्कार से ही नैतिक है और अपने आचरण से, उसकी शक्ति एवं क्षमता से पूर्णतया परिचित है। जो वह चाहता है कहता है और करता भी है। इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए। इस लिखावट की एक अन्य विशेषता इसके आकार का बड़ा होना है। यह उत्साह, स्फूर्ति, क्रियाशीलता तथा उदारता का द्योतक है।

उदाहरण संख्या ६ भी ऐसी ही एक स्पष्ट और स्थिर लिखावट है। इसमें पाँचवें उदाहरण से प्रबन्धकारक योग्यता अधिक है। अक्षरों का आकार मध्यम है जैसा कि आदर्श लिखावटों का होता है, शब्दों के बीच का स्थान भी आवश्यकतानुसार है, अधिक फैला नहीं है। अक्षरों के ऊर्ध्वगामी तथा नीचे जाने वाले भाग भी सम हैं। न अधिक बड़े हैं और न अधिक छोटे। इस लिखावट का सर्वश्रेष्ठ आदर्श इसका सम स्वभाव है। यह एक स्वच्छन्द लिखावट होते हुए भी लिखावट के नियमों का संयम में पालन करता है। यह लिखने वाले व्यक्ति की अपार आन्तरिक शक्ति तथा उसका मर्यादित व्यवहार प्रदर्शित करती है। ऊपर से नीचे आने वाली रेखाओं में बल है। रचना में प्रवाह है परन्तु सुसीमित और सुव्यवस्थित। लिखावट के छोटे चिह्न जैसे कि बिन्दु आदि भी यथास्थान बैठे हुए हैं। यह आत्मबल, स्वावलम्ब, स्थिर क्रियाशीलता, धन, दृढ़ता, सुयोजित सामाजिकता का एक बहुत ही उपयोगी तथा अनुकरणीय उदाहरण है। ऐसा स्पष्ट और सुव्यवस्थित

लिखावटें स्वनं उच्च आत्म का आभास देती हैं।

उदाहरण ७ का लिखावट से प्राय हम सभी परिचित हैं। इस स्पष्टता और नक्ति में मागापाग परिपूर्णता है। वास्तविक प्रदान की भावना है। जसा मैं हूँ वसा ही लोग मुझे देखें। लिखावट का कोई भी अक्षर अशुद्ध और अपूर्ण नहीं है। प्रत्यक रेखा तथा अक्षर स्पष्ट और पूर्ण है।

हर महान व्यक्ति म कुछ विशेष गुण होते हैं जिनके कारण ही वह महान बनता है। महानता के ये गुण विशेष छोटी छोटी घटनाओं म प्रत्यक्ष होते हैं। इसका उदाहरण हम माननीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू के जीवन चरित्र स मिलता है। इसका उदाहरण प्रस्तुत है

' वह हिन्दुओं के इस विश्वास को पूरे तौर स समझे हुए हैं कि यह कर्म भूमि है कर्म ही के लिए जन्म हुआ है भोग के लिए नहीं। कभी-कभी यहा तक देखने मे आया है कि जब उनके 'आनन्द भवन म काग्रेस कमेटी के जल्से हुए और उन्हें यह मालूम हुआ कि इसम उनकी कोई खास जरूरत नहा है तो वह मम्बरों की साधारण सेवा म ही लग गए। काम करते रहन का प्रबल पिपासा उनके हृदय म है। एक मिनट भी बेकार करना इनके लिए असह्य है और एक क्षण भी आलस्य म नष्ट कर देना महापाप है। दिन का छोटे म छोटा काम भी आप इस सावधानी गौर और गम्भीरता के साथ करते हैं माना वह किसी राष्ट्र के भाग्य का फसला करते हों। अगर आप एक छोटा सा पत्र भी लिखते हैं तो भी यह देखते हैं कि उसका अक्षर अक्षर ठीक है, और कोई पाई या बिन्दु छूट तो नहीं गया। आपका सिद्धान्त है कि जो अपने जीवन की और रोजाना की छोटी छोटी बातों म और कर्तव्य-पालन म सावधान उद्यमशील और उत्साही है वही मनुष्य कहलाने योग्य है। जो लोग यह समझते हैं कि छोटे छोटे कामों म इतनी छान बीन या सावधानी करने की क्या जरूरत है जब कोई बडा और उत्तरदायित्व पूर्ण काम आयगा तो सावधानी कर ली जाएगी व बडा गलती करते हैं। जो लोग छोटी बातों म असावधानी करते हैं उनके सामने बडी बातें आती ही नही और अगर आती भी हैं तो उनम उन्हें सफलता नहीं मिलती। प० जवाहरलालजी को आप छोटे-से छोटे काम म भी उतना ही सावधान और उत्साही पाएगे जितना बड कामों में।

(माधुरी, कार्तिक ३०६ तु० स० वर्ष ८ खण्ड १, सख्या ७ मे)

पडितजी के जीवन-काल म उनके विषय म जो कुछ भी धारणा रही है और आज उनके पीछे भी लोगों की जो कुछ धारणाए बन गई हो पण्डितजी वास्तव में ऐसे ही हैं जिसका उदाहरण ऊपर दिया गया है और जिसने मुझ सर्वाधिक प्रभावित किया है। उनकी लिखावट तथा जीवनी म सन्तुलन के अभाव का प्रश्न ही दृष्टिगोचर नहा होता।

पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र को जैसा कि हम उनको जानते हैं उदाहरण ९ में पाते हैं। बहुत ही स्पष्ट सादा प्रत्यक्ष बहुत ही अच्छी तरह सन्तुलित स्थिर और धारावाही लिखावट। ऐसी शुद्धता केवल उच्च मानसिक स्तर संयम साहस तथा क्षमता से ही प्राप्त होती है। इनकी प्रतिभा चतुर्मुखी है। इनको हम विविध क्षेत्रों में पाते हैं कवि राजनीतिक प्रशासक आदि। उनकी मानसिक शक्तियां एक सुलझे हुए विचारक की तरह सांस्कृतिक शुद्धता मानवीय सहानुभूति स्फूर्ति आत्मबल धैर्य उनकी लेखनी के सम एवं संतुलित दबाव और उसकी सीमित स्थिर प्रगति की अनेकानेक शक्तियों से प्रसारित हैं।

मिश्रजी के सामने अनेक ज्वार भाटे आते रहते हैं परन्तु उनकी गम्भीर शांत हसमुख प्रवृत्ति निरंतर संघर्ष करते रहने में उनका साथ देती रही है।

श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन की लिखावट में भी यही गुण विद्यमान हैं।

सावधानी गम्भीरता योजना की शांत प्रवृत्ति प्रशासन तथा प्रबंध योग्यता का ध्यान आते ही सर्वप्रथम हमारे सामने सरदार पटेल का स्मृतिचित्र जाग्रत होता है। इनको हम कुछ भूल-सा गए हैं। उदाहरण ८ में इनकी ओर मुखाकृति कीजिए कितने थोड़े में और छोटे अक्षर हैं इनके जिनकी व्याख्या बहुत ही थोड़ी सी भाषा में हो सकती है। परंतु इनको हम लौह-पुरुष कहते थे और जब तक मनुष्य का इतिहास हमारे सामने आता रहेगा सदा ही हम इनका सानी तलाश करते रहेंगे। अक्षर कामद छोटे स्पष्ट और स्थिर हैं। बहुत सोचा परंतु थोड़ा कहा। जो कहा वह पर्याप्त है और कार्यरूप में परिणत होकर ही रहेगा। इनके अनुसार अपने विचार भावुकता तक सांस्कृतिक शुद्धता लक्ष्य एवं क्रियाशीलता का सुसमन्वय रखना ही महान लक्ष्य-साधन की विधि है। यदि यह शुद्ध और सत्य है तो अपनी योजना की सफलता में कोई शंका का कारण हो नहीं है। गुजराती और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं की लिपि में सरदार पटेल के गुण समान हैं।

सुभाषचन्द्र बोस की लिखावट-क्षमता सीधी वर्गपूर्ण सचाई और आत्मनिर्भरता की है। यह उनकी लिखावट में स्पष्ट है। बहुत ही भली भांति नियोजित सूक्ष्म और गतिशील अक्षर उदाहरण संख्या ११ में प्रकाशित हैं। यह लिखावट सच बोलती है साफ बोलती है और आंतरिक शक्ति के वेग से बोलती है। गतिशील लेखनी में स्पष्टता अक्षरों की पूर्णता सांस्कृतिक शुद्धता क्रियाशीलता का यह एक श्रेष्ठतम उदाहरण है। छोटे आकार की लिखावट अपनी जीवन शक्ति का उपयोग बहुत ही उद्देश्यपूर्ण दृष्टि से करने की वृत्ति प्रदर्शित करता है।

चित्र १० अ में प्रसिद्ध विद्वान राहुल सांकृत्यायन के हस्ताक्षर हैं। लिखावट वर्गपूर्ण है अक्षर स्पष्ट हैं। लिखावट लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करने की उत्कट इच्छा बताती है। साथ ही स्पष्ट और पूर्ण अक्षर इस बात के द्योतक हैं कि इनके सामने लक्ष्य स्पष्ट है।

५

व्यक्तित्व का विश्लेषण

ऊपर दिए हुए उदाहरणों में हमने हाशिए से व्यक्त होने वाले लक्षणों का वर्णन किया है। परन्तु आपने अनुभव किया होगा कि इन हाशियों में व्यक्त होने वाले लक्षणों का कतिपय लिखावटों के अन्य दूसरे लक्षणों का समर्थन भी किया गया है। किसी भी वैज्ञानिक प्रयोग में किसी एक एक चिह्न के ऊपर पूरा भरोसा करना प्रयोग की सफलता का द्योतक नहीं हो सकता। उसका समर्थन किसी दूसरी तरफ से भी मिलना आवश्यक होता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम लिखावट में पाए जाने वाले अन्य लक्षणों की ओर भी ध्यान दें।

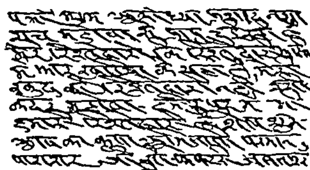
सम्पूर्ण लिखावट के चित्र को परामर्श का आधार मानकर हम विदित होता है कि लिखावट में हाशिया एक महत्वपूर्ण लक्षण है। यह लिखने वाले की संयोजक क्रिया एवं वृत्ति की ओर संकेत करता है। परन्तु वैज्ञानिक नियम के अनुसार केवल इतने से ही लिखने वाले व्यक्ति की संयोजक एवं असंयोजक कल्पना तथा क्रिया की अभिव्यंजना मान्य नहीं हो सकती। अतः इसके लिए हम लिखावट में अन्य लक्षणों की खोज करते हैं। इन चिह्नों से एवं उनसे सार्वत्रिक व्यक्तिगत लक्षणों से हम अपने पूर्व प्राप्त लक्षणों की पुष्टि मिलती है।

वास्तव में हाशिया रिक्त स्थान का सूचक है और रिक्त स्थान लिखावट के बीच में और भी हो सकते हैं। स्थान का विषय सोचते समय लिखने वाला अपने उपलब्ध स्थान का प्रयोग किस प्रकार करता है सोच-समझकर अथवा लापरवाही से मितव्ययिता से अथवा अपव्यय से सुन्दरता से अथवा भद्दपन से? इस प्रकार का व्यक्तिगत विचारधारा अथवा कार्यशालता के लक्षण लिखावट के उन सब लक्षणों में मिलते हैं जिनका स्थान से सीधा सम्बन्ध है। जैसे कि हाशिए अक्षरों शब्दों पंक्तियों के बीच के छूटे हुए स्थान और अक्षरों के ऊपर और नीचे की मात्राओं के आकार से जिसमें बनाये हुए मात्राओं के चिह्न लिखावट की व्यवस्था नष्ट कर देते हैं। उदाहरण के लिए कह सकते हैं —

(१) नीचे की मात्राएं जैसे ऊ की मात्रा इतनी लम्बी हो कि नीचे की लिखावट की पंक्ति की ऊपर की मात्राओं ै ऐ ओ आदि से मिल जाए।

(२) अथवा नीचे की पंक्ति लिखते समय ऊपर की मात्राएं जैसे ई, ऐं ओ आदि अक्षरों की मात्राएं ऊपर की पंक्ति की नीचे की मात्राएं जैसे कि ऊ की मात्राओं से उलझ जाए।

इस तरह की लिखावट जिसमें मात्राएं एक-दूसरे से स्पष्टतः अलग-अलग नहीं हैं निश्चय ही लिखने वाले की सुलझी हुई मानसिक व्यवस्था सूचित नहीं करती। देखिए लिखावट चित्र संख्या ११।



चित्र ११

इस लिखावट में चौड़े हाशिये के लक्षणों का समर्थन अक्षर शब्द एवं पंक्तियों के बीच में अधिक छूटे हुए रिक्त स्थानों से मिलता है। दूसरा समर्थन हमें अक्षरों के आकार से भी मिलता है। बड़े अक्षर जो सामान्य (स्थायी आकार) से अधिक स्थान घेरते हैं चौड़े हाशिए तथा अक्षरों शब्दों एवं पंक्तियों के बीच में अधिक रिक्त स्थान छोड़ने के लक्षणों का समर्थन करते हैं।

छोटे संकीर्ण सकोण-तंग-हुए हाशिए का समर्थन संकीर्ण लिखावट और छोटे छोटे अक्षरों में लिखी हुई लिखावट से स्पष्ट होता है।

इन लक्षणों का एक स्थान पर पाया जाना स्वाभाविक है। जो व्यक्ति स्वभाव में ही मितव्ययी है वह अपने प्रत्येक व्यवहार में समान आचरण करेगा। परन्तु जब लिखावट के चिह्नों के नमूनों में असमानता दिखाई देती है तो परिस्थिति विचारणीय हो जाती है। और किसी स्थिर निश्चय पर पहुंचने के लिए लिखावट के अनेक लक्षणों पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। जैसे कि चौड़े हाशिए की लिखावट में छोटे आकार के अक्षरों का होना तथा संकीर्ण स्थानों का पाया जाना।

इसके विपरीत लिखावट में किसी सक्षीण हाशिए के साथ फैली हुई लिखावट का पाया जाना, बड़े आकार के अक्षरों का पाया जाना तथा रिक्त स्थानों का अधिक प्रयोग किया जाना हो सकता है। इस प्रकार की परिस्थितियों में लिखने वाले के स्वाभाविक एवं अस्वाभाविक व्यक्तिगत लक्षणों में द्वंद्व का संकेत मिलता है। यह निश्चय होना कठिन प्रतीत होता है कि लिखने वाले व्यक्ति मुख्यतः किस प्रकार की वृत्ति अपनाए रहे हैं।

लिखावट में सुव्यवस्था परम उपयोगी एवं स्वस्थ चिह्न है। यह लिखने वाले व्यक्ति की बुद्धि, आत्मबल एवं कार्यशीलता के पुष्ट लक्षणों को व्यक्त करता है।

इस प्रकार की सुव्यवस्थित लिखावट में हाशिए, अक्षरों के आकार, अंतर, शब्द पंक्तियों के बीच के छूटे हुए रिक्त स्थान, मात्राओं की शुद्ध बनावट तथा उनके आकार आदि लिखावट के समस्त चिह्न उपयुक्त रूप से बने हुए रहते हैं। इस प्रकार की सुव्यवस्थित लिखावट अपने स्थायी रूप का यथोचित अनुगमन करती है। इससे लिखने वाले व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक सुव्यवस्था एवं स्नायुतन्त्र की क्रियाशीलता तथा उनका आपस में एक-दूसरे से संतुलन स्पष्ट प्रदर्शित होता है। इसके अच्छे उदाहरण संख्या ५ से १० तक के उदाहरणों में दिए जा चुके हैं। हस्तलिपि विज्ञान के मूल तत्त्व ग्रहण करने के लिए इन लिखावटों को ध्यानपूर्वक पुनः देखना आवश्यक है।

इस परिस्थिति का युवावस्था में तथा बाल्यावस्था में समान रूप से महत्त्व है। युवावस्था में ऐसा होना स्वाभाविक हो सकता है। इस अवस्था में मानसिक वृत्तियाँ परिपक्व हो चुकती हैं। शारीरिक शक्तियाँ सशक्त हो चुकी होती हैं और उनका संतुलित संचालन किया जा सकता है। बाल्यपन में मानसिक एवं शारीरिक कामनाओं के कारण स्थिरता, स्पष्टता, पुष्टता आदि वृत्तियों का संचार यथोचित मात्रा में नहीं हो पाता है। अतः यह स्वाभाविक है कि इस अवस्था में लिखावट में अस्तव्यस्तता दृष्टिगोचर हो जो कि बाल्यपन के स्वभाव की द्योतक है। यह मानसिक अपरिपक्वता है।

अतः इस बात का प्रयास किया जाना चाहिए और जहाँ इस विषय की यथेष्ट मान्यता है, वहाँ ऐसा किया भी जाता है कि प्रारंभ से ही शिक्षारंभ के प्रवेश में ही स्थिर, सुव्यवस्थित, शुद्ध एवं संपूर्ण लिखावट का अभ्यास कराया जाता है। इस अभ्यास और प्रशिक्षण से निश्चय ही लिखना सीखने वाले बालक अच्छी लिखावट ही नहीं सीखते, साथ-ही-साथ अच्छे और बुरे का ज्ञान भी प्राप्त करते जाते हैं। क्या अच्छा है अथवा क्या अच्छा नहीं है, इसका मनन भी करते जाते हैं। जीवनकाल में इस प्रकार की अनेक बातें जिनको कि हम बहुत ही छोटी समझ कर छोड़ देते हैं, ध्यान देने योग्य होती हैं। इनकी उपेक्षा करना आगे

चलकर युवावस्था में अधिकाधिक हानिकारक सिद्ध हो जाता है। छोटी छोटी बातों को ध्यान में रख सकना भी जीवनकाल की सफलता का परम अभ्यास है। इस तथ्य का आभास हम तब होता है जब हम युवावस्था प्राप्त हो जाने पर भी कतिपय व्यक्तियों को बच्चों की तरह अव्यवस्थित अस्थिर आचरण करते देखते हैं। उस समय खेद है कि समय निकल चुकने के कारण उनको किसी भी प्रकार से अपना खोया हुआ समय एवं सुअवसर फिर से प्राप्त नहीं हो सकता।

छोटे आकार के अक्षर निश्चय ही थोड़ा और संकुचित स्थान लेते हैं। इस लिखावट में और भी एक लक्षण है। वह लिखावट का बाईं ओर का झुकना है। इसकी विवेचना हम आगे के परिच्छेद में करेंगे।

चंचल स्वभाव की पहचान लिखावट में लेखनी की चंचलगति से होती है। जब लिखावट में कोई निश्चित व्यवस्था नहीं दिखाई देती पंक्तियां ऊपर नीचे जाती हैं अक्षर अधकटे और बिखरे हुए दिखाई देते हैं तो उसको पढ़ने वाले सहज ही समझ लेते हैं कि लिखने वाले व्यक्ति का मन स्थिर नहीं है। वह अपना ध्यान एकाग्र नहीं कर सकता। उसमें आत्मबल का अभाव है। अथवा वह अपने आत्मबल का प्रयोग कर सकने में असमर्थ है। देखिए चित्र संख्या ४ में दिया हुआ उदाहरण।

शेष शुभ आपकी – उर्मिला।

चित्र १२

1243 etc
fast friend She sends
lass with me she is

चित्र १३

लिखावट संख्याएं १२ और १३ विभिन्न होते हुए भी समान लक्षण हैं। इन व्यक्ति कामुक हृदय तथा भावना प्रधान होते हैं। उनके लिए भाव तरंग में बह जाना स्वाभाविक है। सहज ही किसी एक विचार की धारा में उनका उत्साह बढ़ जाता है। परन्तु नियमित व्यवहार का आभास एवं पर्याप्त अभ्यास न होने से शीघ्र ही यह उत्साह ठण्डा पड़ जाता है। वह फिर कोई नई योजना बनाने में लग जाता है। इन व्यक्तियों में मानसिक उथल-पुथल पराजय तथा निराशा

ढग, विचारधारा तथा आचार विचार म समानता का अभाव रहता है। य किसी एक वाय को मन लगाकर नही कर सकते। किसी भी एक विचारधारा का, किसी भी एक आदश का दृढतापूवक पक्के नही रह सक्त। इस वृत्ति की प्रमुखता मनुष्य क व्यावहारिक जीवन म है। सामाजिक परिस्थिति हो अथवा व्यापारिक, राजनीतिक वातावरण हो अथवा औद्योगिक घर म अपनी स्त्री एव बच्चो से व्यवहार हो अथवा इष्ट मित्रो से अपने नियम का पक्का होने की क्षमता अनिवाय है। अपनी बात को जो निभा सके, उसका आदर सब जगह होता है। एसा व्यक्ति अपन लिए प्रत्यक वातावरण म विश्वासपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेता है। लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति अपना बात का धनी है। जानते हैं कि वह अपना वचन पूरा करेगा फिसलेगा नहा। बच निकलने का बहाना नहा बनाएगा। किसी भी प्रकार क प्रलोभन उसको अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने से डिगा नही सकेंगे। वह पथभ्रष्ट नही होगा। उसक व्यक्तिगत लक्षण चाहे और कुछ भी हो परन्तु वह कम-से-कम अपनी बात का पक्का है। ऐसे व्यक्ति सामाजिक औद्योगिक राजनीतिक तथा किसी भी प्रकार के प्रशासन म ऊचा स्थान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार स उनके व्यक्तित्व का भरोसा सवसाधारण जनता म बना रहता है। स्थिर स्वभाव वाले सुव्यवस्थित मानसिक योजना वाले व्यक्ति अपना प्रमुख एव आन्तरिक गम्भीरता के कारण किसी भी परिस्थिति म हतोत्साह नहा होते। उनका आत्मबल सदा ही उनम शक्ति का सचार करता रहता है। इस प्रकार की गभीर सुव्यवस्थित लिखावट का स्पष्ट उदाहरण हमारे आदरणीय राष्ट्रनेता सरदार पटेल की लिखावट म सदव ही प्रस्तुत रहा है। लिखावट सख्या ८ उनकी लिखावट का उदाहरण है। एस स्थिरता क सकेत हमको अय स्थिर एव पुष्ट लिखावटो म भी मिलते हैं जस कि लिखावट सख्याए १४ एव १५। ये व्यक्ति अपन व्यावहारिक क्षत्र म सुव्यवस्थित चरित्र की महत्ता प्रदर्शित करत हैं। उनकी आतरिक शक्ति देखते हुए ऐसा होना अनिवाय है। चित्र सख्या ६ की लिखावट म भी वह इतनी ही शक्ति स उपलब्ध है।

अव्यवस्थित एव दुबल आत्मबल वाल व्यक्तियो को जब कभी अपनी असफलता का वास्तविक आभास होता है व ऐसे हतोत्साह हो जाते हैं जिससे उनको जगा सकना असभव नही तो कठिन अवश्य हो जाता है। इनम एक विशेषता है कि य पुरानी बातें बहुत जल्दी भूल जाते हैं। और किसी नवीन कल्पना क जाग्रत हो जाने पर फिर से नवीन उत्साह क साथ खडे हो जात हैं। फिर एक नई लहर आई और वह चली।

अव्यवस्थित लिखावट जब छोटे आकार की सकीर्ण स्थान म और गिचपिच होती है तो वह व्यक्तित्व क बलहीन अस्वस्थ लक्षण व्यक्त करती है। देखिए लिखावटें स० ११ १२ १३। इन लिखावटो को देखने से पता चलता है

असम्भव था। नित्य ही उपचार चलता रहता था। ऐसा मालूम नही होता था कि यह अधिक कष्ट सहन कर सकते हैं अथवा कोई भी कार्य नियमबद्ध तथा यथाक्रम कर सकते हैं। इतना शारीरिक शिथिलता म सहज ही दिमाग और स्नायु कमजोर पड जाते हैं। परन्तु इनकी लिखावट को देखिए कितनी स्थिर हैं इनकी रेखाएँ। अक्षर मोतियों की तरह पिरोये हुए हैं। कारण ? उनकी आन्तरिक शक्ति बहुत ही बलवान थी जिसके सचार से वह अपनी महान शारीरिक व्याधि का प्रभाव अपने मानस पर नहीं होने देते थे। उनकी शान्त एव सद्व्यवहार स्थिर सहनशीलता की शक्ति उनके स्थिर एव सदाचरण की भूमिका म सर्व श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करती रही है। इस शान्त-सरल सहनशीलता तथा आत्मिक दृढता के उद्भव से जो दीप प्रज्वलित हुए हैं वे स्वयं लुप्त होते हुए भी भारतीय सांस्कृतिक एव साहित्यिक क्षितिज को असीमित काल तक स्थायी रूप से सुप्रकाशित करते रहेंगे।

यह लिखावट समगति वर्ग म आती है अत उभयमुखी प्रवृत्ति व्यक्त करती है।

ऊपर दिये गए परिचय से हस्तलिपि विज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण मूल तथ्य सहज ही सिद्ध होता है। जैसा कि प्रारम्भ म ही कहा जा चुका है कि हस्तलिपि का सीधा सम्बन्ध लिखनेवाले की मानसिक अवस्था से है। हस्तलिपियों का निरन्तर पर्यवेक्षण करते रहने से अनुभव होता है कि स्वस्थ व्यक्ति जिसका दिल और दिमाग मजबूत है हाथ जमाकर लिखता है। जिस तरह से उसे अपने शारीरिक अगो पर तथा इन्द्रियो पर अधिकार है उसी तरह से उसको अपनी लेखनी पर भी अधिकार है। वृद्धावस्था से अथवा किसी अन्य प्रकार से शरीर म कमजोरी आने से उसका शरीर शिथिल हो जाना स्वाभाविक है। हाथ कॉपने लगता है। लिखने म भी हाथ कॉपने के कारण लिखावट बिगड जाती है। व्यक्तियो की स्वस्थ तथा बीमारी की हालत म लिखी गई लिखावटो के तुलनात्मक मिलान से और विवेचनात्मक जाँच से ऐसा सिद्ध हो चुका है। और यह मूल तथ्य फिर भी पर्यवेक्षण तथा अनुभव के द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।

परन्तु श्री सियारामशरणजी गुप्त की शारीरिक अवस्था तथा उनकी लिखावट म कोई ऐसा समानता नहीं है क्योंकि उनका मस्तिष्क उनकी मानसिक अवस्था पूर्णतया स्वस्थ था। यह उनके जैसे रुग्णावस्था वाले व्यक्ति म केवल अनिवार्य दृढ आन्तरिक शक्ति के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। इस तरह से हस्तलिपि विज्ञान के प्रति यह लिखावट अद्वितीय उदाहरण है। दृढ निश्चय कष्ट सहिष्णुता नियम-पालन की क्षमता रचनात्मक कल्पना कार्यपालना तथा स्वच्छन्दता के ऐसे सजीव उदाहरण विरले ही मिलते हैं।

डा० वृन्दावनलाल वर्मा की लिखावट का उदाहरण चित्र १६ म दिया

गया है। यह एक दूसरे श्रेष्ठ प्रतिभावान व्यक्तित्व का ज्वलन्त प्रतिबिम्ब है। इसकी मौलिकता उदाहरण संख्या ५ ६ के विपरीत है, परन्तु अनूठा है।

—

चित्र १६

इस लिखावट का महत्त्वपूर्ण लक्षण लेखक की धाराप्रवाह गतिशीलता है। लेखनी अपनी यात्रा प्रारम्भ करते ही सुगमता से परन्तु तीव्रगति से बढ़ती है। अक्षर मिले-जुले हैं। साथ ही शिरा रेखाएं भी बनती चली जाती हैं। मात्राएं, विसर्ग आदि भी आगे को चलते हुए मालूम होते हैं। ये सब लेखनी की तीव्रगति के सूचक लक्षण हैं। अत बहिर्मुखी प्रवृत्ति के वर्ग में आते हैं।

इस प्रकार की लिखावट मुख्यतः आन्तरिक उत्कट प्रेरणा, अनवरत लगन, अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत करने का उद्यम, कल्पना, उसको साकार कर दिखाना, निर्भीकता आदि रचनात्मक आदतों के लक्षण प्रकट करती है। ऐसी प्रकार व्यक्ति के समक्ष कोई भी ऐसी समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती जिसका सुल-झाने के लिए उसे कठिनाई का अनुभव हो। ऐसी कोई भी अड़चन नहीं है जिसे वह पार करने का साहस न कर सके। ऐसी कोई उलझन नहीं है जिसे तुरन्त और सफलतापूर्वक सुलझाने की उसमें समय न हो। जिस समय समस्या उत्पन्न होती है उसका समाधान भी साथ-ही-साथ स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत हो जाता है।

वास्तव में इस प्रकार के समय व्यक्ति कठिनाइयों का सामना करने में ही आनन्द प्राप्त करते हैं। नये-नये रचनात्मक कार्यों को उठाना और उनको सफल कर दिखाना, ओज, उद्योग और परिश्रम में, समाज में परस्पर व्यवहार में अन्य व्यक्तियों का संचालन करना, नेतृत्व करना, परिस्थितियों से संघर्ष करना, उन पर विजय पाने के लिए, यह सब ऐसे पराक्रमी व्यक्तित्व के लिए सहज व्यवहार है। इस शक्तिशाली लिखावट में तीव्रगति होते हुए भी स्थायी स्तम्भ

चाहता बहुत कुछ है परन्तु अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्ति का सन्तुलन तथा सुव्यवस्थित उपयोग न कर सकने के कारण अपने लक्ष्य को धय एव स्थिरता से पकडे नहीं रह सकता मानसिक दृढता कष्ट-सहिष्णुता इनके व्यक्तित्व का प्रभावपूर्ण तत्त्व नहीं है।

सामाजिक व्यवहार में यह लेखक बहुत ही सरस हैं। इनकी रंगीनियां अपने सहयोगियों को सदा ही विनोदमय एव आकर्षित रखती हैं। इनकी मिलन-सारसता उदार है। बात इतनी है केवल कि यह अपनी किसी नवीन कल्पना के सागर में उथल पुथल न हो रही हो। इनकी चित्तवृत्ति किस समय संगमप्रिय अवस्था में है यह वास्तव में विचारणीय विषय है। इस लिखावट में जो बनावटीपन दिखाई देता है वह वास्तव में इनकी स्वाभाविकता है। जो प्रयास दिखाई देता है वह वास्तविक है। इतना तीव्र भावुकता प्रधान व्यक्तित्व सहज ही दूसरे लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है।

इस तरह से लिखावटों के भौतिक चिह्न सामान्य अथवा जाति-सम्बन्धी प्रतिरूप तथा विशिष्ट प्रतिरूप—उनकी पहचान उनकी स्थिरता की परख उनकी माप उनका योगायोग अनेक प्रकार की मौलिक लिखावटों का सूक्ष्म पर्यवेक्षण एव मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने से ही प्राप्त हो सकता है। इसका अभ्यास आवश्यक है। लिखावट के प्रतिरूप स्पष्ट पहचान में आने से अनेक व्यक्तिगत लक्षणों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी होने लगता है। लिखनेवाले का व्यक्तित्व स्पष्ट होने लगता है। अभिरुचि और अभ्यास किसी भी वैज्ञानिक क्रिया को मान-वीय मनीषी और विश्वासजनक रूप देने के लिए आवश्यक हैं।

व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक लक्षण—मनुष्य की मूल प्रवृत्तियाँ उसके संस्कार व्यावहारिक परिस्थितियाँ—साहित्यिक सामाजिक राजनीतिक अथवा आर्थिक—अनेक हैं। वह भांति भांति से अपनी सम्पूर्ण युक्तियों से जितना कि उसके लिए पर्याप्त है अपनी व्यक्तिगत सुगमता के लिए आचरण करता है। इसमें उसे सफलता मिलती है और कभी नहीं भी मिलती। बहुत ही मुलझे हुए व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके देखा। परन्तु विशेषता यह पाई कि प्रत्येक व्यक्ति में अनेक स्वाभाविक लक्षणों का समावेश है। ऐसा विरला ही कोई व्यक्ति होगा जिसे किसी एक विशेष लक्षण से सकेत किया जा सके। प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका में अनेक लक्षणों का योग पाया जाता है और यह योग अपना एक अनूठापन उत्पन्न करता है। प्रत्येक व्यक्तित्व के उदाहरण में इन लक्षणों के अनूठे योग में जहाँ क्रियाशील टिकाऊ गुण निहित हैं वहाँ हमको रचनात्मक अभिरुचि का दर्शन होता है। जहाँ निष्क्रिय गुण मिलते हैं वहाँ रचनात्मक उद्योग के चिह्न प्राप्त नहीं होते। जैसे कि व्यक्तित्व में बहिर्मुखी प्रतिभा प्रधान होते हुए यदि उसमें स्थिरता भी है तो ऐसा व्यक्तित्व अपने बहिर्मुखी प्रतिभा के गुण का सदुपयोग कर सकेगा।

उसकी भावमय कल्पना मन जाल, प्रकाशित स्फूर्ति उसके नेतृत्व को सुरुचिपूर्ण, सुव्यवस्थित और सरस बना देंगे। उसके उद्यम को लाभदायक बना देंगे। यदि यही बहिर्मुखी व्यक्तित्व का लक्षण अस्थिर चलायमान व्यक्ति में पाया जाएगा तो वह उसके मनोभावों में सदैव उथल-पुथल बनाए रखेगा। ऐसा व्यक्ति कभी इधर कभी उधर भटकता रहेगा और इस तरह से बहिर्मुखी व्यक्तित्व का लक्षण जो स्थिर स्वभाव के साथ सद्गुण हो जाता है वही अस्थिर स्वभाव के साथ दुर्गुण अथवा स्वभाव की कमजोरी कहलाएगा।

इस तरह से मितव्ययता और उसके विपरीत उदारता भी व्यक्तित्व के प्रमुख लक्षण हो सकते हैं। ये दूसरे लक्षणों के योग में क्रियाशील और निष्क्रिय गुणों को प्रदर्शित करते हैं। जिस व्यक्ति का ध्यान केन्द्रित रहता है वह अपनी शक्तियों का संचय करता है। यदि उसमें नतिकता का सामंजस्य है तो वह कृपण न होकर आवश्यकता पड़ने पर अपनी संचित शक्तियों का व्यय करने में उदारता प्रदर्शित कर सकता है। उदार-हृदय व्यक्ति यदि आवश्यक और अनावश्यक परिस्थितियों की तुलनात्मक पहचान करने में असमर्थ होता है तो वह अपनी संचित शक्तियों का वृथा व्यय करके उनको शीघ्र ही नष्ट कर डालता है।

मानव-स्वभाव में रुचि रुझान, गुण अवगुण आदि का विश्लेषण करने में सम्पूर्ण लक्षणों का पर्यवेक्षण आवश्यक होता है। लक्षणों के किसी भी योग को अच्छा या बुरा नहीं कहा जा सकता। जो स्वाभाविक लक्षण एक व्यक्ति में अच्छा हो सकता है वही दूसरे व्यक्ति में बुरा हो सकता है। अतः व्यक्तित्व के रूप चित्रण के लिए उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन आवश्यक है। लोग कहते हैं कि अमुक लिखावट अच्छी है अथवा अमुक लिखावट अच्छी नहीं है। यह साधारणतया लिखावट की सुन्दर बनावट देखकर ही कहा जाता है। लिखावट अच्छी है अथवा अच्छी नहीं है, वास्तव में इसका पता उसके मौलिक चिह्नों की रचना से लगता है। कुछ लिखावटें देखने में बहुत अच्छी लगती हैं। उनमें सादगी सफाई और सम्पूर्णता पाई जाती है परन्तु हस्तलिपि विज्ञान की दृष्टि से वे निर्जीव होती हैं। ये मुख्य के उद्देश्य से सावधानी से बनाई हुई होती हैं स्वाभाविक गति से नहीं। इन लिखावटों में कल्पना, प्रेरणा जैसे अन्य लक्षण, जो कि व्यक्तित्व के प्रधान सक्रियात्मक तत्त्व हैं, प्रदर्शित नहीं होते। अन्य लिखावटें जो रचना में उतनी सुन्दर नहीं हैं सूक्ष्म निरीक्षण से व्यक्तित्व के अनेक जीवनोपयोगी लक्षण प्रकाशित करती हैं। ये स्वाभाविक लिखावटें हैं, जैसा कि लिखने वाला व्यक्ति सजीव है सजग है और स्वतंत्र आचरण करता है। लिखावटों के विभिन्न उदाहरण देखते रहने से इन लिखावटों की पहचान होती है।

तथापि हस्तलिपि विज्ञान का उपयोग करते हुए यह आवश्यक होता है कि लिखावट की विधि विद्या की पहचानकर की जाए उनके मनोवैज्ञानिक लक्षणों

का तार्किक विवेचन किया जाए और उन विविध लक्षणों का समन्वय करते हुए व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अंकन किया जाए। इस परामर्श में हस्तलिपि विज्ञान के आधारभूत तत्त्व उपयोगी संकेत देते हैं। इन संकेतों से मनोवैज्ञानिक संतुलन तथा समाज में मानव स्वभाव का चित्रण सुगम हो जाता है।

लिखावट में मनोवैज्ञानिक संकेत—प्रत्येक व्यक्ति की अपनी लिखावट मौलिक होती है। भावना गर्भित मानसिक अवस्था के अनुसार उसकी सक्रिय एवम् निष्क्रिय आचरण करती है जिससे समय-समय पर यह लिखावट बदलती हुई प्रतीत होती है। हम इस बदलती हुई लिखावट को पहचान लेते हैं। इसका कारण यह है कि प्रत्येक लिखावट में कुछ स्थायी चिह्न होते हैं। हस्तलिपि विज्ञान में पहला नियम लिखावट के पूरे चित्र का निरीक्षण करना है जिसमें उपलब्ध स्थानों का सावधानी से किया हुआ उपयोग अथवा असावधानी दिखाई देती है। इससे लिखने का ढंग, प्रौढ़ता, सौम्यता एवं सांस्कृतिक संस्कार आदि भी दिखाई देते हैं। दूसरा नियम लिखावट के स्थायी चिह्नों की पहचान तथा उनका निरीक्षण है। ये चिह्न दो प्रकार (प्रतिरूप) में बांट दिए जा सकते हैं। एक सामान्य अथवा जाति सम्बन्धी प्रतिरूप जैसे लिखावट का स्पष्ट होना, मोटी और भद्दी लिखावट होना, तेज गति से लिखा हुआ, लिखावट आधारतल पंक्तियां व शिरोरेखाएं होना न होना आदि। दूसरे विशिष्ट प्रतिरूप जैसे लिखावट का फैलाव, लिखावट का छोटा या बड़ा आकार, लिखावट में मात्राओं, शून्य, विसर्ग, पाई आदि में सामान्य अथवा असामान्य आकार और उनकी विविध बनावटें आदि होना अथवा न होना।

सामान्य जाति सम्बन्धी प्रतिरूप और विशिष्ट प्रतिरूप कितने भी हो सकते हैं। यह प्रत्येक लिखावट की बनावट पर निर्भर है।

लिखावट के इन प्रतिरूपों से व्यक्तित्व के विविध लक्षणों का मनोवैज्ञानिक रूप मिलता है जैसे स्पष्ट अक्षर मानसिक स्पष्टता प्रदर्शित करते हैं। परन्तु व्यक्तित्व में स्पष्टता के साथ-साथ और भी बहुत-से लक्षण हो सकते हैं जो किसी भी व्यक्ति के बौद्धिक भावक आत्मरक्षक और अन्य विशेष लक्षणों से प्रभावित रहेंगे। इनकी पहचान के लिए लिखावट के अनेक चिह्नों की परख और उनका संयोग करना आवश्यक होगा। जैसे कि चौड़े अथवा संकीर्ण लिखावट के बीच में छोड़े हुए रिक्त स्थान, संकीर्ण लिखावट, अक्षरों के बड़े आकार, लेखनी का अधिक दबाव, कागज पर अधिक स्याही का प्रयोग, आगे की ओर झुकती हुई लिखावट, शिरोरेखा खींचना अथवा छोड़ जाना, अक्षरों का एक-दूसरे से मिल जाना अथवा उनके प्रत्येक अंग का अलग-अलग लिखा जाना आदि। इस प्रकार से लिखावट के अनेक चिह्नों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा उनका सामूहिक रूप से दर्शित प्रवृत्तियां स्वाभाविक मानसिक मौलिकता आदि विविध

व्यक्तिगत लक्षण प्रस्तुत करता है। इसमें लिखने वाले व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक स्वाभाविक तथा मौलिक व्यक्तित्व प्राप्त होता है। इस तथ्य का विशिष्ट उदाहरण पिछले अध्याय में प्रस्तुत लिखावटों से प्राप्त मनोवैज्ञानिक चित्रांकन द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका है।

विषय के पर्याप्त ज्ञान अनुभव एवं अभ्यास द्वारा लिखावटों के सामान्य चिह्न पहचाने जाते हैं उनका जाति-सम्बन्धी प्रतिरूप विशिष्ट प्रतिरूप, उनकी स्थिरता का परख लयता का गति की नाप अक्षरों के आकार सम्पूर्ण लिखावट की व्यवस्था आदि योगायोग प्राप्त होते हैं। इसका अभ्यास आवश्यक है। व्यक्तित्व की एक मोटी परन्तु विस्तृत रूपरेखा किसी भी लिखावट के विधिवत् अध्ययन से प्राप्त हो जाती है। इस समय में आ जाता है कि लिखने वाले व्यक्ति के स्वभाव अथवा चरित्र के स्थायी स्तम्भ कौन-से हैं। स्वाभाविक वृत्तियाँ स्पष्ट हो जाती है। अधिक छानबीन से व्यक्तित्व की गहनता में भी पहुँचा जा सकता है। हस्तलिपि विज्ञान की वैज्ञानिक क्रिया सहज तथा विधिवत् है। पर्याप्त अभिरुचि लगन, अध्ययन से इसका अभ्यास किया जा सकता है तथा इसके द्वारा किसी भी व्यक्ति के मौलिक मनोवैज्ञानिक अंकन करने में सफलता प्राप्त हो सकती है। हस्तलिपि के मूल तत्त्वों तथा तत्सम्बन्धी व्यक्तिगत चरित्र के लक्षणों का वर्णन आगे करेंगे।

६

अक्षर कैसे लिखे जाएँ

इस विषय पर मराठी साहित्य से एक बहुत ही उपयुक्त किंवदन्ती प्राप्त होती है। इस कथन का सीधा सम्बन्ध अक्षरों की बनावट अथवा लिखावट से है, ऐसा कहा गया है।

वाटोळे सरळ मोकळे
मुक्तमाळा जैसा।
पहिले अक्षर जे काढिले
ग्रंथ सपेनो पहात गेले ॥

चित्र १८

सरल भाषा में कह सकते हैं कि अक्षर गोलाकार हों, सुडौल बने हों, सरलता से बनाये गए हों तथा अलग-अलग बने हों। मोतियों की माला के समान इनका आकार एक समान हो, सुडौल तथा सरल। जैसे कि ग्रंथ लिखना प्रारम्भ करने में अक्षर बने हैं, वैसे ही अक्षर समान रूप से ग्रंथ के अंत-पर्यन्त बनते चले जाएं।

किंवदन्तियाँ सर्वमान्य तथ्य प्रदर्शित करती हैं। ये ऐसे तथ्य होते हैं जो बहुत ही कठिन एवं व्यावहारिक अनुभव से प्राप्त होते हैं। इस तथ्य का महत्त्व किसी भी काल एवं परिस्थिति में समान रहता है। यह किंवदन्ती भी इसी प्रकार एक सर्वमान्य तथ्य प्रदर्शित करती है। इस सत्य का महत्त्व लेखन की प्रत्येक परिस्थिति में समान रूप में ही पाया जाएगा। लेखन वाला व्यक्ति कोई भी हो, लेखन की लिपि कैसी भी हो तथा कुछ भी लिख रहा हो, लेखन की शैली अक्षरों की बनावट सरल एवं स्पष्ट हो। अक्षर सरल हों, एकसे बनें, सुडौल बनें, सरलता से लिखे हों तथा मोतियों की माला के समान एक के बाद दूसरा स्पष्ट रूप से अलग

अलग बनते हुए चले जाएँ यह नितान्त आवश्यक है।

किंवदन्ती, अपने स्पष्ट तथ्य के कारण आवश्यक सुझाव उपलब्ध करती है। ये सुझाव इतने सहज रूप से तथा इतनी सरल भाषा में दिए जाते हैं कि सदा ही स्मरण रहें और उसकी याद दिलाते रहें। कोई भी व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में इनकी यथार्थता समर्थन में शंका न कर सके उसके अनुसार आचरण भी कर सके। सत्य तो यह है कि व्यावहारिक जीवन के लिए ये थोडे से चुने हुए सुंदर, सरल उपयुक्त शब्द महापुरुषों के द्वारा दिये हुए महान् निर्देश हैं। इनका अनुसरण करने से आत्म ज्ञान आत्म-बल स्वावलम्ब तथा सृजनकारी क्रियाशीलता प्राप्त होती है जिससे हमारे जीवन में से लक्ष्यहीनता की मात्रा कम होती है और हम अपना जीवन व्यवहार आचरण अधिक उन्नत करने के लिए एक आदर्श प्राप्त हो जाता है। अधिक कुशलता एवं सफलता प्राप्त कर लेने के लिए इसका आभास स्वतः होने लगता है।

बंगला साहित्य में भी इस विषय पर गहन विचार प्राप्त होते हैं। हमारे आदरणीय गुरु श्री प्रफुल्लकुमार चटर्जी प्राय एक बंगला कथन दोहराया करते हैं, वह है काली कलम मन लेखे तीन जन।

चित्र १६

स्याही लखनी तथा मन इन तीन के सन्तुलन से सुलेख बनता है। केवल स्याही और लेखनी ही लिखावट के लिए पर्याप्त नहीं हैं। अच्छी लिखावट के लिए यह परम आवश्यक है कि स्याही और लखनी के साथ ही हमारे मन का सहयोग भी हो। जब हमारा मन लिखने में साथ नहीं देता तो निश्चय ही लिखना कठिन हो जाता है। जब किसी परिस्थिति में बिना मन के सहयोग के लिखा जाता है तो केवल एक अस्वस्थ लिखावट का चित्र उपस्थित होता है। देखिए लिखावट संख्या २० का चित्र। इस लिखावट के अक्षर अनेक स्थानों पर अशुद्ध हैं कटे फटे हैं तथा अव्यवस्थित हैं। लखनी में सहज गति आना असम्भव है। अच्छा सुलेख तथा अच्छी

स्थिर सुव्यवस्थित तथा प्रभावशाली लिखावट लिखने के लिए आवश्यक है कि लिखते समय हमारा मन शांत हो स्थिर हो स्वस्थ हो और लिखावट में स्वाभाविक गति के लिए हमारे मन के विचार भी सुलझे हुए हों।

अच्छी सुव्यवस्थित लिखावट के उदाहरण लिखावट संख्या १८ और १६ हैं। लिखावट संख्या १८ मध्यम आकार के सुडौल अक्षरों की बनी है, रिक्त स्थान सम हैं पंक्तियां सीधी हैं मात्राएं भी उचित एवं समाकार की हैं।

सम्पूर्ण लिखावट एक सुसयमित चित्र के समान प्रभावशाली एवं आकर्षक है। यह लिखावट लिखने वाले व्यक्ति में सहज सावधानी यथाक्रम रचनात्मक क्रियाशीलता स्पष्टता मानसिक एवं भावात्मक संतुलन विवेक आत्मीयता के सद्गुण व्यक्त करती है। यह व्यक्ति अपने व्यावहारिक आचरण में गम्भीरता लगन स्वावलम्ब शांत एवं स्थिर प्रकृति उद्योग और अच्छे सांस्कृतिक संस्कार प्रदर्शित करता है। इसकी मधुर मानवीय सुशीलता में हीनता की भावना नहीं है। इसकी सादगी में आत्म प्रदर्शन का निजी प्रशंसा का आडम्बर भी नहीं है। यह लिखावट लिखने वाले व्यक्ति के सुन्दर अन्तर्मन का वास्तविक हृदयग्राही प्रतिबिम्ब है जैसा शुद्ध मन अन्दर है वैसा ही उसका व्यावहारिक आचरण है।

श्री प्रफुल्ल कुमार चटर्जी की लिखावट बड़े आकार की है। इस लिखावट में स्वाभाविक मानवीयता आत्मीयता प्रेरक-शक्ति सुन्दर कला प्रेम तथा उदारता स्पष्ट है। नियम-पालन आत्म-संयम आत्मविश्वास अनुशासन आदर्श प्रेम के सद्गुण प्रसारित हैं यह व्यक्तित्व बुद्धिबल भावबल तथा आत्मबल में समानत महान् सुसयोजित एवं विकसित है क्रियाशीलता बहुमुखी होते हुए भी सुव्यस्थित है तथा विवेक के आवरण से नियमित है। एक साथ ही अनेक कार्यों को सफलता से पूरा करते रहने की क्षमता आपमें स्वाभाविक है। कोमल, भावुक दयावान् आत्मीयता के अनेक लक्षण इस लिखावट में मिलते हैं इनका हृदय सहज ही पिघल उठता है तथा किसी भी व्यक्ति की सहायता करने के लिए यह तत्पर है। साथ ही इस लिखावट में सफलता के अनेक लक्षण मिलते हैं। नियम-पालन तथा अपने आदर्श को ऊंचा उठाए रखने में य पूर्णतया समर्थ हैं। संसार की कोई भी माया इनको प्रभावित नहीं कर सकता यदि उसमें विवेक नैतिकता तथा उच्च मानव आदर्श की किसी प्रकार से भी कोई कमी है। इस लिखावट की स्पष्टता इस लिखावट की सुन्दरता बल तथा गति सराहनीय है। यह शारीरिक अवस्था से ऊपर है। सत्तर वर्ष से अधिक आयु होने पर भी आपकी लगन में दृढ़ता है। आजकल इससे बहुत कम आयु में ही लिखने वाले व्यक्तियों के हाथ काँपते तथा लिखना बाधित लगते हैं। यह अन्तरिक निर्बलता के लक्षण लगते हैं।

ऊपर दिये गए ये दोनों उदाहरण ऐसे व्यक्तित्व प्रदर्शित करते हैं जो जीवन की प्रत्येक स्थिति को शान्त भाव से ग्रहण कर सकते हैं। इनका मन विकसित नहीं

होता आन्तरिक द्वन्द्व इनको प्रभावित नहीं करता। ये अपना आदर्श मार्ग जानते हैं तथा उसका अनुसरण करते रहने की आन्तरिक शक्ति रखते हैं। इनका आचरण सदा ही शिष्ट एवं न्यायसंगत रहता है। मानसिकता जागृत है, भावना सजग है, आत्मविश्वास प्रगति एवं शक्ति प्रदर्शित करता है। इनकी प्रवृत्ति ऐसी किसी भी क्रिया में संलग्न है जिसमें कितना भी अध्यवसाय, परिश्रम, त्याग तथा उदार सामाजिक सहयोग की आवश्यकताएं हों परन्तु नैतिक आदर्श सर्वोच्च हो। ऐसे व्यक्ति समाज में आदर्श व्यक्तित्व के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तथा अन्य अनेकानेक व्यक्तियों को सुसंयमित, सुनियोजित, सुसास्कृतिक मार्गदर्शन करते हैं।

नाना लिखावटों में व्यक्तिगत विभिन्नता है। पहली लिखावट अन्तर्मुखी और दूसरी लिखावट बहिर्मुखी प्रवृत्ति प्रकट करती है।

लिखावट संख्या २० के अनेक उदाहरण हमें मिलते हैं। अधिकांश लिखावटें इस प्रकार के निर्जीव, निर्बल, द्वन्द्वयुक्त व्यक्तित्व हमारे सामने लाती हुई रहती हैं। व्यक्तियों में बौद्धिक एवं भावात्मक स्पन्दन, इच्छाशक्ति कितनी भी प्रबल हो परन्तु यदि यह सुसंयोजित तथा सुनियमित नहीं हो तो सार्थक नहीं है। यह किसी एक विचारधारा को लगन से अनुसरण करने में असमर्थ है। मानसिक उथल-पुथल मची ही रहती है और इसके कारण अपने चित्त को स्थिर कर सकना असम्भव हो जाता है। ऐसे व्यक्ति की विचारधारा में नवीनता भले ही हो, वह परिवर्तित होती रहती है तथा उसके विचार बदलते ही रहते हैं। उनमें दृढ़ता का आभास नहीं मिलता। अपने जीवन-काल में हम अनेकानेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं। कोई व्यक्ति ऐसे उच्च स्थान पर होते हैं जिनसे हम सहज ही प्रभावित हो जाते हैं, परन्तु जब हम उनके जीवन की व्यवस्था को कुछ निकट आकर देखते हैं तो हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। इनके आचरण में किसी भी प्रकार के नियम तथा विवेक की छाया दिखाई नहीं देती। उनमें ततत्व विश्वास उत्पन्न नहीं होता। इसके विपरीत अनेक साधारण मनुष्यों में असाधारण आत्मिक शक्ति के उदाहरण प्राप्त होते हैं जो साधारण जीवन-यापन करते हुए भी ऊँचे व्यक्तित्व का प्रदर्शन करते हैं। इनका व्यक्तित्व अच्छे आदर्शों पर आधारित है। इनका चरित्र आदरणीय है। इस प्रकार का अध्ययन लिखावटों के उदाहरणों से सहज ही हो जाता है।

ऊपर दिए गए तथ्यों तथा उदाहरणों से हमने देखा कि लिखावट लिखना एक निश्चित सार्थक कार्य है। लेखनी को चलाना उद्देश्यहीन नहीं है कि लिखने वाला व्यक्ति लिखते समय मनचाहा हाथ चलाता जाए। लिखने वाले व्यक्ति को एक निश्चित पाण्डुलिपि बनानी पड़ती है। इस कार्य में उसे जो मानसिक, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक बाधाएं आती हैं जिनसे लिखने के लक्ष्य में बाधा होती है, शान्त भाव से सहन करनी पड़ती हैं और उनको पार करते हुए स्पष्ट, शुद्ध और

स्थिर लिखावट लिखनी पडती है। यह क्रिया लिखने का काय प्रारम्भ करने से उसके अन्त तक चलती रहती है। इससे पता चलता है कि लिखने की क्रिया एक निश्चित काय है और इससे पता चलता है कि लेखक इस काय को किस प्रकार सम्पन्न करता है। इससे यह भी पता चलेगा कि उसकी नतिक शिक्षा का स्तर कसा है उसकी स्मरण शक्ति अक्षरा के आकार के ज्ञान के विषय म कसी है उसकी चतुरता स्फूर्ति जीवन शक्ति सयम शक्ति रुचि रुझान आदि लक्षणा का स्तर कसा है।

लिखावट का आशय अक्षरो की पुनरचना स भी है। लिखावट के अक्षरा का आकार एव मान पूवनिर्धारित है। लिखने वाला व्यक्ति इन पूवनिर्धारित आकारा को कुछ परिवतन के साथ बनाता है। य परिवतन दो प्रकार क हैं और स्वत अन्तमन द्वारा प्रकट होते हैं। अक्षरा की कुछ रेखाओ तथा अय चिह्नो को छोड जाना जिनको वह व्यक्ति आवश्यक नही समझता अथवा जो उसके लिए लिखने की क्रिया म कठिन हैं बाधक है। और दूसरे अक्षरो की कुछ रेखाओ तथा अय चिह्नों को अतिरिक्त जोड देना अथवा उनकी आकृति अपनी रुझान के अनुसार बदल देना जिसे वह आवश्यक समझता है अथवा जो उसके लिए लिखने मे सहज हैं।

इस दृष्टिकोण से हस्तलिपि लिखने वाले व्यक्ति के अन्तमन की स्वाभाविक रुझान प्रदर्शित करती है। इससे व्यक्त होता है कि वह किस आचरण को पसद करता है और किस व्यवहार को पसन्द नहीं करता।

कुछ अक्षरा की ऐसी आकृतियो को अपनाता है जो अय व्यक्ति लिखते हैं और वह व्यक्ति यह व्यक्त करता है कि उनके आचरण वह अपनाता है।

अक्षरा क आकार परिवर्तित करने म लखनी को इस प्रकार से निजी रुचि से चलाना काफी मात्रा म बढ सकता है। उदाहरण क लिए कह सकत हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी चित्रकार स प्रभावित है तो वह अपने अक्षर भी चित्रकारी के समान बनान म तथा उनकी रचना चित्रवत् करन म अपनी शक्ति का प्रयोग करेगा। इन चित्रा म उसके अन्तमन की छाया निहित होगी।

यदि किसी कारणवश लिखन वाले व्यक्ति क चित्त स काय उचित रूप से करन का लक्ष्य मिट जाए तो लिखावट म एकाग्रता सयम स्थिरता दृढता शिष्टता का अन्त हो जाएगा और लिखावट एसा बनगी जिसको लिखावट कह सकना ही कठिन होगा। कच्चे-सा लिखावटें जो कि वास्तव म उलझी हुई-सी रखाए हैं प्रतिदिन दृष्टिगोचर होती हैं।

वज्ञानिक विचारकों न इस विषय पर कुछ प्रयोग भी किए हैं।

जस कि किसी समय आप शान्त चित्त म एकाग्र होकर अपन विचारा को

सुलझाने हुए लिखने के लिए बठने हैं तो आपकी लिखावट शुद्ध स्पष्ट और सौम्य बनती है।

किसी दूसरे अवसर पर जब आपकी मानसिक परिस्थिति म उद्विग्नता होती है भावो में द्वन्द्व होता है लिखने बठने हैं तो आपकी लिखावट उतनी शुद्ध स्पष्ट और सौम्य नही बनती।

अथवा जब आप अपनी सहज लिखावट किसी अन्य कारण स बदलती हुई पाते हैं तो आपको तुरन्त आगाह हो जाना आवश्यक है।

लिखावट की परिस्थिति लेखक के अन्तमन की छाया है जोकि सामयिक आचरण से प्रभावित एव व्यक्त होती रहती है। अत अपनी लिखावट को स्थिर करने के लिए मन को भी शान्त करना आवश्यक होता है। ये दोना काय एक साथ होते हैं। एक सहज प्रयोग इसके लिए है कि रोमन लिपि में बडे (कपिटल) अक्षरो म तथा देवनागरी लिपि में बडे आकार के अक्षरा म लिखना प्रारम्भ कीजिए। यह क्रिया जल्दी म नही होनी चाहिए। जहाँ तक हो सके अक्षर स्पष्ट पूरे, शुद्ध और अलग-अलग लिखे जाने चाहिए। इस तरह से सावधानी से लिखने स थोडी ही देर में चित्त शान्त हो जाएगा विचार सुलझ जाएगे और लिखावट की आकृति एव आकार अपने निजी वास्तविक रूप म आ जाएँगे।

इस प्रयोग का आशय मानसिक गति पर अवरोध लगाना है तथा अव्यवस्थित स्नायुतत्र को स्थिर करना है जिससे मन हाथ और लेखनी सामान्य रूप से काम कर सकें।

जो बालक लिखना सीख गए हैं और नित्य ही लिखते रहते हैं फिर भी उनकी लिखावटें अशुद्ध अस्पष्ट अस्थिर तथा भद्दा दिखाई देता है व हमारे आकषण के विशेष केन्द्र होने चाहिए। इन बालको के चरित्र निर्माण म कोई ऐसी निबलता रह गई है जिसस उनके व्यावहारिक स्वभाव म सन्तुलन नहा आया है। अभी इन बालको को जीवन के प्रारम्भिक तत्त्वो का ज्ञान प्राप्त नही हो सका है। अभी ये बालक यह नही निश्चित कर पाए हैं कि आचरण कसा शुद्ध होना चाहिए। आचरण म सौम्यता सपूणता एव सामजस्य होना चाहिए एसा ये बालक जानते ही नही हैं। अथवा यह कहा जाए कि वे जानते हुए भी उचित शली अपनाने में असमथ हैं। हो सकता है कि इसके कोई शारीरिक मानसिक तथा भावनात्मक कारण हो। अथवा यह कहा जाए कि य बालक उचित एव अनुचित परिस्थिति से परिचित होते हुए भी उचित आचरण की अवहेलना करते हैं। इसका कारण उनकी लापरवाही, मिथ्याभिमान उद्दण्डता तथा समाज क साधारण एव आवश्यक नियमों से असहयाग आदि विभिन्न लक्षण हो सकते हैं।

अमुक बालक किस मानसिक शारीरिक तथा भावात्मक कारण से अशुद्ध

अस्पष्ट अस्थिर तथा भद्दा लिखता है इसका पता उसकी लिखावट के विस्तृत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से चलेगा।

शारीरिक निर्बलता—शारीरिक निर्बलता जिसका प्रभाव लिखावट पर पड़ता है हस्तलिपि विज्ञान के विश्लेषण से ज्ञात नहीं होती। संकेत प्राप्त होता है। अतः यह आवश्यक होता है कि ऐसा लिखनेवाले बालकों की स्वास्थ्य परीक्षा की जाए। हो सकता है कि ऐसे बालकों की उंगलियां कमजोर हों खण्डित हों टेढ़ी हों उनकी कलाई में कोई कमजोरी हो। स्नायुतन्त्र दृढ़ न हो तथा उसमें कम्पन हो दृष्टि स्वस्थ न हो रीढ़ की हड्डी में कोई निर्बलता हो। इन बातों का पता डाक्टरी जांच से ही चल सकता है।

निकट सम्बन्ध होने से लिखावट द्वारा संकेत मिलने से अध्यापक इस प्रकार की परिस्थिति का पता चला सकता है। इस प्रकार के संकेत की गहरी छान बीन पाठशाला में स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा की जा सकती है। सही निदान हो जाने से बालक के उचित उपचार का प्रबन्ध किया जा सकता है। कठिनाई का पता चल जाना ही बड़ी बात है। फिर तो बालक के माता पिता अभिभावक आदि भी सावधानी से बालक के स्वास्थ्य की चिन्ता कर सकते हैं।

यदि ऐसा ध्यान नहीं दिया जाएगा तो बालक अपनी शारीरिक निर्बलता से ग्रसित रहते हुए किसी-न किसी तरह अपना काम चलाते रहने का प्रयास करता रहेगा और आगे चलकर अपने स्वास्थ्य की परिस्थिति और भी कठिन सम्भवतः अधिक जटिल बना लेगा जो कि बाद में अच्छे से अच्छे उपचार से भी ठीक नहीं की जा सकेगी।

फिर भी यह देखा गया है कि अभ्यास से तथा उचित निर्देशन से शारीरिक कमजोरी वाले व्यक्ति भी अपनी कमजोरी पर अधिकार पा लेते हैं। ऐसे व्यक्ति जिनकी उंगलियां किसी अनहोनी घटना से टेढ़ी हो गई हैं शुद्ध एवं स्पष्ट लिखावट लिखते हैं, क्योंकि उनके चरित्र में आत्मबल की मात्रा कहीं अधिक है। जब एक व्यक्ति इच्छा करता है और उसको प्राप्त करने का प्रयास भी करता है तो उसकी प्रबल इच्छा शक्ति ही उसकी सफलता का कारण होती है।

लोग अपना किसी भी छोटी-से छोटी बात को बढ़ाकर अपना उत्तरदायित्व न निभाने का बहाना निकाल लेते हैं। यह केवल उनके व्यक्तिगत चरित्र की कमजोरी है। मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं? ऐसा कैसे हो सकता है? इसमें अच्छा मैं किसी प्रकार से नहीं बना सकता आदि अनेक प्रकार के उत्तर जो कि लोगों से मिलते हैं नकारात्मक इच्छा शक्ति के प्रतीक होते हैं। ये ऐसे लोग हैं जो अपनी निर्बल इच्छा शक्ति को छिपाने के लिए चालाकी कामचोरी उद्दण्डता अभद्रता मिथ्याभाषण आदि के अनेक आचरणों का प्रयोग करते हैं। जानते हुए भी अपने स्वभाव में अधिक अच्छाई पैदा नहीं करना चाहते। यह प्रवृत्ति बालकपन

से ही उपयुक्त अभ्यास एवं निर्देशन के अभाव के कारण बनता है। यदि बाल्या वस्था में उनकी लिखावट की नहीं जाँच हो जाए तथा उनका उचित उपचार हो जाए तो बहुत सम्भव है कि उनका युवावस्था का आचरण अधिक शुद्ध, निर्दोष स्पष्ट तथा आकर्षक हो जाएगा।

बालकों के लिए दिए गए ये विचार एवं प्रयोग युवा नव शिक्षितों के लिए भी उपयुक्त हैं।

भावुक विषमता—लिखावट में अशुद्ध अस्पष्ट अस्थिर तथा भद्दी बनावट का दूसरा कारण व्यक्ति की भावुकता का प्रभाव है। ऐसा देखा गया है कि लोगों के स्वभाव में भावुकता का चढ़ाव उतार इतना अधिक होता है कि उसको किसी प्रकार से नियन्त्रित कर सकना असम्भव होता है। इन व्यक्तियों में से कुछ ऐसे होते हैं जो कि अपने आचरण में अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करते हैं। जैसे कि ऊँचे स्वर से बोलना साधारण बातचीत में भी ऐसा मालूम हो कि बोलने वाला चिल्ला रहा है अथवा जल्दी-जल्दी बोलना, दूसरे व्यक्ति की समझ में कुछ आए या न आए कहने वाले भी अपनी बात पूरी तरह से कह सकें या न कह सकें। एक व्यक्ति समझते हैं कि जो कुछ भी जैसा भी वे बोल रहे हैं सुनने वाले ने अवश्य ही ग्रहण कर लिया है। इनमें दूसरे व्यक्तियों के विचार सुनने का धैर्य नहीं होता। समाज में ऐसे व्यक्ति प्रायः मिलते हैं। ये व्यक्ति अपनी कहना जानते हैं सुनना नहीं जानते। इनकी लिखावट में कलम के दबाव का उतार-चढ़ाव रेखाओं की लम्बी कड़ी, तथा छोटी टाँगें बहुत-से रंगों का प्रयोग आदि प्रमुख होता है। लिखावट अस्पष्ट अस्थिर होती है जिसको शुद्ध रूप से पढ़ पाना कठिन होता है।

दूसरे भावुक व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका उत्साह शीघ्र ही ठंडा पड़ जाता है। किसी अन्य परिस्थिति में इनकी भावुकता का प्रभाव भी कम हो जाता है।

इस प्रकार की भावनाजन्य प्रवृत्ति में गति है अथवा गति की विहीनता है भागते हुए अक्षर एवं अधकटे अक्षर इन व्यक्तियों की सहज पहचान हैं।

भावुकता की चंचलता को स्थिर करने के लिए स्थिर सुलेख का अभ्यास उपयोगी है। किसी भी परिस्थिति के कारण जो व्यक्ति आवेश में आ जाते हैं और मानसिक सतुलन खो बैठते हैं उनके लिए सुलेख का प्रयोग बहुत ही हितकर है। ऐसी परिस्थिति में पुनः मानसिक सतुलन प्राप्त करने के लिए, धीरे धीरे और बड़े आकार के अक्षर लिखना प्रारम्भ करना चाहिए। इस तरह से दो चार पंक्तियाँ लिखने में ध्यान एकाग्र हो जाता है।

मानसिक उथल-पुथल—तीसरी परिस्थिति मानसिक अस्थिरता है। जिस समय किसी प्रकार की उलझन दिमाग में होती है उस समय प्रयत्न करने पर भी किसी काम में मन नहीं लगता। प्रयत्न करने पर भी इसमें सफलता नहीं मिलती। किसी भी प्रकार की संयोजक उपज दिमाग से नहीं होती। ऐसी हालत

मे भी लिखावट अस्थिर रहती है तथा अस्थिर लिखावट से जिसमे कि अक्षरो के आकार तथा उनके झुकाव अनेक प्रकार के होते हैं मानसिक अस्थिरता प्रदर्शित होती है। वास्तव म यह मानसिक शिथिलता का उदाहरण है। अपनी नसर्गिक शक्ति का ऐसा प्रदशन होने देना एक बडी निबलता है। समझदार लोग अपने नित्य के सहज व्यवहार मे इस प्रकार का असगत आचरण प्रदर्शित नही होने देते क्योकि वे जानते है कि इस प्रकार के आचरण से वे केवल अपनी कमज़ोरियो को दूसरे व्यक्तियो के सामने प्रदर्शित कर देंगे। वे जानते हैं कि ऐसे आचरण से उनके चरित्र मे व्यक्तित्व मे कमी होने लगेगी। अस्तु ऐसी मानसिक अवस्था के अवसर पर बुद्धिमान व्यक्ति धय का उपयोग करके अपना सतुलन प्राप्त कर लेते हैं तथा पुन अपने निर्दिष्ट काय म अग्रसर हो जाते हैं।

हस्तलिपि के विषय म राष्ट्रपिता महात्मा गाधी का कथन महत्त्वपूण है। यह बहुत ही व्यक्तिगत सरल एव स्पष्ट होते हुए भी सारगर्भित है।

> मेरी समझ मे यह आया कि बुरी लिखावट अधूरी शिक्षा का चिह्न है। बाद मे मैंने अपनी लिखावट सुधारने का प्रयत्न किया परन्तु (इस अभ्यास का) सुअवसर बहुत पीछे निकल चुका था। मैं अपनी युवावस्था की इस भूल को कभी सुधार नही सका। हर युवक तथा नवयुवती को मेरा उदाहरण लेकर सतक हो जाना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि अच्छी लिखावट शिक्षा का आवश्यक अग है

इस लेख स यह स्वत सिद्ध है कि व्यावहारिक जीवन म सफलता प्राप्त करने के लिए लिखावट जस साधारण आचरण म भी सतकता अपनाना विशेष महत्त्व रखता ह। लिखना एक निश्चित क्रिया ह जिसमे किसी भी मानवीय क्रिया के प्राय पूण तत्त्व निहित हैं और इस काय को सफलतापूवक करना आवश्यक ह। इसम उपयोग होने वाली सम्पूण शक्तियाँ सही होनी चाहिए और उनका सही प्रयोग होना चाहिए।

लिखावट का मनोविज्ञान

अभी तक हमने यह देखने का प्रयास किया है कि हस्तलिपि क्या है? लेखनी स्वच्छन्द गति से आचरण करता है, लिखावट सुव्यवस्थित है स्थिर है, परिपक्व है, सौष्ठवपूर्ण है अथवा उपेक्षित है आदि। लिखावट में प्रयोग होने वाले ऐसे अनेक सक्रिय सचेष्ट अथवा निष्क्रिय निश्चेष्ट लक्षणों का विवेचन किया जा चुका है। हमने यह भी देख लिया है कि मनोविज्ञान के आधार पर लिखावट का व्यक्तित्व से सीधा सम्बन्ध है तथापि सम्पूर्ण व्यक्तिगत शक्तियों का प्रवृत्तियों का भाव नाओं का तथा अन्य विविध स्वाभाविक गुणों का भी लिखावट से सीधा सम्बन्ध है। जब हम किसी भी लिखावट के मौलिक उदाहरण पर दृष्टिपात करते हैं तो हमारे मन में तुरन्त एक प्रश्न उठता है कि यह व्यक्ति ऐसी लिखावट लिखता है तो क्या लिखता है। इस व्यक्ति ने इस प्रकार की लिखावट अपनाई है तो क्या? इस मौलिकता से इसका क्या सम्बन्ध है? क्या विशेषता है इस शैली में जिसने इसके लिखने वाले को इतना आकर्षित किया है? इन प्रश्नों की तह में जाने से हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके चरित्र के अवलोकन का अवसर प्राप्त होता है। प्रत्येक लिखावट विभिन्न है।

यह व्यक्ति-परिचय वास्तविक सत्य और निष्पक्ष होता है, क्योंकि इस चरित्र प्रणाली में किसी भी प्रकार की छिपावट नहीं होती। धोखा होने की भी सम्भावना नहीं है। वास्तव में यह प्रणाली सम्मुख व्यक्तिगत परिचय से अधिक महत्वपूर्ण है। लोग बातें बनाना जानते हैं, अपनी भावना को छिपाना भी जानते हैं। बहुधा चतुर व्यक्ति अपने विषय में जैसा व्यक्त करना चाहते हैं वैसा ही बना भी देते हैं।

उनकी वास्तविकता को समझना सहज नहीं होता। मन में कुछ और है, कहते कुछ और हैं। ऐसे व्यक्ति प्राय मिलते हैं। परन्तु लिखावट में ऐसी कोई बात नहीं। लिखावट अपने वास्तविक रूप में ही प्रस्तुत होती है। फिर लिखावट की

कितनी ही बार हस्तलिपि विज्ञान के मूलतत्वों के आधार पर परीक्षा की जा सकती है। और इसमें जो निष्कर्ष निकलेगा वह वैज्ञानिक प्रमाणयुक्त होगा न कि केवल व्यक्तिगत समझ के आधार पर आधारित एवं प्रत्येक परीक्षा में वही एक विश्लेषण प्राप्त होगा एक समान निष्कर्ष प्राप्त होता रहेगा।

दूसरी बात यह है कि व्यक्तिगत प्रभाव भी अनेक होते हैं। जितने अधिक व्यक्तियों से आप मिलेंगे उतने ही अधिक प्रकार की धारणाएं आपके विषय में बनेंगी। यदि इन अनेकानेक धारणाओं का संचय किया जाए तो जो चित्र बनेगा उसको पहचानना असम्भव होगा। कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी भी दूसरे व्यक्ति को अपने निजी दृष्टिकोण अपनी निजी प्रवृत्ति तथा शक्ति के अनुसार देखता है। अतः उसकी आपके विषय में धारणा अपना निजी होती है। और यह धारणा जो कि वास्तव में आपके व्यक्तित्व का अंकन है वह दूसरे किसी भी व्यक्ति के समान अंकन से भिन्न होगी।

लिखावट का चित्र एक सा रहता है। कोई भी व्यक्ति उसे देखे और किसी भी समय देखे एक बार चित्रित कर दी गई लिखावट अमिट रहती है। कोई भी व्यक्ति उसे देखे उसकी धारणा समान ही रहेगी और उस लिखावट के मनोवैज्ञानिक अंकन के प्रयोग में हस्तलिपि विज्ञान के मूलतत्व समान रूप से प्रयोग में आएँगे।

लोग कहते हैं कि वे अपनी लिखावट बदल सकते हैं और समय-समय पर उसे बदलते भी रहते हैं। ऐसा वे जब चाहे कर सकते हैं। ऐसा लोगों का कथन रहता है। परन्तु इस कथन से ये व्यक्ति भले ही अपने आपको समझा लें अपने मन में सन्तोष कर लें परन्तु सत्य यह है कि ऐसा करके और कहकर वे अपने व्यक्तित्व को और अधिक प्रत्यक्ष प्रदर्शित कर देते हैं।

कारण क्या है?

लिखावट लिखने वाले व्यक्ति के अन्तर्मन की छाया का रूप है। यह उसकी सम्पूर्ण आन्तरिक शक्तियों से निर्मित होती है और सामयिक चिन्तन एवं भावना से प्रभावित होती रहती है। जिन व्यक्तियों की लिखावटें स्वभाव से बदलती रहती हैं वे अस्थिर चित्त होते हैं और निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि उनमें दृढ़ संकल्प शक्ति तथा निर्णय करने की शक्ति का अभाव रहता है। बच्चों की लिखावट में यह लक्षण सहज है क्योंकि वे स्वभाव से ही चंचल होते हैं। परन्तु वयस्कों की लिखावट में जैसे कि उनसे व्यक्तिगत आचरण में आशा की जाती है बच्चे से अधिक गम्भीरता स्थिरता दृढ़ता होना ही चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो कहना ही पड़ेगा कि उनका बदलती हुई लिखावट के लक्षण से उनके व्यक्तित्व की अस्थिरता प्रकट होता है।

जो लोग प्रयास करके अपनी लिखावट बदलते हैं अथवा बदलते रहते हैं वे

समय-समय पर असंयमी-से हो जाते हैं क्योंकि वे बहुरूपिए की तरह आचरण करते हैं। कभी कुछ कभी कुछ। जो वास्तविकता है उसको नकारा करते हैं। ऐसे व्यक्ति हीन भाव के शिकार रहते हैं और अपने विविध आचरणों में अपने व्यक्तित्व की हीनताओं को प्रदर्शित करते रहते हैं। यद्यपि स्वयं उनको इस बात का आभास नहीं होता और यदि उनका ध्यान इस ओर आकर्षित करने का प्रयास किया भी जाए तो उनको ऐसी भावना अथवा परिस्थिति का विश्वास नहीं होता।

लिखावट के बदलते रहने के उदाहरण बहुधा हस्ताक्षरों की बनावट में मिलते हैं। हस्ताक्षर एक स्थिर नमूने की तरह बनाया जाता है। सहज स्वभाव के लोग अपना साधारण नाम स्पष्ट लिखते हैं। इससे स्पष्ट व्यक्त हो जाता है कि अमुक हस्ताक्षर किस व्यक्ति का है। उस व्यक्ति का नाम स्पष्ट भाषा में अक्षरशः पढ़ लिया जाता है। ऐसे स्पष्ट उदाहरण हम पण्डित जवाहरलाल नेहरू, श्री सुभाष चन्द्र बोस, सरदार पटेल आदि के हस्ताक्षरों में मिलते हैं। परन्तु बहुत-से लोग अपने हस्ताक्षर ऐसी रेखाओं में बनाते हैं जिनको सुलझाना दुर्गम कार्य होता है। यह पता ही नहीं चलता कि क्या लिखा है। लिखने वाला स्वयं ही अपना उत्तरदायित्व मिटा देता है। ऐसी शंकायुक्त परिस्थिति में केवल असत्य धारणा देने की प्रवृत्ति, दूसरे व्यक्तियों को मात देना, अपने निर्धारित संकल्प से विचलित हो जाना, नियमानुवर्तिता का अभाव आदि हीन धारणाओं की कल्पना हो सकती है।

जिनके अपने बनाए हुए हस्ताक्षरों में परिवर्तन होता रहता है उन्हें अपनी कठिनाई का आभास पोस्ट आफिस एवं बैंकों में होता है क्योंकि वहाँ यदि आपके हस्ताक्षर आपके पूर्व-परिचित हस्ताक्षर से किंचित भी नहीं मिलते तो आपका विश्वास कदापि नहीं किया जाएगा।

लेखन की क्रिया में परिवर्तनशीलता से वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त होता है। जो सदैव एक स्थिर एवं दृढ़ प्रकार का आचरण करते हैं उनके मन की उथल-पुथल व्यक्त नहीं होती। उनमें कौन-से विशेष गुण एवं अवगुण छिपे हुए हैं वे पता नहीं चलते। जब वहाँ से परिवर्तन होता है तो प्रकाश मिलता है और दिखाई पड़ता है कि मामला क्या है। अतः जो व्यक्ति अपनी परिवर्तनशीलता की शेखी मारते हैं और इसको अपनी सामर्थ्य शक्ति बताते हैं वे अपने-आपको एक साधारण व्यक्ति से अधिक व्यक्त करते हैं और ऐसे व्यक्तियों के चरित्र निर्धारण करने में सुगमता मिलती है।

इस प्रकार के विवेचन एवं उदाहरण द्वारा हमने पिछले पृष्ठों में हस्तलिपि विज्ञान के अनेक पहलू तथ्यों का विश्लेषण किया है। जैसे कि—

लिखावट के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है।

उदाहरणों से विदित होगा कि लिखावटों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से किसी आश्चर्यजनक उद्‌घाटन प्रदान का प्रयास नहीं किया गया है और हस्तलिपि विज्ञान में इस प्रकार के विवेकहीन प्रयास की कल्पना भी नहीं है। हस्तलिपि विज्ञान गुप्त भेदों के प्रत्यक्षीकरण की विधि नहीं है। और यह ऐसी कुंजी भी नहीं है जिससे कि लिखने वाले व्यक्ति के अन्तर्मन के सब ताले खोले जा सकें और सम्पूर्ण अप्रत्यक्ष बातों को प्रत्यक्ष कर दिया जा सके। हाँ इतना अवश्य है कि लिखावट के विधिवत् निरीक्षण उसके लक्षणों के वर्गीकरण एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से व्यक्तिगत चरित्र का एक मोटा ढांचा तैयार हो जाता है। इससे हम मनुष्य की वास्तविकता को पहचान पाते हैं। यह ऐसा साधन मिल जाता है जिससे मानवीयता के विविध उदाहरण प्रत्यक्ष होते हैं। इसके वैज्ञानिक प्रयोग किये जा सकते हैं। मनुष्य को अच्छी तरह से और निकट रूप से समझा जा सकता है जिससे उसको सामाजिक और व्यावहारिक परिस्थिति में उचित स्थान एवं महत्व दिया जा सकना सम्भव हो जाता है।

इस अभ्यास को सुगम और क्रमबद्ध बनाने के लिए लिखावट के विविध चिह्नों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। हस्तलिपि विज्ञान के विशेषज्ञों ने इस विषय में अनेकानेक प्रयोग किये हैं तथा उनको अपने अनुभवों सहित विस्तारपूर्वक लिखा है। ये सब प्रयोग यूरोपीय देशों में हुए हैं और विशेषकर रोमन लिपि पर ही हुए हैं।

मैंने अपना प्रारम्भिक ज्ञान भी इन विद्वानों के कथनानुसार प्राप्त किया है। तदनुसार प्राप्त तथ्य रोमन लिपि पर आधारित हैं। इन तथ्यों को मैंने भारतीय लिपियों पर जैसे कि देवनागरी लिपि बंगला मराठी गुजराती में लिखी जाने वाली भाषों पर अपनाने का प्रयास किया है। जितना इसमें प्रमाणित हो सका उतना मैं हिन्दी-पाठकों की सूचना के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ। ये मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हस्तलिपियों के आधारभूत तत्वों की सही पहचान एवं उनके मनोवैज्ञानिक संकेतों को यथोचित समझने में सहायक होंगे।

लिखावट के जाति-सम्बन्धी प्रतिरूप

१ लिखावट का स्थायी रूप—लिखावट के स्थायी रूप से आशय उन लिखावटों से है जैसा कि लिखना सीखने की पुस्तिकाओं में लिखा रहता है। लिखने के अभ्यास-काल में बालक इन पुस्तिकाओं में सीखते हैं तथा उन लिखे हुए अक्षरों तथा शब्द लिखने की शैली का अनुसरण करते हैं। यह लिखावट किसी भी लिपि में होता है। ये आदर्श अक्षर हैं।

जब लिखने वाला व्यक्ति अपना स्वच्छन्द लिखावट में लिखने के नियमानुसार लिखता है और मन जैसा हो लिखता चला जाता है तो उससे हम यह

समझते हैं कि यह व्यक्ति अपने आचार-व्यवहार में भी क्रमबद्ध है अपना ध्यान एकाग्र कर सकता है नियम पालन कर सकता है धर्यवान है रीतिनियम मानता है तथा नियमानुसार चलने वाला है।

अपने दैनिक आचरण में यह व्यक्ति सावधान है, उतना ही क्रियाशील है जितनी कि उसको नियम पालन करने की आवश्यकता है। ऐसे व्यक्ति अपने से बड़ों का आदर करते हैं। आज्ञाकारी हैं परिपाटी पर चलने वाले हैं इनके व्यवहार में यथेष्ट शिष्टाचार है तथा व्यवहार के प्रत्येक छोटे से छोटे आचरण पर ध्यान देते हैं। यदि ऐसा न हो तो लिखावट के छोटे-से छोटे चिह्न का यथोचित अनुगमन किस प्रकार से कर सकेंगे।

ऐसे व्यक्तियों में कल्पना नवीनता कलात्मकता भावुकता आदि स्वच्छन्द लक्षणों की स्वतन्त्रता कम प्रदर्शित होती है। ये व्यक्ति अपनी वास्तविक भावना व्यक्त करना नहीं चाहते यदि वे नियमानुसार आचरण के विरुद्ध हैं। ये सिद्धान्तवादी अधिक हैं क्रियाशील कम।

वास्तव में ऐसी लिखावटों के उदाहरण बहुत कम मिलते हैं क्योंकि इसमें व्यक्ति की भावना मौलिकता पर अवरोध रहता है। और जिन व्यक्तियों में आन्तरिक जीवन शक्ति का संचार अधिक है और जो अपने मौलिक विचार को व्यक्त करने के लिए अधीर रहते हैं इतनी सावधानी तथा नियम निष्ठा का पालन नहीं कर सकते। उनकी मौलिकता यथेष्ट नियम पालन के विरुद्ध विद्रोह करता है और जैसे कि परस्पर आचरण में लिखावट में भी अपना निजी रूप प्रस्तुत कर देती है।

लिखना सीखने के प्रारम्भ में यह प्रयोग और अभ्यास आवश्यक है कि बालक इस तरह की लिखावट का नियमित अभ्यास अवश्य करें। इससे क्रमयुक्त विचार नियम-पालन एकाग्रता चंचलता पर अवरोध स्पष्टता शालभाव रचना का प्रवृत्ति आदि लक्षणों का अभ्यास हो जाता है। यह एक प्रारम्भिक प्रशिक्षण का माना हुआ आधार है।

(२) सावधानी से बने सुन्दर अक्षर—इसमें दो शब्द आवश्यक हैं सावधानी और सुन्दरता। नियम-पालन इसका आधार है परन्तु इस श्रेणी में लेखक इस परिधि से आगे बढ़ता है और सावधानी का प्रयोग करते हुए लिखावट में कलात्मक सुन्दरता प्रदर्शित करने का प्रयास करता है। लिखावट की सहज सुन्दरता सुव्यवस्थित अक्षरों की रचना से प्रदर्शित होती है। इसमें रचना की प्रवृत्ति नियम पालन की वृत्ति से आगे है। जो व्यक्ति इस प्रकार की लिखावट लिखते हैं उनमें विचारशीलता की मात्रा अधिक होती है अपना ध्यान एकाग्र कर सकते हैं आचरण में सांस्कृतिक विकास व्यक्त होता है। जो कुछ भी करते हैं अच्छी तरह से करना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति सुखाशावादी होते हैं प्रसन्नचित्त रहते हैं अपने

तथा अन्य व्यक्तियों के सांस्कृतिक अच्छे संस्कारों में विश्वास करते हैं। इन व्यक्तियों में आत्मविश्वास, स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्णय की क्षमता होती है।

(३) सज्जित लिखावटें—कुछ लिखावटें ऐसी भी देखने में आती हैं जिनमें देखते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि लिखनेवाला व्यक्ति अपनी अतिरिक्त स्फूर्ति में अपनी लिखावट को सजाने का प्रयास कर रहा है। इसमें लिखने का ध्यान शोभा की ओर अधिक है वास्तविक अक्षरों की ओर कम। इस शोभा के लिए लिखनेवाला व्यक्ति अक्षरों के प्रारम्भ एवं अन्त में अनेक रेखाएं इस प्रकार से बनाता है जिसमें लिखावट अधिकाधिक प्रभावशाली और आकर्षक दिखाई दे। यह आकर्षक चिह्न और रेखाएं अनेक प्रकार की हो सकती हैं। उदाहरण के लिए कह सकते हैं कि जैसे कोई लेखक विसर्ग के स्थान पर छोटे-से गोल बना दे शून्य के चिह्न बना दे इत्यादि। इस शोभा का वर्णन कठिन है। यह केवल देखा ही जा सकता है क्योंकि जितने लिखनेवाले लिखेंगे उतने भिन्न प्रकार के लेख लिखेंगे।

इतना कहना पर्याप्त है कि यह व्यक्ति अपने सहज आवश्यक व्यवहार से आगे अतिरिक्त आचरण करता है। बोलने बात करने में अपने विचारों पर अधिक जोर देगा सुनेगा कम कहेगा अधिक। प्रदर्शन की भावना प्रधान है। प्रचलित प्रथा से आगे अपनी नवीनता व्यक्त करता है।

वास्तव में यह अतिरिक्त सुन्दरता की प्रेरणा तथा सजावट आडम्बर है।

लिखावट के अन्य लक्षणों से पता चलेगा कि यह लिखावट कितनी नैतिक अथवा अनैतिक है। यदि नैतिकता के गुण अधिक हैं तो यह अतिरिक्त शोभा स्फूर्ति क्रियाशीलता सांस्कृतिक परिष्कार आदि पुष्ट लक्षणों की साक्षी है। यदि यह नहीं है तो स्वार्थपरता आडम्बर स्वाभिमान आदि नकारात्मक लक्षणों को प्रदर्शित करता है।

ऐसी लिखावटें बहुधा दमन की मिलती हैं। अनुभव बताता है कि लिखावटें जैसी भी हों लोग अपने हस्ताक्षर सजाने की कोशिश करते हैं। इसका एक उदाहरण लिखावट संख्या १७ भी हो सकती है। यह अभिरुचि क्या है कहना कठिन है। परन्तु इतना तो निश्चित है कि यह आचरण सहज व्यवहार में अनावश्यक है।

बहुत सजाकर लिखा हुआ हस्तलिपि प्रभाव स्वभाव अहंकार की भावना कला प्रेम दृढ़ स्वभाव अपना प्रशंसा बहिर्मुखी स्वार्थी प्रवृत्ति नवीनता की भावना सूचित करता है।

(४) सहज सरल रचना—शान्त स्वभाव सरल हृदय शुद्ध मन के व्यक्ति लिखते समय भी अपना सहज और सरल आचरण बनाए रखते हैं। देखिए लिखावट संख्या १५।

बहुधा ऐसा देखा गया है कि ये लिखावटें मन्द गति से लिखी जाती हैं

ग्वनी स्वच्छन्द गति से चलती हुई भी भागती नहीं है। लिखने की व्यवस्था क्रम युक्त रहती है। अक्षरों के आकार सम उनके झुकाव सीधे अक्षर सम्पूर्ण और सावधानी से बने रहते हैं। लेखनी में अवरोध नहीं है। तीव्रगति भी नहीं है। यह समगति लिखावट है। लिखनेवाले व्यक्ति के स्वाभाविक आचरण में मानवीयता प्रधान रहती है। नतिकता स्पष्ट व्यवहार सांस्कृतिक संस्कार स्थिर रूप से विद्यमान रहते हैं। आत्म-संयम है। रचनात्मक कुशलता है। मानसिक सन्तुलन है। एक कार्य को हाथ में लेने और उसको सफलता से समाप्त करने में बुद्धि बल का सदुपयोग है। ऐसे व्यक्तियों में आत्मिक बल का संचार रहता है जो प्रभावशाली होता है। चित्त को एकाग्र करने के गुण आत्मविश्वास समयुक्त आचरण की प्रेरणा रहती है। नियमापालन करने की वृत्ति का अभ्यास करने के लिए ऐसी लिखावट का अभ्यास हितकर होता है।

सहज सरल लिखावट की रचना करने वाले व्यक्तियों का व्यक्तिगत जीवन सादा शुद्ध और सुलझा हुआ रहता है। इसमें आडम्बर और कपट नहीं है। ये अपने काम और सामाजिक आचरण का सम्पादन शान्तभाव और कुशलता से करते हैं।

यदि इनकी लिखावट में लेखनी का दबाव भारी रहता है तो चरित्र की दृढ़ता प्रदर्शित होती है। आत्मबल अधिक है। अपनी बात पर वजन देते हैं जिससे किसी प्रकार की शंका न रह जाए।

यदि यह लिखावट कोमलता से लिखी होती है तो स्वभाव में कोमलता की मात्रा अधिक रहती है। नम्रता मंत्री भाव कटुता का अभाव मधुर भाषा का प्रयोग आदि सहज गुण हैं। ऐसे व्यक्ति नहीं चाहते कि उनमें कोई कटु शब्द बोले।

इस प्रकार की लिखावट में दो बातें देखने की और हैं। पहले यह कि लिखावट के अक्षर स्पष्ट और स्थिर हैं अथवा एसे नहीं हैं। यदि ये अक्षर स्पष्ट और स्थिर हैं तो यह मानना पड़ता है कि लेखक का व्यक्तित्व स्वच्छन्द आचरण करते हुए भी बलशाली है। चरित्र में शक्ति है आत्मबल दृढ है और अपना लक्ष्य प्राप्त करने की लगन है, क्रियाशीलता सफल है।

यदि लिखावट में अक्षरों का आकार बदलता रहता है तो हम समझते हैं कि लेखक में एकाग्रता की कमी है। एकचित होकर किसी काम में लगे रहने की मानसिक शक्ति पर्याप्त नहीं है। एक काम अधूरा छोड़ा दूसरा प्रारम्भ किया ऐसी वृत्ति देखने में आती है। कल्पना शक्ति अच्छी है। अनेक विचार मन में जाग्रत होते रहते हैं। उनमें से किसी एक को पकड़कर उसको कार्य रूप दे सकना कठिन है। दूसरी बात देखने की यह है कि शब्दों के अन्त के चिह्न जैसे कि अक्षर पाइयां आदि पूरे बने हैं अथवा अधबने हैं अस्पष्ट हैं। यदि ये अन्त के अक्षर चिह्न रेखाएं आदि अपूर्ण एवं अस्पष्ट हैं तो ये सुविकसित चरित्र-बल की सूचना नहीं

देते। इस अस्पष्टता का कारण यह है कि लेखक को अपना निर्धारित कार्य आद्योपान्त पूरा करने का अभ्यास नहीं है अपना वचन पूरा करने की वृत्ति नहीं है। इस प्रकार की लिखावट से वह परिस्थिति को संदिग्ध अवस्था में छोड़ देता है। निश्चय ही यह लिखावट का लक्षण विश्वासपात्र व्यक्तियों का नहीं है। इसमें जिम्मेदारी की वृत्ति नहीं है। कुछ लिखावटों मे जिसका निर्णय लिखावटों के अन्य लक्षणों के साथ होता है यह लक्षण कूटनीति एवं वास्तविक तथ्य को गुप्त रखने की भावना से भी है।

(५) स्वच्छन्दता से आगे बढते हुए अक्षर—लेखनी की स्वच्छन्द प्रगति उत्साह साहस उद्योग घुमक्कड़ वृत्ति वाक्य चातुरी आदि प्रगतिसूचक व्यक्तिगत लक्षण व्यक्त करती है।

चित्र २

इस प्रकार की लिखावट में अक्षर लिखने के स्थान पर फैले हुए बनते हैं। अक्षरों के बीच शब्दों के बीच पंक्तियों के बीच में छोड़ा हुआ रिक्त स्थान अलग दिखाई पड़ जाता है। अक्षर आगे की ओर झुके हुए भी हो सकते हैं। अक्षरों के स्थान आदि भी आगे की ओर प्रसारित हो सकते हैं। मात्राएं आदि अन्य चिह्न यथास्थान नहीं। शिरोरेखाएं नहीं अथवा कहीं कहीं हों। इस प्रकार के चिह्न लिखावट में तीव्र गति के हैं। ये चिह्न स्वच्छन्द आगे बढ़ती हुई लिखावट में होते हैं। इस प्रकार के लेखक स्वभाव से बहिर्मुखी प्रतिभावान होते हैं। इनमें किसी भी समस्या को तुरन्त समझ लेने की बुद्धि होती है और इनके मन की प्रतिक्रिया भी तुरन्त ही होती है। भावावेग जल्दी प्रदर्शित होते हैं। अनेक बातों को गुप्त नहीं रख सकते। कहीं-न-कहीं व्यक्त कर देते हैं।

(६) रचनात्मक सन्तुलित लिखावट—सुव्यवस्थित लिखावट में अक्षर शुद्ध और सम्पूर्ण बनते हैं। उनके आकार स्थिर रहते हैं लिखावट लिखने के उपयुक्त स्थान पर यथाक्रम विस्तृत होता है। इसमें चारों ओर के हाशिए प्राय बराबर स्थान छोड़ते हैं। लिखावट की पंक्तियाँ सीधी और सधी हुई रहती हैं। लिखावट के छोटे चिह्न जैसे कि मात्राएँ, विराम बिन्दु पाइयाँ आदि भी यथा-आकार तथा यथास्थान बनाए जाते हैं। ऐसी लिखावट में लिखावट के प्रत्येक छोटे-बड़े सब

अगों को यथास्थान महत्त्व दिया जाता है। यह लिखावट दूर से देखने में ही सुव्यवस्थित सुसंतुलित और सुसयोजित दिखाई पड़ती है। देखिए लिखावट संख्या २१।

अनिल नाथ चक्रवर्ती

चित्र २१

यह वास्तव में आदर्श लिखावट है। इसके लिए लिखने वाले के स्वभाव में लिखने की प्रेरक शक्ति के अतिरिक्त धैर्य सावधानी श्रम गम्भीरता मानसिक एवं भावुक सन्तुलन सामंजस्य स्वनियन्त्रण आदि गुणों के अभ्यास की अधिकता रहती है। ध्यान एकाग्र करके लगन से देर तक श्रम करने से ही ऐसी सुव्यवस्थित लिखावट बनती है।

ऐसी लिखावट मानव-स्वभाव के उत्तमम गुण प्रदर्शित करती है। इस प्रकार के व्यक्ति अपने आचरण में जल्दबाज नहीं होते। वे जल्दी में किसी निश्चय पर नहीं पहुँचना चाहते। परन्तु उनकी विचारधारा यथारीति परिपक्वता पर पहुँचती है। उन्हें नियम पालन की क्षमता प्राप्त करना पड़ती है। ये एक पूर्व निश्चित रूपरेखा पर चलते रहने का अभ्यास करते हैं। यह व्यक्तित्व का निर्माणकारक वृत्तियाँ बनाती है जिससे चरित्र क्रियाशील और बलवान बनता है।

जिनको किसी भी योजना का कार्य रूप में परिणत करने की आवश्यकता होती है उनका काम ऐसे सुव्यवस्थित व्यक्तित्व के बिना सम्पन्न नहीं होता। किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य में चंचलता तथा लापरवाही से सफलता नहीं मिलती। इसमें मानसिक सन्तुलन दृढ़ आन्तरिक शक्ति विचारों की प्रौढ़ता अपने स्नायुओं पर अधिकार तथा आचरण पर अधिकार, स्वाभाविक लक्षण हैं।

रचनात्मक सन्तुलित लिखावट व्यक्तित्व के पुष्ट एवं सदुपयोगी लक्षण व्यक्त करती है। ये हैं रचना-कौशल धैर्य न्यायप्रियता क्रियाशीलता नियम-पालन आस्था सुव्यवस्थित विचारधारा, सुनियमित आचरण आत्मसंयम सहयोग मिलनसारिता बुद्धि प्रधान परिश्रमी युक्तियुक्त सूक्ष्मदृष्टि अध्यवसाय आदि उत्सुकता अधिक है परन्तु अपना वचन निभाने की क्षमता कम है। इस प्रकार की अस्पष्टता अच्छा नैतिक लक्षण नहीं है।

लिखावट स्वतन्त्रता से लिखी हो गतिशील हो परन्तु अक्षर शब्द आदि स्पष्ट तथा स्थिर होना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं है तो लिखावट सफल नहीं कही जा सकती क्रियात्मक नैतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से। लिखावट की निश्चित रूपरेखा में ही व्यक्तिगत चरित्र एवं रुचि रुझान की रूपरेखा स्पष्ट है।

(७) स्याही की मात्रा—स्याही की मात्रा अधिक होने के दो कारण होते हैं। पहला यह कि लिखने समय लेखनी पर दबाव अधिक होता है। इस परिस्थिति

से लिखनेवाले व्यक्ति की अधिक भावुक प्रेरणा दृष्टिगोचर होती है। इसमें जीवन शक्ति, प्रेरक गति, चेष्टा, स्वेच्छाचार, हठ आदि लक्षणों का प्रादुर्भाव अधिक और स्पष्ट रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने निर्णय पर विश्वास करता है।

इस प्रकार का दबाव स्वेच्छाचार प्रदर्शित करता है। इसमें शरीर-सुख की भावना, स्वार्थपरता तथा भौतिक सुखों की इच्छा अधिक है। अच्छा खाना, अच्छा भोग करना व्यक्तिगत रुझान में निहित है।

दूसरी परिस्थिति ऐसी लेखनी के प्रयोग करने की है जिससे लेखनी पर दबाव अधिक न होने पर भी अधिक मात्रा में स्याही आती है।

ऐसा हो सकता है कि लेखक की दृष्टि कमजोर है और कम दिखाई देने लगा है। इसलिए स्याही के गहरे रंग की आवश्यकता है।

अथवा अधिक स्याही का प्रयोग गहरे रंग के प्रति आकर्षण, सुन्दरता के प्रति आकर्षण, कला प्रेम आदि की रुचि प्रदर्शित होती है।

यदि ऐसी लिखावट अशिष्ट अभद्र होती है तो स्वभावगत अभद्र व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। ऐसा व्यक्ति स्वभाव से रूखा और अविश्वासी हो सकता है। इसमें भी स्वेच्छाचार की भावना अधिक होगी।

इसके विपरीत कोमल भार की लिखावट में स्वभाव के कोमल गुण अधिक होते हैं। यदि स्याही की मात्रा कम है तो भावुकता अधिक नहीं है।

भारी लिखावट—जब लिखने में लेखनी नीचे की ओर अधिक दबाई जाती है तो लिखावट भारी हो जाती है। कुछ लोग बहुत हल्के हाथ से लिखते हैं। लिखावट के कुछ चिह्न जिनमें लेखनी नीचे की ओर से ऊपर को जाती है हल्के हाथ से लिखे जाते हैं। ये रेखाएं पतली होती हैं। इनमें स्याही की मात्रा कम रहती है। ऐसी रेखाएं जो ऊपर से नीचे की ओर चलती हैं अथवा बाईं ओर से आगे दाईं ओर को खींची जाती हैं लेखनी का दबाव प्रदर्शित करती हैं। भारी लिखावट के कतिपय लक्षण इस प्रकार पाए जाते हैं। (देखिए लिखावट संख्या १४)

इसमें उत्साह, स्फूर्ति की भावना, अच्छा स्वास्थ्य, गहरे रंगों के प्रति आकर्षण, आत्म शक्ति, दृढ़ता, नाड़ियों में वेग एवं शक्ति का संचार व्यक्त होता है। निरन्तर चेष्टा करते रहने की क्षमता व्यक्त होती है। मनोवेग से बलवान जीवन शक्ति उत्पन्न होती है, निर्भीकता आती है, स्पष्ट तथा प्रबल आचरण करने की शक्ति प्रदर्शित होती है।

भारी लिखावट भी वस्तिमता प्रवृत्ति का लक्षण है। यह व्यक्ति भी अपना बलवान व्यक्तित्व व्यक्त करता है, भावना प्रधान है, दृढ़ निश्चय कर सकने में समर्थ है, अपने व्यक्तित्व के बल से अन्य अनेक व्यक्तियों को प्रभावित करता है, परिश्रम कर सकता है। लेखनी का भारी दबाव बलवान जीवन शक्ति का द्योतक है।

भारी लिखावट यदि छोटे आकार की है तो लिखनेवाले व्यक्ति में अपना चित्त एकाग्र करने की भी क्षमता है और यह व्यक्ति बहुत देर तक ध्यान लगाकर काम में लगा रह सकता है। इस लिखावट में वेग-गतिशीलता आवश्यक है। हाथ का कंपन रोकने के लिए भी कुछ लोग लेखनी को दबाते हैं परन्तु इस परिस्थिति में लिखावट धीरे धीरे लिखी हुई मालूम पड़ती है और कहीं-कहीं लेखनी में कम्पन प्रदर्शित हो ही जाता है। यह चिह्न भारी लिखावट का नहीं है, फिर भी निश्चय की मानसिक दृढ़ता की कुछ मात्रा सूचित करता है। यद्यपि उतना नहीं जितना कि गतिशील लिखावट से व्यक्त होता है।

कुछ लिखावटें भारी दिखाई देती हैं परन्तु भारी नहीं होतीं। ये लेखनी के दबाव के कारण भारी नहीं हैं। ये लिखावटें मोटी लेखनी से तथा अधिक स्याही की मात्रा से लिखी हुई होती हैं। ये लिखावटें यदि भद्दी दिखाई देती हैं तो स्वभाव का स्थापन, स्वार्थ-वृत्ति, इंद्रियजनित सुख, भोग विलास की भावना, भौतिक वस्तुओं में आकर्षण, अविवेक, पक्षपातयुक्त मनोवेग, अशांत प्रवृत्ति आदि अभद्र आचरण के लक्षणों की सूचना देती हैं, इसमें शंका नहीं है।

(८) सुगम यथाक्रम, समगति—यह लिखावट समगति में लिखी जाती है। इसमें लेखनी के वेग के लक्षण नहीं हैं। अक्षर, शब्द, पंक्तियाँ आदि यथास्थान होंगे। इसमें क्रमबद्धता होगी।

इसमें भावधारा प्रधान है।

पूर्वनिर्धारण, चिंतन, निपुणता, व्यवहार, संयम, आत्मविश्वास, आत्म पूर्णता, विचार व्यक्त करने की गंभीरता, निर्णय की शक्ति आदि चरित्र के गुण व्यक्त होते हैं।

भावात्मक गति तथा चंचल वृत्ति नहीं है।

(९) द्रुतगामी लिखावट—इस लिखावट को द्रुतगामी लिखावट कहते हैं।

तीव्र-गति से लिखावट में अनेक परिवर्तन आ जाते हैं। हस्तलिपि विज्ञान के दृष्टिकोण से ये परिवर्तन बहुत ही रोचक हैं तथा व्यक्तित्व के अनेकानेक लक्षणों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देते हैं जैसे कि अक्षरों का आगे की ओर झुकना, अक्षरों का अस्पष्ट हो जाना, अक्षरों का एक-दूसरे से मिल जाना आदि। स्वच्छन्दता में लिखे आगे बढ़ते हुए अक्षर लिखने वाले व्यक्ति के स्वभाव में व्यक्त करने की भावना, उत्साह, साहस, उद्योग की भावना तथा स्वावलम्बन की चेष्टा प्रधान रहती है। ऐसा व्यक्ति बहुधा स्पष्टवादी होता है उसके आचरण में सन्देह की भावना प्रदर्शित नहीं होती। अन्य व्यक्तियों की बात पर सहज भरोसा करने की प्रवृत्ति उसमें होती है। इसमें व्यावहारिक संकीर्णता नहीं होती। यह व्यक्ति एक साथ अनेक कार्य हाथ में लेने से नहीं हिचकता। (देखिए लिखावट संख्या ७, १० १६ आदि) मानसिक उदारता इसका मुख्य लक्षण है।

(१०) द्रुतगति मे अस्पष्ट अक्षर—अनेक लिखावटें तीव्र गति के कारण अस्पष्ट हो जाती हैं। ऐसी लिखावट की मूल रेखा ऊची-नीची लहरियादार हो जाती है, हाशिये की बाइ रेखा भी आगे तथा पीछे की ओर बनती है। अक्षर अशुद्ध तथा अस्पष्ट बनते हैं।

ऐसी लिखावट लिखने वाले के स्वभाव मे जल्दबाजी रहती है वह अपनी लिखावट घसीटता है। जो कुछ उसके मन म आता है जल्दी से घसीट देना चाहता है। उसम यह भावना नही है कि उसे पढने वाला उस लिखावट से क्या समझ सकेगा। उसके लिखे जाने का वास्तविक आशय प्राप्त होगा अथवा नहीं। ऐसे व्यक्ति स्वार्थी उद्दण्ड असावधान क्रोधी अभिमानी तथा भावावेश म अशिष्ट व्यवहार करने वाले होते हैं। उसम सहज सामाजिक मानवीयता का अभाव रहता है। गोपनीयता असत्य भाषण उत्तरदायित्व न लेना अपना वचन पूरा न करना आदि अनेक संस्कारों की सम्भावना भी रहती है। यह व्यक्ति उत्साही होते हुए भी रचनात्मक कार्य म संलग्नता दृढता उत्तरदायित्व तथा अपने कार्य को सुरुचिपूर्ण युक्ति से पूरा करने की प्रवृत्ति प्रदर्शित नही करता। उतावलेपन म लेखक गतिपूर्वक अपनी लेखनी का संचालन करता है। बहुधा आवश्यक बातें छोड जाता है और अनावश्यक बातो पर जोर देता है। ऐसे व्यक्ति असावधानी करते है और पीछे पछताते भी है।

(११) गतिशील शुद्ध और स्पष्ट अक्षर—प्रतिगामी लिखावट होते हुए भी शुद्ध और स्पष्ट अक्षर लिखने की क्षमता विलक्षण निर्माणकारक प्रवृत्तियों का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने आचरण म तत्पर होते हुए भी रीति के विरुद्ध आचरण नही करता। अपने उत्साह म भी सावधानी संलग्नता आत्मविश्वास शांत स्वभाव सामाजिकता रचनात्मक स्पष्टता शुद्धता तथा सद्व्यवहार करते रहने म सफल रहता है।

ऐसा व्यक्तित्व विभिन्न व्यावहारिक परिस्थितियों म अपने मानसिक सन्तुलन को बनाए रखता है। उसकी मानसिक स्थिरता उसके संकल्प को दृढ विवेक को प्रखर प्रतिभा को बहिर्मुखी और कार्यक्षमता एवं क्षमता को बलवान बनाता है। किसी भी कार्य के छोटे म छोटे अंग भी उसकी दृष्टि से छूट नही जाते। उसकी प्रखर शक्ति उत्साह उत्पन्न करता है। साथ ही उसे नियम पालन करते रहने की भी शक्ति देता है। ऐसे व्यक्ति कठिन परिस्थिति म भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखते हैं।

गतिगामी लिखावट म बड़े अक्षरों का प्रयोग तथा लेखनी का अधिक दबाव व्यक्तित्व के लक्षणों को अधिकाधिक प्रबल बनाता है। ऐसे व्यक्ति प्रभावशाली होते हैं अन्य व्यक्तियों का संचालन नेतृत्व करते हैं। उनमे सूझ-बूझ ओज उद्योग परिश्रम आत्मिक प्रेरणा कल्पना निर्माण तथा रचनात्मक आदर्शों की मात्रा

अधिक रहती है।

(१२) मिले-जुले अक्षर—लिखावट में अक्षरों का एक-दूसरे से मिल जाना अथवा शिरोरेखाओं को साथ ही मिलाते हुए आगे बढ़ते जाना धैर्य, क्षमता, दृढ़ता, सावधानी, उत्साह, कार्यकुशलता का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति समाज के सामूहिक संस्कारों में सफलता प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। पर लिखावट स्पष्ट होना आवश्यक है।

चित्र २७

रोमन लिपि में अक्षरों को मिलाकर लिखने की प्रथा है। इस लिपि में अक्षर सुगमता से मिलते हैं। एक अक्षर के अन्त से ही दूसरा अक्षर प्रारम्भ होता है। कुछ कुशल लेखक इन अक्षरों को बड़ी सुन्दरता तथा सादगी से मिलाते हैं। यह बुद्धि की प्रखरता का परिचायक है। अन्य स्थानों में लेखक बनावटी ढंग अथवा कठिनाई में इन अक्षरों को मिलाते हैं। ये स्वार्थ पोषण वाले व्यक्ति हैं।

सहज बुद्धिवाले व्यक्तियों का माध्यम सुगम होता है। जहाँ अक्षरों का मिलान सुगमता से किया जा सकता है, कर लिया जाता है। जहाँ कठिनाई होती है वहाँ लेखनी उठाकर पुनः लिखना प्रारम्भ कर लिया जाता है।

मिली-जुली लिखावट में तत्परता, मित्रता के भाव, विषय-सामंजस्य, सामूहिक संस्कार, प्रखर-बुद्धि, विचारों में नवीनता, नवीन प्रकार से अक्षर मिलाने में उत्सुकता, वाक्य-चातुरी आदि लक्षण व्यक्त होते हैं। यदि लिखावट में कलम पर दबाव भारी है तो ऐसे व्यक्ति अधिक स्वेच्छाचारी होते हैं, तर्कप्रिय होते हैं, आलोचना सहन नहीं कर सकते। कटु भी होते हैं।

जिन लिखावटों में अक्षर अलग-अलग अंकों की भाँति लिखे जाते हैं, वे लिखावटें विचार-प्रधान हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक कम और बौद्धिक अधिक होते हैं। ये आन्तरिक प्रेरणा मानते हैं।

ऐसे व्यक्ति लिखने में समय लेते रहते हैं। यह एक प्रकार का विचार प्रवाह का अवरोध है। इस प्रकार के व्यक्ति वाचाल नहीं होते। दूसरों की दृष्टि

(१०) द्रुतगति से अस्पष्ट अक्षर—अनेक लिखावटें तीव्र गति के कारण अस्पष्ट हो जाती हैं। ऐसी लिखावट की मूल रेखा ऊंची-नीची लहरियादार हो जाती है हाशिये की बाई रेखा भी आगे तथा पीछे की ओर बनती है। अक्षर अशुद्ध तथा अस्पष्ट बनते हैं।

ऐसी लिखावट लिखने वाले के स्वभाव में जल्दबाजी रहती है वह अपनी लिखावट घसीटता है। जो कुछ उसके मन में आता है जल्दी से घसीट देना चाहता है। उसमें यह भावना नहीं है कि उसे पढ़ने वाला उस लिखावट से क्या समझ सकेगा। इसके लिखे जाने का वास्तविक आशय प्राप्त होगा अथवा नहीं। ऐसे व्यक्ति स्वार्थी उद्दण्ड असावधान क्रोधी अभिमानी तथा भावावेग में अशिष्ट व्यवहार करने वाले होते हैं। उसमें सहज सामाजिक मानवीयता का अभाव रहता है। गोपनीयता असत्य भाषण उत्तरदायित्व न लेना अपना वचन पूरा न करना आदि अनेक सस्कारों की सम्भावना भी रहती है। यह व्यक्ति उत्साही होते हुए भी रचनात्मक कार्य में सलग्नता दृढ़ता उत्तरदायित्व तथा अपने कार्य को सुरुचिपूर्ण युक्ति से पूरा करने की प्रवृत्ति प्रदर्शित नहीं करता। उतावलेपन में लेखक गतिपूर्वक अपनी लेखनी का सचालन करता है। बहुधा आवश्यक बातें छोड़ जाता है और अनावश्यक बातों पर जोर देता है। ऐसे व्यक्ति असावधानी करते हैं और पीछे पछताते भी हैं।

(११) गतिशील, शुद्ध और स्पष्ट अक्षर—प्रतिगामी लिखावट होते हुए भी शुद्ध और स्पष्ट अक्षर लिखने की क्षमता विलक्षण निर्माणकारक प्रवृत्तियों का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने आचरण में तत्पर होते हुए भी रीति के विरुद्ध आचरण नहीं करता। अपने उत्साह में भी सावधानी सलग्नता आत्मविश्वास शान्त स्वभाव सामाजिकता रचनात्मक स्पष्टता शुद्धता तथा सद्व्यवहार करते रहने में सफल रहता है।

ऐसा व्यक्तित्व विभिन्न व्यावहारिक परिस्थितियों में अपने मानसिक सन्तुलन को बनाए रखता है। उसकी मानसिक स्थिरता उसके सकल्प को दृढ़ विवेक का प्रसार प्रतिभा की बहिर्मुखता और कार्यक्षमता एव क्षमता का बलवान बनाता है। किसी भी कार्य के छोटे से छोटे अंग भी उसकी दृष्टि से छूट नहीं जाते। उसकी प्रेरक शक्ति उत्साह उत्पन्न करता है। साथ ही उसे नियम पालन करने की भी शक्ति देता है। ऐसा व्यक्ति कठिन परिस्थिति में भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखते हैं।

गतिगामी लिखावट में बड़े अक्षरों का योग तथा स्पष्टता का अधिक दबाव व्यक्तित्व के लक्षणों का अधिकाधिक प्रबल बनाता है। ऐसे व्यक्ति प्रभावशाली होते हैं अन्य व्यक्तियों का सचालन नेतृत्व करते हैं। उनमें सूझ-बूझ और उद्योग परिश्रम अन्तर्दृष्टि कल्पना निर्माण तथा रचनात्मक आदर्शों की मात्रा

अधिक रहती है।

(१२) मिले जुले अक्षर—लिखावट में अक्षरों का एक दूसरे से मिलते जाना अथवा शिरोरेखाओं को साथ ही मिलाते हुए आगे बढ़ते जाना धैर्य, क्षमता दक्षता सावधानी, उत्साह कार्यकुशलता का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति समाज के सामूहिक संस्कारों में सफलता प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। यह लिखावट स्पष्ट होना आवश्यक है।

चित्र २२

रोमन लिपि में अक्षरों को मिलाकर लिखने की प्रथा है। इस लिपि में अक्षर सुगमता से मिलते हैं। एक अक्षर के अन्त से ही दूसरा अक्षर प्रारम्भ होता है। कुछ कुशल लेखक इन अक्षरों को बड़ी सुन्दरता तथा सादगी में मिलाते हैं। यह बुद्धि की प्रखरता का परिचायक है। अन्य स्थानों में लेखक बनावटी ढंग अथवा कठिनाई से इन अक्षरों को मिलाते हैं। ये लकीर पीटने वाले व्यक्ति हैं।

सहज बुद्धिवाले व्यक्तियों का माध्यम सुगम होता है। जहाँ अक्षरों का मिलान सुगमता से किया जा सकता है कर लिया जाता है। जहाँ कठिनाई होती है वहाँ लेखनी उठाकर पुनः लिखना प्रारम्भ कर दिया जाता है।

मिली जुली लिखावट में तत्परता मित्रता के भाव विषय-सामंजस्य सामूहिक संस्कार प्रखर-बुद्धि विचारों में नवीनता नवीन प्रकार से अक्षर मिलाने में उत्सुकता वाक्य-चातुरी आदि लक्षण व्यक्त होते हैं। यदि लिखावट में कलम पर दबाव भारी है तो ऐसे व्यक्ति अधिक स्वच्छंदाचारी होते हैं तर्कप्रिय होते हैं आलोचना सहन नहीं कर सकते। वक्ता भी होते हैं।

जिन लिखावटों में अक्षर अलग अलग अंकों की भाँति लिखे जाते हैं, वे लिखावटें विचार प्रधान हैं। ऐसे व्यक्ति भावक कम और बौद्धिक अधिक होते हैं। ये आन्तरिक प्रेरणा मानते हैं।

ऐसे व्यक्ति लिखने में समय लेते रहते हैं। यह एक प्रकार का विचार प्रवाह का अवरोध है। इस प्रकार के व्यक्ति वाचाल नहीं होते। दूसरों की दृष्टि

कोण समझने का प्रयास करते हैं दूसरों की सुनते हैं।

ऐसा भी कहा जाता है कि यह रीति लिखना सीखने के प्रथम अभ्यास पर आधारित है। कुछ पाठशालाओं में अक्षर अलग-अलग लिखने की प्रथा है। बालक बड़े होकर भी इस प्रथा का पालन करते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है। मानसिक अपरिपक्वता में ही ऐसा होता है। मानसिक परिपक्वता प्राप्त हो जाने पर तथा विचार प्रवाह सहज हो जाने पर अक्षरों में सहज ही मिलान आने लगता है। यह भारतीय लिपियों में भी प्रदर्शित है। कतिपय हिन्दी लिखने वाले भी अक्षरों का मिलान करने लगते हैं।

(१३) सकीर्ण लिखावटें—इस प्रकार की लिखावटों में रिक्त स्थान की कमी होती है। अक्षर एक-दूसरे के बहुत करीब लिख जाते हैं। यह भी लिखावट में अवरोध का लक्षण है। कतिपय लिखावटों में अक्षरों के मुख बन्द रहते हैं। गांठ सी भी बनी हुई दिखाई देती हैं। यह सकुचित विचारधारा है जिसमें व्यक्त होता है कि लिखने वाला व्यक्ति एकाग्रता पर जोर दे रहा है और स्वरक्षा के ध्येय में है। कुछ व्यक्त करना नहीं चाहता। उदारता से कुछ देना नहीं चाहता कृपण है दूसरे व्यक्तियों का विश्वास करना नहीं चाहता। आत्म विश्वास की कमी सामाजिक विचारों का अभाव बातें न कहने की आदत कूटनीति कपट आदि लक्षण व्यक्त हो सकते हैं। चरित्र निर्धारण के लिए लिखावट के अन्य लक्षण भी देखना आवश्यक है।

(१४) लिखावट में अवरोध—लिखावट का स्वाभाविक लक्षण बाईं ओर से दाईं ओर बढ़ना है। इसमें अक्षरों के ऐसे अंग जो आगे बढ़ सकते हैं आगे की ओर बढ़ते हैं। इसमें विपरीत लक्षण दिखाई देते हैं जैसे लिखावट का पीछे की ओर झुकना अक्षर की अन्तिम रेखाओं का पीछे की ओर घूम जाना छोटे अक्षर बनना मात्राओं का छोटा बनना अथवा इस प्रकार से घूमना कि अक्षरों को ढक दें। अनेक लिखावटों का सूक्ष्म परीक्षा में इस प्रकार के अवरोधक चिह्नों की पहचान होती है।

अवरोधक चिह्न अनेक प्रकार के हैं। ये जहाँ लेखनी रुकती है वहाँ प्राप्त होते हैं। सहज प्रवाह रुक जाता है। स्वभाव पर भी इस प्रकार का प्रभाव रहता है। अपरिपक्व मानसिक अवस्था में मानसिक एवं भावक रूप में गुप्त परिस्थिति में कूटनीति चालाकी में तथा अविश्वास की परिस्थिति में इस प्रकार के अवरोध दृष्टिगोचर होते हैं।

जो व्यक्ति सहज स्वभाव में सत्य भाषण करते हैं और जिनके पास छिपाने के लिए कोई मसाला नहीं है वे इस प्रकार के अवरोध का प्रयोग नहीं करते। ऐसा लिखावटें स्पष्ट को मिलता है जिनमें किसी किसी अक्षर की प्रारम्भिक अथवा अन्तिम रेखा अक्षर को पूरा नाम में घाराकार ढक लेता है। ऐसा रेखा स्वरक्षा

की प्ररणा है और अपन स्वार्थ को प्रर्शित होने देना नहा चाहनी।

(१५) अव्यवस्थित लिखावट—इस लिखावट म हर तरह म अथवा इसक अनक अगा म लापरवाही रहती है। कोई अक्षर बडे, कोई अक्षर छोटे बन जाते हैं। रेखाए सीधी नहीं होतीं, लपनी का झुकाव भी विभिन्न होता है। एसी लिखावट चाहे जहाँ कटी-फटी होती है। एसी लिखावट म अक्षर भी अधिक बन अधकने होते हैं। इसका उदाहरण लिखावट संख्या २० है। यह लिखावट न तो सही तरह स पढ़ते बनती है और न वह किसी प्रकार का स्थिर रूप प्रदर्शित करती है। हाशिय भी अनिश्चित होते हैं।

यह मानसिक उथल-पुथल का द्योतक है। अस्थिर स्वभाव भारपूर्ण चचल आचरण पलायन निराशा द्वन्द्व विचारधारा म परिवतन आचरण म क्षणिक समानता, विचारो का भद्दापन होनता की भावना, असत्य भाषण धोखा देन की आदत आदि अनक असामाजिक लक्षण मिलते हैं। यह लिखावट लापरवाही का नमूना है। पुष्ट लक्षण न मिलन स निश्चय ही यह स्वस्थ व्यक्तित्व का उदाहरण नहा है। व्यक्तिगत आचरण स श्रमशीलता का महत्त्व है। यदि उसम श्रम नहा है ता उसम किसी प्रकार की निश्चितता का सम्भावना नहा रहती।

प्रखर बुद्धिवान व्यक्ति यदि इस प्रकार की लिखावट लिखें तो उसका अवश्य ही कोई कारण होना चाहिए जस असावधानी शारीरिक अथवा मानसिक थकान अस्वस्थता निराशा की भावना, मानसिक कठिनाई परेशानी आदि।

अन्यथा अपरिपक्व मानसिक अवस्था वाले व्यक्ति ही अव्यवस्थित लिखावट लिखते हैं जिनका लिखन का अभ्यास नहा है और न अपन विचार सुलझा कर निश्चित राय करने की आदत है।

(१६) लखनी का दबाव हलका—यह कोमल लिखावट कोमल चित्त वृत्ति व्यक्त करता है। सहनशीलता तथा सगमप्रियता इसक प्रिय लक्षण हैं। सन्तोष का भावना है प्रसन्न चित रहना चाहते हैं। अप्रिय आलोचना पसन्द नहा करते।

कुछ उदाहरण एस दखन म आते हैं जिनम लिपि म कोमलता है और अक्षर बहुत सावधानी स लिखे हुए हैं—छोटे आकार म। लिखनवाले व्यक्ति बहुत ही स्वस्थ और कठोर हैं। उनका स्वभाव भी बहुत कठोर है। यह विपरीत परिस्थिति है। एसा अनुभव हुआ है कि ऐसे व्यक्ति वास्तव में आन्तरिक हीनता की भावना के कारण ही अपन स्वभाव म कठोरता आदि का व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। यह स्वभाव एव चरित्र की विचित्रता है। जीवन की विविध अप्रिय परिस्थितियाँ कुछ व्यक्तियो म परिवर्तन ला देती हैं।

अथवा हल्की लिखावट वाले व्यक्ति किसी प्रकार का बल प्रयोग पसन्द नहा करते। धीरे स्वर म बोलना भद्र व्यवहार करना ही उनको प्रिय है। व वास्तव म मानसिक चित्त-वृत्ति के व्यक्ति हैं। यदि लिखावट रुकी हुई है तो

उदारता प्रदर्शन करती है अन्यथा मितव्ययिता का लक्षण है।

अवरोधक चिह्नों में भी हलकी लिखावट का लेख है। किसी समय यदि कोई व्यक्ति अपने मनोवेग के प्रवाह को रोकने का अभ्यास करना चाहता है तो हल्के हाथ से लिखने का प्रयास करेगा। यदि हल्के हाथ से लिखना इस व्यक्ति के लिए स्वाभाविक नहीं है तो उसका यह प्रयास एक मानसिक अवरोध का काम करेगा। इससे उसका मनोवेग संतुलित हो सकेगा तथा चित्त में शान्ति धैर्य एवं एकाग्रता का सञ्चार पुनः हो सकेगा।

कूटलिपि की नकल करने वाले व्यक्ति इस प्रकार की हल्के हाथ से लिखी गई लिखावट का प्रयोग करते हैं। वे बार-बार लेखनी उठाकर अपनी वास्तविक चित्त वृत्ति रोक रहते हैं और सावधानी से धैर्य एवं ध्यान से किसी भी लेखलिपि की अच्छी नकल कर सकते हैं। इस लिखावट में स्वच्छन्दता नहीं है, गति नहीं है।

हल्के हाथ की लिखावट का अध्ययन सूक्ष्म रूप से किया जाना चाहिए। इसमें आतिशी शीशा काम देता है जिसमें साधारण रेखाएं बड़ी दिखाई देती हैं। कभी ऐसा भी होता है कि लेखनी का सम्मुख निब जिसमें स्याही कम आती है और पतली रेखाएं बनाता है दबाए जाने पर भी पतली ही रेखाएं बनाता है धोखा दे जाता है।

लिखावट के विशिष्ट प्रतिरूप

(१७) आधार तलरेखा सीधी—आधार तलरेखा का सीधा होना न्यायप्रियता का लक्षण है जिसमें न्यायप्रियता की आन्तरिक शक्ति निहित है और अपने आचरण द्वारा न्याय करना भी है।

देवनागरी लिपि में आधाररेखा अक्षरों के ऊपर है। रोमन लिपि में यह रेखा अक्षरों के नीचे है। इसका सीधा लिखा जाना आन्तरिक शक्ति पर निर्भर है।

आत्मिक क्षमता, रीतियुक्त क्रिया नियम-पालन अपने आदर्श पर स्थिर रहना सूचित करता है।

(१८) आधार तलरेखा लहरियादार—यह लिखने में अनिश्चित आचरण है तथा चरित्र की निर्बलता का सूचक है।

चित्त स्थिर न होना धमनियों का मन्द कम्पन होना उत्तेजना अपरिपक्वता सूचित करता है।

सुसम्बद्ध तथा अस्पष्ट लिखावट में यह कूटनीति चालाकी अविश्वास धोखा छल प्रबल आदि लक्षण व्यक्त करता है। लिखावट के अन्य प्रकार चिह्न भी देखने चाहिए।

(१९) ऊपर की ओर उठती हुई पंक्तियाँ—यह भावुकता प्रधान लक्षण है। उत्साह आशा स्फूर्ति क्रियात्मकता विश्वास प्रदर्शित करता है। इसमें पंक्ति

बाइ ओर म चलकर दाइ ओर ऊपर को उठती जाती है।

(२०) पंक्तियाँ नीचे की ओर झुकती हुई—यह अधोगामी पंक्ति है। बाइ ओर स प्रारम्भ होकर नीच की ओर ढलती जाती है। थकान हतोत्साह अस्वस्थ अवस्था खिन्नता उदासीनता मलिनता प्रदर्शित करती है।

(२१) मोटी गन्दी और फली हुई—इस प्रकार की लिखावट अभद्र है। स्थापन विषयासक्त इन्द्रियजनित सुख भौतिक वस्तुओं म आकषण अविवक पक्षपातयुक्त स्वार्थी व्यवहार उद्दण्ड आचरण व्यक्त करती है। स्वाभाविक भद्दपन म ही एसी लिखावटें बनती हैं।

यदि इस लिखावट की रखाओं क अन्तिम भाग म भारीपन अधिक है तो आवेगपूर्ण आचरण भी व्यक्त है। एसी परिस्थिति म भद्दपन का भौतिक कारण भी देखना आवश्यक है अथवा पुन दूसरी लिखावट देखनी चाहिए। सम्भवत एसी भद्दी लिखावट का कारण लखनी हो अथवा एसा कागज हो जिस पर लिखावट की स्याही फल जाता है। अन्य लक्षणों पर भी ध्यान देना चाहिए।

मोटी भद्दी लिखावट ऐसे लोगों की पाई गई है जो अपराधयुक्त काम करते हुए पकड़े जाते हैं।

(२२) शिरोरेखाओं पर लिखना पुरानी प्रथा है। पहले शिरोरेखा खींचना फिर उसके नीचे अक्षर लिखना। यह प्रवृत्ति पहले सोचने फिर काम करने की है। यह सावधानी का लक्षण है तथा गम्भीर प्रकृति प्रदर्शित करता है।

इस प्रकार की लिखावट म लखनी का प्रवाह स्वच्छन्द रहता है क्योंकि एक बार रेखा खींचने के उपरान्त लखनी उसके आधार म स्वत चलती जाती है। यह रेखा लिखना प्रारम्भ करने म पहले एक प्रकार का अवरोध है जिसम चिन्तन प्रारम्भ करने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

(२३) अक्षर लिखने के बाद शिरोरेखा खींचना—यह भी सावधानी का एक लक्षण है अवरोध है। इसके द्वारा व्यक्तिगत आचार विचार नियमित रहते हैं शक्ति का प्रवाह सम रहता है स्पष्टता आती है तथा लिखावट का आकार प्रकार बनावट अक्षर रचना आदि शुद्ध एवं पूर्ण हो जाते हैं। इस प्रकार का अभ्यास अपना कार्य सम्पन्न करने के उपरान्त उसका पुन निरीक्षण करने का अवसर देता है। आगे बढ़ो परन्तु पीछे भी देखते जाओ इस प्रकार की भावना है।

(२४) शिरोरेखाओं के साथ अक्षर मिलाते हुए आगे बढ़ना—यह प्रगतिशील लेखक की वृत्ति है। अपने पूर्व-परिचित नियमों को पकड़ रहना जो पुरानी रूढ़ि वाले हैं आगे निकलना चाहते हैं परन्तु उन्हें छोड़ भी नहीं सकते। परन्तु यह लिखने वाले की चतुराई और सावधानी है कि वह लिखावट म स्वच्छन्दता एवं प्रवाह का संचार करते हुए भी अक्षरों म स्पष्टता सम्पूर्णता एवं नियम-पालन करता रहता है।

यह अवरोध सामूहिक संस्कार, सावधानी, दक्षता, धैर्य, कार्यकुशलता का लक्षण है।

(२५) शिरोरेखा न होना—यह स्वच्छन्द आचरण है। परन्तु इस सन्तुलित रखने के लिए एकाग्रचित्त होने की अधिक आवश्यकता पड़ती है। गम्भीर विचारक जिनको अधिक लिखना पड़ता है और जिनके विचार सुलझे हुए हैं और जिनमें अपने विचार को सहज ही व्यक्त करने की क्षमता है बहुधा शिरोरेखाओं का सहारा नहीं लेते हैं।

इसमें उत्साह अधीरता कल्पना प्रेरणा प्रवाह गतिशीलता आदि लक्षण हैं। यदि लिखावट के अन्य लक्षण अस्पष्ट है तो असावधानी अस्पष्टता उतावलापन भी प्रदर्शित होते हैं फिर भी यह विचार प्रकाशन में आत्मविश्वास एवं स्वच्छन्दता प्रदर्शित करता है।

(२६) लिखावट का बड़ा आकार—इस लिखावट में सब अक्षर बड़े आकार के बने हुए होते हैं अथवा अधिकतर अक्षर बड़े आकार के होते हैं। इससे पढ़नेवाला व्यक्ति आकर्षित होता है। ये अक्षर स्वच्छन्दता से चलती हुई लेखनी से लिखने में अधिक स्थान घेरते हैं। इनके बड़े आकार के समान ही ऊपर तथा नीचे की मात्राएं आदि अनेक चिह्न भी बड़े आकार के होते हैं। (देखिए लिखावट संख्या १४ और २३

चित्र २३

लिखावट में बड़ा आकार बहिर्मुखी प्रतिभा का प्रमुख लक्षण है। यह व्यक्ति अपने दिमाग पर अधिक जोर देना पसन्द नहीं करता और यहाँ वहाँ घूम फिरकर अपना काम करना पसन्द करता है। इसका मन एक जगह नहीं लगता। यह मानसिक उदारता का भी लक्षण है जिसमें मितव्ययिता की भावना नहीं है। यह भावना प्रधान व्यक्ति है। यह स्वच्छन्दता में आचरण करता है। इसमें आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता की भावना अधिक रहती है। भावावेश में बह जाना इसके लिए सरल है। इसमें कष्ट सहने की शक्ति अधिक है। लिखावट का आकार शक्ति का परिचय देता है। शक्तिवान मन में कल्पना सजग रहती है। अनेकानेक विषयों की ओर आकर्षण रहता है। सुन्दरता का प्रेम शृंगार करने की प्रवृत्ति उत्साह अधीरता प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव भविष्य की सुखद कल्पना आदि अनेक लक्षण बड़ा

लिखावट से व्यक्त होते हैं।

लिखावट का बड़ा आकार कुछ अन्य सूचनाएँ भी देता है जैसे कि नशा से कम दिखाई देना, एकाग्रता का अभाव, युक्तियुक्त रचनात्मक कार्य का अभाव, अभिमान दिखाने की प्रवृत्तियाँ आदि ऐसे लक्षणों की पुष्टि के लिए लिखावट के अन्य चिह्नों की जाँच भी करना आवश्यक होगा।

इसके कुछ सार्वत्रिक भाव इस प्रकार हैं—आत्मप्रतिष्ठा, शक्ति का परिचय, भावुकता, बहिर्मुखी प्रवृत्ति, भावावेग, मानसिक उदारता, विविधता, निर्भीकता, प्रत्यक्ष स्वभाव, स्वच्छन्दता, भविष्य की कल्पना, सूझबूझ, विश्रामी, प्रभावित होने वाली प्रकृति, अनवधान और ध्यान, कलात्मकता, प्रसन्नचित्त, अस्थिर लिखावट में अपव्यय, एकाग्रता का अभाव, सावधान लिखावट में नम्र शिथिलता। लिखावट के अन्य लक्षणों के अनुसार ये गुण सिद्ध होते हैं।

(२७) छोटे अक्षर—सुव्यवस्थित लिखावट में छोटे अक्षरों में भी महत्ता, बुद्धि बल की अधिकता तथा चित्त को एकाग्र करने का मनोयोग प्रदर्शित करती है। ऐसे व्यक्तियों में अन्तर्ज्ञान की नवीनता, स्वाभाविक नम्रता, विचार शक्ति, निरपेक्षता, रचना का कौशल, उद्देश्य, आचरण, संग्रह भाव, नियमित व्यवहार, विचारशीलता, अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के विशेष लक्षण पाए जाते हैं। तर्क कर सकना, परिस्थितियों की जाँच करना, अपने लक्ष्य को केन्द्रित करना आदि विचार प्रधान कार्य इनके लिए स्वाभाविक हैं। व्यक्तित्व के ऐसे लक्षण स्वाभाविक मानसिक प्रवाह को रोकते हैं।

कमजोर लिखावटों में सूक्ष्म अक्षर इच्छा शक्ति की कमजोरी, श्रम से बचने की भावना, आलस्य, भय, मानसिक निर्जीवता आदि कमजोर सम्भावनाओं को सूचित करते हैं।

यह अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का प्रधान लक्षण है। इसमें चिन्तन अधिक है, एकाग्र चित्त है, मितव्ययिता है, रचना की प्रवृत्ति है, उपलब्ध साधनों का सदुपयोग है, अल्प भाषण करना, अपने वास्तविक विचार को छिपा जाना, सावधानी आदि गुण पाए जाते हैं।

(२८) अक्षरों का सम आकार—लिखावट में सम आकार रीतियुक्त आचरण एवं आत्म-संयम का लक्षण है। यह व्यक्ति अवसर के अनुसार आचरण कर सकता है, प्रेरणा से उत्साह प्राप्त करता है। सावधानी से एकाग्रता व्यक्त कर सकता है। ऐसा व्यक्ति बहुधा अपने विचार वर्तमान में स्थिर रखता है, गम्भीर है, उभयमुखी प्रवृत्ति प्रदर्शित करता है, अपने उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करता है, हीनता की भावना नहीं आने देता, व्यवहार-कुशल है। इसका व्यवहार नियमित रहता है। प्रवाह को ग्रहण करता है, उतावलेपन का अवरोध करता है।

उद्योगी व्यक्तियों की लिखावट सदैव अक्षरों के सम आकार में प्रकाशित

यह अवरोध सामूहिक सस्कार सावधानी दक्षता धय, कायकुशलता का लक्षण है।

(२५) शिरोरेखा न होना—यह स्वच्छन्द आचरण है। परन्तु इसे सन्तुलित रखने के लिए एकाग्रचित्त होने की अधिक आवश्यकता पडती है। गम्भीर विचारक, जिनको अधिक लिखना पडता है और जिनके विचार सुलझे हुए हैं और जिनमे अपने विचार को सहज ही व्यक्त करने की क्षमता है बहुधा शिरोरेखाओ का सहारा नही लेते हैं।

इसमे उत्साह अधीरता कल्पना प्रेरणा प्रवाह गतिशीलता आदि लक्षण हैं। यदि लिखावट के अन्य लक्षण अस्पष्ट हैं तो असावधानी अस्पष्टता उतावलापन भी प्रदर्शित होते हैं फिर भी यह विचार प्रकाशन मे आत्मविश्वास एव स्वच्छन्दता प्रदर्शित करता है।

(२६) लिखावट का बडा आकार—इस लिखावट मे सब अक्षर बडे आकार के बने हुए होते हैं अथवा अधिकतर अक्षर बडे आकार के होते है। इससे पढनेवाला व्यक्ति आकर्षित होता है। ये अक्षर स्वच्छन्दता से चलती हुई लेखनी से लिखने मे अधिक स्थान घेरते हैं। इनके बडे आकार के समान ही ऊपर तथा नीचे की मात्राए आदि अनेक चिह्न भी बडे आकार के होते हैं। (देखिए लिखावट सख्या १४ और २३

की ओर से यह घोषणा
कि पुस्तकें लाभदायक
है बन्ध या प्रतिबन्ध

चित्र २३

लिखावट मे बडा आकार बहिर्मुखी प्रतिभा का प्रमुख लक्षण है। यह व्यक्ति अपने दिमाग पर अधिक जोर देना पसन्द नही करता और यहाँ-वहाँ घूम फिरकर अपना काम करना पसन्द करता है। इसका मन एक जगह नही लगता यह मानसिक उदारता का भी लक्षण है जिसमे मितव्ययिता की भावना नही है। यह भावना प्रधान व्यक्ति है। यह स्वच्छन्दता मे आचरण करता है। इसमे आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता की भावना अधिक रहती है। भावावेश मे बह जाना इसके लिए सहज है। इसमे कष्ट सहने की शक्ति अधिक है लिखावट का आकार शक्ति का परिचायक है। शक्तिवान होने से इसमे कल्पना सजग रहती है। अनेकानेक विषयो की ओर आकर्षित रहता है। मुसीबतो का प्रेम प्रदर्शन करने की प्रवृत्ति उत्साह अधिक आशावादी प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव भविष्य की सुखद कल्पना आदि अनेक लक्षण बड़ा

लिखावट से व्यक्त होते हैं।

लिखावट का बड़ा आकार कुछ अन्य सूचनाएं भी देता है जैसे कि नम्रता से कम दिखाई देना, एकाग्रता का अभाव, युक्तियुक्त रचनात्मक कार्य का अभाव, अभिमान दिखाने की प्रवृत्तियाँ आदि ऐसे लक्षणों की पुष्टि के लिए लिखावट के अन्य चिह्नों की जांच भी करना आवश्यक होगा।

इसके कुछ सार्वत्रिक भाव इस प्रकार हैं—आत्मप्रतिष्ठा, शक्ति का परिचय, भावुकता, बहिर्मुखी प्रवृत्ति, भावावेश, मानसिक उदारता, विविधता, निर्भीकता, प्रदर्शक स्वभाव, स्वच्छन्दता, भविष्य की कल्पना, सूझबूझ, विश्वासी, प्रभावित होने वाली प्रकृति, अनेक ओर ध्यान, कलात्मकता, प्रसन्नचित्त, अस्थिर लिखावट में अपव्यय, एकाग्रता का अभाव, सावधान लिखावट में नेत्र शिथिलता। लिखावट के अन्य लक्षणों के अनुसार ये गुण सिद्ध होते हैं।

(२७) छोटे अक्षर—सुव्यवस्थित लिखावट में छोटे अक्षरों में भी महत्ता, बुद्धि बल की अधिकता तथा चित्त को एकाग्र करने का मनोयोग प्रदर्शित करता है। ऐसे व्यक्तियों में अन्तर्ज्ञान की नवीनता, स्वाभाविक नम्रता, विचार शक्ति, निरपेक्षता, रचना का कौशल, उद्देश्य, आचरण, संग्रह भाव, नियमित व्यवहार, विचारशीलता, अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के विशेष लक्षण पाए जाते हैं। तर्क कर सकना, परिस्थितियों की जाँच करना, अपने लक्ष्य को केन्द्रित करना आदि विचार प्रधान कार्य इनके लिए स्वाभाविक हैं। व्यक्तित्व के ऐसे लक्षण स्वाभाविक मानसिक प्रवाह को रोकते हैं।

कमजोर लिखावट में सूक्ष्म अक्षर इच्छा शक्ति की कमजोरी, श्रम से बचने की भावना, आलस्य, भय, मानसिक निर्जीवता आदि कमजोर सम्भावनाओं को सूचित करते हैं।

यह अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का प्रधान लक्षण है। इसमें चिंतन अधिक है, एकाग्र चित्त है, मितव्ययिता है, रचना की प्रवृत्ति है, उपलब्ध साधनों का सदुपयोग है, अल्प भाषण करना, अपने वास्तविक विचार को छिपा जाना, सावधानी आदि गुण पाए जाते हैं।

(२८) अक्षरों का सम आकार—लिखावट में सम आकार रीतियुक्त आचरण एवं आत्म-संयम का लक्षण है। यह व्यक्ति अवसर के अनुसार आचरण कर सकता है, प्रेरणा से उत्साह प्राप्त करता है। सावधानी से एकाग्रता व्यक्त कर सकता है। ऐसा व्यक्ति बहुधा अपने विचार वर्तमान में स्थिर रखता है, गम्भीर है, उभयमुखी प्रवृत्ति प्रदर्शित करता है, अपने उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करता है, हीनता की भावना नहीं आने देता, व्यवहार-कुशल है। इसका व्यवहार नियमित रहता है। प्रवाह को ग्रहण करता है, उतावलेपन का अवरोध करता है।

उद्योगी व्यक्तियों की लिखावट सदैव अक्षरों के सम आकार में प्रदर्शित

होती है जिसमे योजना पूर्वनिर्धारण एवं प्रगति तथा उदारता का समुचित नियोजन रहता है।

इस प्रकार की लिखावट में यदि शब्दों के अंत में अक्षरों का आकार छोटा होने लगे तो निश्चय ही समझ लेना चाहिए कि यह व्यक्ति अपनी अधीरता का अवरोध कर रहा है और अपने विचार को सावधानी तथा गम्भीरता से ही व्यक्त करना चाहता है। ऐसे अक्षर अस्पष्ट हो जाने से आत्मविश्वास तथा क्रियाशीलता का ह्रास प्रकट करते हैं।

अक्षरों के सम आकार की वास्तविक शक्ति संगठन की क्रिया में है। अच्छी स्पष्ट शुद्ध तथा ससयोजित सम आकार की लिखावट वाले व्यक्ति का किसी भी कठिन परिस्थिति में विश्वास किया जा सकता है।

(२६) दाइं ओर झुकाव—लिखने का सहज गुण सीधी खड़ी हुई लम्बाकार लिखावट बनाने का है। इसमें अक्षर नीचे की रेखा पर सीधे खड़े हुए दिखाई देते हैं। भारतीय लिपियों में जहाँ शिरोरेखाएं बनाने की प्रथा है ये अक्षर ऊपर से सीधे नीचे की ओर बनते हैं।

वास्तव में प्रत्येक लिखावट ऐसी नहीं होती। कुछ लिखावटें मूल रेखा से जो कि रोमन लिपि में नीचे और भारतीय लिपियों में ऊपर होती है पीछे की ओर अथवा आगे की ओर झुक जाती हैं। पीछे की ओर का झुकाव लेखनी को बाइं ओर ले जाता है तथा आगे की ओर झुकने वाली लिखावट में लेखनी को दाइं ओर ले जाता है। अनेकानेक लिखावटों में देखा जाता है कि लेखनी कभी पीछे की ओर झुकती है और कभी आगे की ओर झुकती है और यह स्पष्ट दिखाई देता है कि लिखावट की लम्बाकार रेखाओं का झुकाव निश्चित नहीं है तथा मिश्रित है। (देखिए लिखावटें संख्या ११ से १६ तक) लिखावट में अक्षरों के आगे तथा पीछे झुकने की परिस्थिति विशिष्ट लक्षण प्रस्तुत करती है। मनोवैज्ञानिक व्याख्या में इसका महत्व अधिक है।

आगे की ओर झुकने वाली लिखावट से मनोवेग की व्यग्रता व्यक्त होती है। यह व्यक्ति अपना अन्तर्मन स्पष्ट कर देने के लिए आतुर है। इसकी भावनाओं में अवरोध नहीं है। यह जल्दी में है मिलनसार है। समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ सुगमता से व्यावहारिक सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। यह सचेष्ट है उत्साह से काम करता है। पुरानी बातों को भूलकर भविष्य की कल्पना करता है। इसमें आत्मविश्वास है अपने ऊपर भरोसा है। अपनी प्रेरणा से काम करता है। जल्दी लिखता है तथा अपने कार्यक्रम में आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है। यह लिखावट की भावना प्रधान है। रागात्मक मनोवृत्ति प्रदर्शित करती है। ऐसे व्यक्ति अनेकानेक कार्यक्रम बनाते हैं और उनको मनचाहे छोड़ भी देते हैं और किसी नये काम में लग जाते हैं। (देखिए लिखावट संख्या १६)

आग की ओर मुड़ने वाली लिखावट लिखने की गति प्रदर्शित करती है। बहुधा यह लिखावट आगे की ओर मुड़ती नहीं है। यह लिखने के आवेग में आगे की ओर खिंचती है। लिखनी अपनी प्रगति में आगे की ओर भागती है और लम्बा बार साथ अक्षरों को अपने दाईं ओर झुकाती जाती है। इसकी तुलना इस प्रकार की जाती है कि जब कोई व्यक्ति जल्दी भागता है तब उसके शरीर का ऊपरी भाग स्वतः आगे की ओर चल जाता है। इसी प्रकार यह व्यक्ति किसी व्यक्ति तथा परिस्थिति से मिलने के लिए स्वतः अपना हाथ आगे बढ़ाता है।

अतीन्द्रिय कलाओं के सौन्दर्य पक्ष एवं पुरातात्त्विक विचारों, ~~में लोकमान्यों~~ दार्शनिक व्याख्याओं और मूर्तिकला

चित्र २४

अध्यवसाय उत्साह परिश्रम की शक्ति नेतृत्व की भावना बहिर्मुखी प्रवृत्ति निर्भीकता मनोवेग की प्रधानता गतिशीलता उद्वेग आवेश प्रसन्नचित्त मिलनसार रागात्मक मनोवृत्ति मौलिकता आत्मविश्वास आदि लक्षण इस प्रकार की लिखावट में प्रदर्शित हो सकते हैं।

(३०) पीछे झुकनेवाली लिखावटें—ऐसी लिखावटों में अक्षरों की लम्बी बार रेखाएं जिनके अधिकतर आधार अक्षर खड़े होते हैं नीचे के भाग में आगे की ओर बढ़ता हैं और ऊपर के भाग में मालूम पड़ती हैं कि अक्षर पीछे की ओर झुके हुए हैं। रोमन लिपि में मूल रेखा में इन लम्बाकार रेखाओं का कोण बाईं ओर ९० डिग्री से कम रहता है।

यह पीछे की ओर का झुकाव हस्तलिपि के स्वच्छन्द प्रसार में अवरोध का चिह्न है। लिखने वाला व्यक्ति आगे बढ़ने से हाथ रोकता है। (देखिए लिखावट संख्या ११)

मानसिक द्वन्द्व में भी यह अवस्था आती है। कुछ व्यक्ति अपने शिक्षा काल में ही अपने बड़ों की इस प्रकार की लिखावट की नकल करना सीखते हैं। यह प्रारम्भिक अभ्यास है। प्रारम्भिक अभ्यास के कारण यदि लिखावट पीछे की ओर झुकती है तब उसमें गति विद्यमान रहती है अक्षर झुके हुए होते हैं और अन्य अवरोधक चिह्न प्राप्त नहीं होते।

इस प्रकार की लिखावट के सूचक मनोवैज्ञानिक लक्षण हैं। फिर भी ऐसी लिखावट के उदाहरण में शंका की भावना तथा सन्देह की दृष्टि सदैव ही सम्भावित

रहती है। इसकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या में सावधानी, सहज सत्य को छिपाने की वृत्ति, आत्मरक्षा की भावना, आलोचना से डरना, अन्धविश्वास, आत्मविश्वास की कमी, संग्रही स्वभाव आदि अन्य इस प्रकार के लक्षण प्रधान रहते हैं।

फिर पीछे झुकने वाली लिखावट प्रचलित प्रथा के विपरीत है तथा ऐसा लिखने वाले व्यक्ति के मानसिक गठन में भी ऐसे लक्षण पाए जाने की सम्भावना रहती है।

यह लिखावट में अवरोध का एक निश्चित चिह्न है। लिखावट में अवरोध के अन्य अनेक चिह्न होते हैं। साधारणतया सावधानी के विशिष्ट लक्षण हैं। इसका एक उदाहरण लिखावट संख्या २३ में है।

यह लिखावट स्थिर है, स्पष्ट है तथा एक अच्छे स्वस्थ हाथ से लिखी गई है। आगे की ओर थोड़ा झुकने से प्रगतिशील लिखावट दिखाई देती है। परन्तु इसमें अक्षर टी को काटने वाली छोटी समतल रेखाएं अक्षर की खड़ी रेखा तक आकर रुक जाती हैं, उसको काटने के लिए आगे नहीं बढ़ती। इसका साधारण क्रम अक्षर की खड़ी रेखा को काटता है तथा आगे बढ़ता है जैसा कि रोमन लिपि की अन्य अनेक लिखावटों में देखने को मिलता है। इस प्रकार का व्यक्ति अपने कार्य में आगे बढ़ने में सावधानी, सतर्कता पर विशेष ध्यान देता है। उसके उत्साह तथा अन्य प्रगतिवादी लक्षणों पर आवश्यकतानुसार हाथ रोकने का अवरोध रहता है। ऐसे व्यक्ति जो कुछ भी कार्य करते हैं सोच विचारकर, युक्ति से तथा अच्छी तरह से करना चाहते हैं। जोर नहीं देते। नियम-पालन के लिए इन व्यक्तियों का विश्वास किया जा सकता है। एक अन्य लक्षण भी इसी प्रकार का है जो कि इस लिखावट में दिखाई देता है। शब्द में अन्तिम अक्षर की अन्तिम रेखा स्वाभाविक रूप में दाएं ओर आगे नहीं बढ़ती। यह भी लिखावट में अवरोध का विशेष चिह्न है और ऊपर दिए गए विवरण का समर्थक है।

इस लिखावट के विशिष्ट गुण इस प्रकार हैं: अवरोधसूचक, सावधानी, संदेहजनक, अनमना, हिचक, सहज सत्य का छिपाना, अस्वाभाविक सतर्कता, रहस्य, आत्मरक्षा की भावना, संकोच, आलोचना से डरना, स्वार्थ, कपट, अन्ध-विश्वास का छोड़ सकना, स्वनियन्त्रण, आत्मविश्वास की कमी। लिखावट के अन्य प्रदर्शित लक्षणों के साथ इनका समावेश किया जा सकता है।

(३१) अनिश्चित झुकाव—इसका आशय यह है कि लिखावट के कुछ अक्षर पीछे की ओर झुके हुए, कुछ सीधे लम्बाकार खड़े और कुछ आगे की ओर झुके मिश्रित भाव में रहते हैं।

इस प्रकार की लिखावट में विविधता है, चंचलता है, भावुकता है जो कि लिखावट के सम्पूर्ण चरित्र द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।

इस लिखावट के द्योतक चिह्न हैं: अव्यवस्थता, अस्थिरता, शारीरिक

पक्षावट बढ़ावस्था असमान आचरण परिवर्तनशीलता मानसिक अपरिपक्वता अच्छे-बुरे के ज्ञान का अभाव रुचि स्थान स्पष्ट न होना मानसिक उथल-पुथल। यदि लिखावट ही इस प्रकार का है जो कि लिखावट के अन्य उदाहरणों में देखी जा सकती है तो अविश्वसनीय छल-कपट असत्य भाषण आदि चरित्र की शिथिलता के लक्षण समझना आवश्यक है।

(३२) सीधे खड़े अक्षर अनुशासित में विश्वास करते हैं। नतिकता दृढ़ एवं स्वतन्त्र विचार आत्मसंयम समन्वय आत्मनियंत्रण परिपक्वता गम्भीरता स्वावलम्ब नीति एवं रीतियुक्त निर्णय हृदयापन आत्मसम्मान की भावना निर्पक्षता की भावना, न्यायप्रियता अल्पभाषण आदि लक्षण व्यक्त होते हैं।

साथ खड़े अक्षरों की बनावट में सम आकार की लिखावट की भावना है। यह भी समकोण पर जा सकते हैं जिसमें अनावश्यक उत्साह एवं अवरोध नहीं है।

इस प्रकार के अक्षर यदि अधिक लम्बे हों अथवा ऊपर या नीचे की मात्राएं अधिक लम्बाकार हों तो विचार शक्ति एवं प्रदर्शन शक्ति की अधिकता समझना चाहिए। इससे आभास करता है कि उसमें सामान्य व्यक्ति से अधिक बुद्धि है ज्ञान है एवं क्रियाशीलता है। यदि लिखावट की गति अच्छी हो तो ये गुण सिद्ध हैं।

(३३) गोलाकार लिखावटें—गोलाकार रेखाएं बनाना सहज होता है। यह कोमलता का साधारण लक्षण है। गोलाकार लिखावटें जीवन का सहज सुगम मार्ग अपनाना पसन्द करता है। ऐसी लिखावटें अपनी स्वाभाविक चतुरता से अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहती हैं।

गोलाकार लिखावट में कठोरता रखना दबाकर लिखना अवरोध का लक्षण है। ऐसा व्यक्ति अपनी भावना का प्रदर्शन नहीं करता। अपने विचार एवं भाव को रहस्यमय रखता है तथा वास्तविकता व्यक्त नहीं होने देता।

कोमल लिखावट में गोलाकार अक्षर सहज स्वभाव को व्यक्त करते हैं। ये किसी प्रकार की उग्रता सहन नहीं करते। यह बल से नहीं बुद्धि से अपना निर्वाह करना चाहते हैं। मधुर अभिरुचि से सामाजिक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। कोमल और गोलाकार रेखाएं कोमल अभिरुचि के चिह्न हैं।

कोमल अभिरुचि कोमल मानवीय प्रवृत्तियां सहनशीलता मन्दप्रवाह ग्राम्य स्वभाव बौद्धिक सहानुभूति नम्र स्वभाव हास्य विनोद मत्री की भावना प्रेम-व्यवहार सदाचार आस्था नैतिक मर्यादा मधुर स्वभाव आदि प्रदर्शन चरित्र के लक्षण हैं। यदि लिखावट स्थिर है तो चरित्र के स्थिर एवं स्वस्थ लक्षण प्रस्तुत होंगे अन्यथा अन्य अपरिपक्व लक्षण व्यक्त होंगे।

(३४) कोणाकार अक्षर—लिखावट में कोणों की अधिकता स्वभाव में कठोरता की सूचक है। भारी लिखावट में कोण उग्रता तथा कटुता के लक्षण हैं।

ऐसे व्यक्ति अपने विचारों पर दृढ़ रहते हैं। ये किसी तरह से दबने वाले नहीं। ये लोहे की तरह हैं। टूट जाएँगे मगर झुकेंगे नहीं। अक्सर इनके हठ में स्वेच्छा

चित्र २८

चारी स्वभाव प्रदर्शित होने लगता है। विरोध इनको असहनीय है। क्रोध इनका स्वभाव है (लिखावट संख्या २४)। इस प्रकार के व्यक्ति स्वभाव से तार्किक निर्भीक उग्र स्वभाव सचेत होते हैं। इनमें तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता होती है।

परन्तु ऐसी बहुत कम लिखावटें दिखाई देती हैं जिनमें अधिकतर कोण दिखाई देते हैं। अधिकतर ऐसी लिखावटें मिलती हैं जिनमें कोण तथा गोलाकार रेखाएँ सम्मिलित रहती हैं।

रेखाएँ मिश्रित और गोलाकार—यह सम्मिश्रण उचित मात्रा में तथा उचित स्थानों पर सन्तुलित मानसिक गठन प्रदर्शित करता है। जैसी आवश्यकता हो न्यायोचित आचरण जिसमें बुद्धिमत्ता तथा भावुकता का सामंजस्य प्रदर्शित होता रहता है। ऐसे व्यक्ति मैत्री की भावना, सहृदयता, मौलिक कल्पना, वाक्चातुर्य के साथ ही परिश्रम, आत्मसम्मान, विचार शक्ति तथा क्रियाशीलता का परिचय देते हैं। सामाजिक जीवन में सफल निर्देशन इनकी रग रग में होता है। इनके व्यक्तित्व की मानवीयता तथा गम्भीरता से अन्य अनेक व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। अपनी प्रखर बुद्धि के द्वारा अपने मनोयोग का सदुपयोग ऐसे व्यक्ति जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सफलतापूर्वक करते रहते हैं।

यदि इस प्रकार की लिखावटों में तथा कोणाकार लिखावटों में रेखाएँ लगने के स्वभाव में भारी हैं तो निश्चय ही यह व्यक्ति हठी और स्वेच्छाचारी है। इससे तर्क करना युक्तियुक्त नहीं है। इससे सहयोग प्राप्त करने का माध्यम युक्तिपूर्ण होना आवश्यक है।

(५) **हस्ताक्षर**—हस्ताक्षर का प्रथम अक्षर अलग और स्पष्ट तथा अन्य अक्षर मिले हुए। यह निष्कृष्टता एवं न्यायप्रियता का चिह्न पाया गया है। यह व्यक्ति किसी भी समस्या का निपटारा में लग सकता है। अपनी समझ से यह व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को अपने तथा समाज के अन्य आचरणों से परे समझता है। यदि यह प्रथम अक्षर आकार में अन्य अक्षरों से बड़ा हो तो आत्मसम्मान की भावना सूचित करता है और दूसरे व्यक्तियों से सहयोग की भावना चाहता है। यदि छोटा न हो तो ऐसा व्यक्ति शिष्टता सम्पन्न है तथा सामाजिक है।

अनेक व्यक्ति हस्ताक्षर के नीचे रेखा अथवा उसके नीचे दो तथा अनेक प्रकार की रेखाएँ खींचते हैं। यदि यह रेखा सीधी और स्पष्ट हो जैसा कि उदाहरण

में है तो लेखक के विचार का अन्तिम निर्णय सूचित करती है। वास्तव में यह रेखा एक सजावट की तरह है और इसका आशय मूर्खता या आत्मश्लाघा तथा प्रदर्शनकारिता ही है। इस रेखा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मानव स्वभाव ही ऐसा है जिसमें वास्तविकता से आगे आचरण करना स्वाभाविक है। ये रेखाएं विविध प्रकार की होती हैं तथा इनके व्यक्तिगत चरित्रांकन किये जा सकते हैं।

(३६) यथार्थ छोटे चिह्न—वस्तुतः लेखक लिखावट के अनेक छोटे चिह्नों की अवहेलना करते हैं जैसे मात्राएँ, अनुस्वार आदि। परन्तु यह निश्चित है कि ऐसे लोग सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते—नीतियुक्त सुसंयोजित आचरण में छोटी छोटी बातें बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं। शीघ्रता में लिखना छोटे चिह्नों को छोड़ जाने के लिए उचित नहीं है। छोटे चिह्नों का उपयुक्त प्रयोग चरित्र निर्माण कार्य में प्रभावशाली है।

(३७) अक्षरों के अंतिम चिह्न पूर्ण—अन्तिम रेखाएं एवं चिह्न यदि पूर्ण हैं और अधकटे नहीं हैं तो किसी काम को पूरी तरह करने की शक्ति एवं वृत्ति प्रदर्शित करते हैं। यदि ये छोड़ दिए गए हैं अथवा अपूर्ण एवं अस्पष्ट हैं तो लेखक धैर्यपूर्वक अपना काम पूरा नहीं कर सकता। अपना वचन भी पूरा नहीं कर सकता। इसमें उतावलापन है तथा विश्वसनीय क्रिया में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। इसके लिए लिखावट एक सम्पूर्ण क्रिया है जो कि यदि अधूरी रह गई तो किसी तरह से भी काम पूरा नहीं हुआ यह निश्चित है।

(३८) मानव-स्वभाव—मानव-स्वभाव एक गहन परिस्थिति है। इसमें अनेक तत्त्व हैं जो एक-दूसरे से अनिवार्य रूप में सम्बन्धित तथा उलझे हुए हैं। जीवन के प्रारम्भ में ही व्यक्ति के मानस पर अनेकानेक प्रभाव पड़ते हैं और इन सबका असर उसके ऊपर अनिवार्य रूप से बना रहता है। जिस तरह से एक डाक्टर किसी भी बीमारी के निदान के लिए शरीर की अनेकानेक अवस्थाओं का विश्लेषण करता है और अन्त में उनके योग से किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है उसी प्रकार मनोवेत्ता निर्देशक भी व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाले अनेकानेक लक्षणों का विश्लेषण करके व्यक्तिगत योग पर पहुंचता है।

प्रत्येक व्यक्ति एक अनोखा उदाहरण है जिसमें अनेकानेक व्यक्तिगत लक्षणों का सम्मिश्रण है। इन लक्षणों को पहचानना उनकी नाप-तोल करना ही व्यक्तित्व अध्ययन का लक्ष्य है। हस्तलिपि विज्ञान के द्वारा अनेकानेक लक्षण लिखावट की रचना से प्रकाशित होते हैं। एक साधारण-सा प्रश्न है, परन्तु परम आवश्यक प्रश्न है। एक व्यक्ति जैसी लिखावट लिखता है वैसी ही क्यों लिखता है किसी अन्य प्रकार की लिखावट क्यों नहीं लिखता। इस प्रश्न के उत्तर में उस लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व का वास्तविक चित्र मिलना चाहिए। यही हमारा प्रयास है।

ऐसे व्यक्ति अपने विचारों पर दृढ़ रहते हैं। ये किसी तरह से दबने वाले नहीं। ये लोहे की तरह हैं। टूट जाएंगे मगर झुकेंगे नहीं। अक्सर इनके हठ में स्वच्छा

चित्र २८

चारी स्वभाव प्रदर्शित होने लगता है। विरोध इनको असहनीय है। क्रोध इनका स्वभाव है (लिखावट संख्या २४)। इस प्रकार के व्यक्ति स्वभाव से तार्किक निर्भीक उग्र स्वभाव सचेत होते हैं। इनमें तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता होती है।

परन्तु ऐसी बहुत कम लिखावटें दिखाई देती हैं जिनमें अधिकतर कोण दिखाई देते हैं। अधिकतर ऐसी लिखावटें मिलती हैं जिनमें कोण तथा गोलाकार रेखाएं सम्मिलित रहती हैं।

रेखाएं मिश्रित और गोलाकार—यह सम्मिश्रण उचित मात्रा में तथा उचित स्थानों पर सन्तुलित मानसिक गठन प्रदर्शित करता है। जैसी आवश्यकता हो न्यायोचित आचरण जिसमें बुद्धिबल तथा भावुक नम्रता का सामंजस्य प्रदर्शित होता रहता है। ऐसे व्यक्ति मैत्री की भावना सहृदयता मौलिक कल्पना वाक्य चातुरी के साथ ही परिश्रम आत्मसम्मान विचार शक्ति तथा क्रियाशीलता का परिचय देते हैं। सामाजिक जीवन में सफल निर्देशन इनकी देख रेख में होता है। इनके व्यक्तित्व की मानवीयता तथा गम्भीरता से अन्य अनेक व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। अपनी प्रखर बुद्धि के द्वारा अपने मनोवेग का सदुपयोग ऐसे व्यक्ति जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सफलतापूर्वक करते रहते हैं।

यदि इस प्रकार की लिखावटों में तथा कोणाकार लिखावटों में लम्बाकार रेखाएं लेखनी के दबाव से भारी हैं तो निश्चय ही यह व्यक्ति हठी और स्वच्छाचारी है। इससे तर्क करना युक्तियुक्त नहीं है। इससे सहयोग प्राप्त करने का माध्यम युक्तिपूर्ण होना आवश्यक है।

(३५) हस्ताक्षर—हस्ताक्षर का प्रथम अक्षर अलग और स्पष्ट तथा अन्य अक्षर मिले हुए। यह निस्पृहता एवं न्यायप्रियता का चिह्न पाया गया है। यह व्यक्ति किसी भी समस्या को निष्पक्षता से देख सकता है। अपनी समझ से यह व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को अपने तथा समाज के अन्य आचरण से परे समझता है। यदि यह पहला अक्षर आकार में अन्य अक्षरों से बड़ा हो तो आत्मसम्मान की भावना सूचित करता है और दूसरे व्यक्तियों से सत्कार की भावना चाहता है। यदि ऐसा न हो तो उसका दृष्टिकोण सम है तथा सामाजिक है।

अनेक व्यक्ति हस्ताक्षर के उपरान्त अथवा उसके नीचे एक तथा अनेक प्रकार की रेखाएं खींचते हैं। यदि यह रेखा सीधी और स्पष्ट हो जैसी कि उदाहरण

१ म है ता लखक के विचार का अन्तिम निर्णय सूचित करता है। वास्तव में यह रेखा एक सजावट की तरह है और इसका आमिक मूल लक्षण यश की लालसा तथा प्रदर्शनकारिता ही है। इस रेखा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मानव स्वभाव ही ऐसा है जिसमें वास्तविकता से आगे आचरण करना स्वाभाविक है। ये रेखाएँ विविध प्रकार की होती हैं तथा इनके व्यक्तिगत परिवर्तन किये जा सकते हैं।

(३६) यथार्थ छोटे चिह्न—बहुत से लेखक लिखावट के अनेक छोटे चिह्नों की अवहेलना करते हैं जैसे मात्राएं अनुस्वार आदि। परन्तु यह निश्चित है कि ऐसे लोग सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते—रीतियुक्त सुसयोजित आचरण में छोटी छोटी बातें बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं। शीघ्रता में लिखना छोटे चिह्नों का छोड़ जाने के लिए उचित नहीं है। छोटे चिह्नों का उपयुक्त प्रयोग चरित्र निर्माण कार्य में प्रभावशाली है।

(३७) अक्षरों के अन्तिम चिह्न पूर्ण—अन्तिम रेखाएं एवं चिह्न यदि पूर्ण हैं और अधकटे नहीं हैं तो किसी काम को पूरी तरह करने की शक्ति एवं वृत्ति प्रदर्शित करते हैं। यदि ये छोड़ दिए गए हैं अथवा अपूर्ण एवं अस्पष्ट हैं तो लेखक धैर्यपूर्वक अपना काम पूरा नहीं कर सकता। अपना वचन भी पूरा नहीं कर सकता। इसमें उतावलापन है तथा विश्वसनीय क्रिया में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। इसके लिए लिखावट एक सम्पूर्ण क्रिया है जो कि यदि अधूरी रह गई तो किसी तरह से भी काम पूरा नहीं हुआ यह निश्चित है।

(३८) मानव-स्वभाव—मानव-स्वभाव एक गहन परिस्थिति है। इसमें अनेक तत्त्व हैं जो एक-दूसरे से अनिवार्य रूप से सम्बन्धित तथा उत्पन्न हुए हैं। जीवन के प्रारम्भ से ही व्यक्ति के मानस पर अनेकानेक प्रभाव पड़ते हैं और उन सबका असर उसके ऊपर अनिवार्य रूप से बना रहता है। जिस तरह से एक डाक्टर किसी भी बीमारी के निदान के लिए शरीर की अनेकानेक अवस्थाओं का विश्लेषण करता है और अन्त में उनके योग से किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है उसी प्रकार मनोवेत्ता निर्णय भी व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाले अनेकानेक लक्षणों का विश्लेषण करके व्यक्तिगत योग पर पहुंचता है।

प्रत्येक व्यक्ति एक अनोखा उदाहरण है जिसमें अनेकानेक व्यक्तिगत लक्षणों का सम्मिश्रण है। इन लक्षणों को पहचानना उनकी नाप-तोल करना ही व्यक्तित्व अध्ययन का ध्येय है। हस्तलिपि विज्ञान के द्वारा अनेकानेक लक्षण लिखावट की रचना में प्रकाशित होते हैं। एक सीधा-सा प्रश्न है परन्तु परम आवश्यक प्रश्न है। एक व्यक्ति जैसी लिखावट लिखता है वैसी ही क्यों लिखता है किसी अन्य प्रकार की लिखावट क्यों नहीं लिखता इस प्रश्न के उत्तर में उस लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व का वास्तविक चित्र मिलना चाहिए। यही हमारा प्रयास है।

इसके लिए जो प्रयोग सिद्ध हो चुके हैं उनका ज्ञान उत्सुकता मौलिक कल्पना तथा अभ्यास से आवश्यक है। लिखावट के अनेक तत्वों में पाए जाने वाले चरित्र के समान व्यक्ति के प्रधान निर्देशक एवं विश्वासयुक्त लक्षण पाए जाते हैं।

लिखावट के भौतिक चिह्नों का मनन तथा उनके मनोवैज्ञानिक विवरण का चिंतन समन्वय हस्तलिपि के द्वारा चरित्रांकन के लिए पर्याप्त है। तथ्य पर ध्यान देना चाहिए। प्रेरणाजनक कल्पना का प्रवाह उतावलापन आदि आचरण इस कार्य में बाधक हैं।

८

विलक्षण लिखावटें—कुछ व्यक्तिगत अनुभव

संसार बहुत बड़ा है और इसमें अनगिनत व्यक्ति हैं—इतने कि जिनका आदि-अन्त भी नहीं। बालक युवा और वृद्ध स्त्री और पुरुष सब हैं और मनोविज्ञान के नाते सब अलग अलग व्यक्तिगत इकाइयां हैं। इन सबका अपना निजी व्यक्तित्व है। सब अपने-अपने क्षेत्र में वातावरण में, समाज में अपना काम करते हैं अपना स्थान बनाते हैं और अपने चरित्र की मौलिकता प्रदर्शित करते रहते हैं। सबकी निजी विशेषताएं और समस्याएं हैं।

इन सबकी विशेषताओं को समझना अथवा यह कह सकना कि ऐसा सम्भव है वास्तव में बहुत कठिन है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि कुछ मोटा-सा वर्गीकरण किया जाए।

बहुत-से लोग तो ऐसे हैं और इसमें संसार की अधिकतर जनता आ जाती है जो बस्तुतः साधारण व्यक्तित्व का है। यह है जनता का सामान्य मनुष्य। यह बहुत बड़ा समूह है जिसमें कोई खास बात नहीं है। कोई इतनी विशेषता नहीं है जिससे स्तर सामान्य स्तर से ऊपर उठा हो। वस तो ये सब व्यक्ति अपने अपने क्षेत्र में अपनी अपनी जगह बनाए हुए होते हैं परन्तु कोई कुछ अधिक प्रखर-बुद्धि है कोई कम कुशाग्र-बुद्धि है। कोई आलस्य में आगे बढ़ा हुआ है तो कोई किसी शीघ्रता में, चपलता में छल-कपट में या कामचोरी में आगे बढ़ा हुआ है। परन्तु इससे समाज के वातावरण पर कोई अधिक असर नहीं पड़ता। ऐसे व्यक्तियों का चरित्र चित्रण करते में उनके व्यक्तित्व के लक्षण इधर उधर में तलाश करने पड़ते हैं। कभी चमक नहीं दिखाई देती।

इसके बाद ऐसे व्यक्तियों का वर्ग है जो सर्वसाधारण स्तर से नीचे है। ये ऐसे लोग हैं जो व्यक्तिगत चरित्र के सामान्य लक्षणों में अपूर्ण हैं हीन हैं। या तो इनकी बुद्धि अंक सामान्य मानदण्ड से कम है या यह व्यक्तिगत चरित्र के किसी लक्षण में कम है या उसका अभाव है। अपनी इस प्रकार की कमी के कारण इस

प्रकार के व्यक्ति छिपे हुए व्यक्ति कहलाते हैं और इनके जो भी अच्छे मनोरम गुण हैं वे सामने नहीं आते। मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ इन व्यक्तियों का व्यक्तित्व निर्धारण करते हैं और इनमें सुधार लाने का प्रयास करते हैं। कम से कम उनका निदान करने के प्रयत्न करते हैं।

जिन लोगों से हम प्रभावित होते हैं वे हैं बचे हुए वे व्यक्ति जिनमें महानता के कुछ लक्षण प्रदर्शित होते हैं। बहुधा उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है उनकी बुद्धि की प्रखरता सामाजिकता आत्मबल क्षमता क्रियाशीलता मौलिक कल्पनाशीलता आदि अनेकानेक गुण ऐसा व्यक्तित्व प्रस्तुत करते हैं जिसका हम सहज ही अभिनन्दन करते हैं। उनकी वन्दना करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इनकी निजी विशेषताओं की खोज करने का प्रयास मानव-स्वभाव की दुरूहता की ओर ले जाता है। ऐसे व्यक्तियों में कुछ इस प्रकार की विशालता होती है जिससे हम प्रभावित हुए बिना नहीं रहते।

मेरा सर्वप्रथम सम्पर्क हुआ था इस प्रकार के पहले महान् व्यक्ति से सन् १९३९ में। आकाशवाणी स्टेशन लखनऊ में मुझे भाग्य से नौकरी मिल गई थी। नियुक्ति अस्थायी थी परन्तु थी आकर्षक। यह वहां के नाटक विभाग में थी जिसके छोटे अधिकारी स्वर्गीय श्री शौकत थानवी थे। यह नौकरी ठेके पर होती थी मासिक वेतन पर नहीं। और नियुक्ति पत्र पर हस्ताक्षर होते थे स्टेशन संचालक के। स्टेशन संचालक थे श्रीमान् एन ए एस लक्ष्मण। कभी इनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था केवल नाम सुना था। जब मुझे नियुक्ति पत्र दिया गया तब इनके पहले दर्शन हुए। यह व्यक्तिगत परिचय नहीं था—केवल उनके हस्ताक्षर से सामना हुआ था। लिखावट उदाहरण संख्या २६ में प्रस्तुत है।

Yours faithfully

For and on behalf of the
Governor General in Council

चित्र २६

बाद में इस कार्यालय में मुझे कुछ अस्थायी टाइप का काम भी करना पड़ा। इस समय मेरे सामने वहां के अधिकारियों के लिखे हुए पत्र भी टाइप के लिए आया करते थे। हस्तलिपियों की विविधता से भी यह मेरा पहला सम्पर्क

था। कुछ लिखावटें ऐसी होती थीं जिनको टाइप करने में आनन्द आता था। ये सुन्दर स्पष्ट और गोल होती थीं और इनको पढ़ना सहज होता था परन्तु अनेक लिखावटें ऐसी होती थीं जिनको देखते ही मन बैठ-सा जाता था। इस तरह की लिखावटों में [illegible] महोदय की लिखावट भी थी। इनकी सुन्दर लिखावट के अक्षर प्रायः एक इंच ऊँचे होते थे और अक्षरों की बनावट बिल्कुल सीधी खड़ी रेखाएँ होती थी। इस तरह से वह एक पूरा कागज प्रायः छः अथवा आठ सतरों में भर देते थे।

जब सबसे पहले इस तरह की लिखावट टाइप के लिए मेरे पास पहुँची तो मैं समझ गया कि आज नौकरी का अन्त है। साथ ही इनका चपरासी भी आया और उसने कहा कि बड़े साहब ने बुलाया है। इस प्रकार की लिखावट लिखनेवाले महापुरुष को देखना तो था। अतः इनके सामने प्रस्तुत हुआ। वह मेरी कठिनाई की कल्पना पहले से ही किये हुए थे और उन्होंने मुझे अपनी लिखावट पढ़ना सिखाया। इसके बाद उनके करीब पहुँचने के अनेक अवसर मिले।

आज बीस वर्ष से अधिक हो चुके हैं विविध प्रकार की लिखावटें देखते हुए और उनका व्यक्तिगत परिशीलन करते हुए परन्तु न तो इस प्रकार की कोई दूसरी लिखावट देखने को मिली और न श्री लक्ष्मणन जैसा कोई व्यक्ति ही मिला। आज तक यह भी समझ में नहीं आया कि उनके चरित्र में ऐसी कौन-सी शक्ति थी अथवा विशेष लक्षण था जिसके कारण यह कहा जा सके कि वह इस प्रकार की लिखावट लिखते थे अथवा इस प्रकार के हस्ताक्षर करते थे जैसे कि प्रस्तुत हैं।

उनको जाननेवाले सब लोग जानते थे कि उनका व्यक्तित्व विशाल था। वह उत्साह, साहस, निर्भीकता की मूर्ति थे। वह जमाना अंग्रेजी राज्य का था। दूसरा महायुद्ध प्रारम्भ हो गया था। गोरों के व्यवहार से श्री लक्ष्मणन बहुत ही कुढ़ते थे। परन्तु यदि किसी ओर से भी थोड़ा अशिष्ट व्यवहार का संकेत होता था तो उसका उत्तर तुरन्त ही देते थे। किसी की इतनी मजाल नहीं थी जो ससम्मानता से उनका सामना करने का साहस सहज ही कर सके। उनके व्यवहार में सब तरफ से विशालता थी—क्रियाशीलता, सहृदयता, उदारता, शासन, आयोजन सभी सर्वगुण-श्रेष्ठ एवं महान् थे। हस्ताक्षर में इतने बड़े आकार की २१ समानान्तर रेखाएँ खींचना और प्रत्येक हस्ताक्षर में सबको एक-सा बनाने में विधिवत् क्रिया, धैर्य और परिपूर्णता का अपूर्व समागम था जो कि एक साथ ही गम्भीर विचार, निर्णय, निष्ठा और चतुर क्रियाशीलता प्रदर्शित करते हैं।

विलक्षण लिखावट से मेरा पहला परिचय था जो लिखावटों के अध्ययन का व्यसन बनकर रह गया।

सन् १९४२ में एक दूसरे अधिकारी के सम्पर्क का काम करने की

नियुक्ति प्राप्त हुई। यह काम दिल्ली म था। अधिकारी अग्रज था। भारतीय सरकार के मत्रालय म। यह श्रीमानुजी मुझको शीघ्रलेख दिया करत थे। मैं इनका शीघ्रलेखक था। कभी तो इनके शीघ्रलेख उनके अपन मन्त्रशासन विषयक हुआ करते थे और कभी-कभी व्यक्तिगत चरित्र चित्रण क छोट विवरण। मैं दखता था कि इनके पास अनक और विभिन्न विभागा से फाइलें आनी रहती थी जिनम अनेकानेक अधिकारिया क हाथ के लिखे हुए लेख प्रतिवेदन आदि हुआ करते थे। इनका निरीक्षण करते हुए यह व्यक्तिगत चरित्र चित्रण बाद जाते थे।

य लेख बहुत ही गुप्त होते थे। किसके विषय म हैं यह मुझ कभी पता नहीं चला। केवल जो दिया जाता था वह मुझे मिलता था टाइप करने के लिए।

बाद म पता चला कि अनेकानेक अधिकारिया की लिखावटें होनी था। इन फाइलो पर और इस तरह से हस्तलिपि विज्ञान के द्वारा उनके व्यक्तिगत परन्तु गोपनीय चरित्राकन लिखे जाते थे। अभिप्राय यह था कि कौन सा व्यक्ति कितना विश्वसनीय है उसका कितना और किस प्रकार के काय पर विश्वास किया जा सकता है। स्वेच्छा से निणय करने की शक्ति कितनी है प्रशासन की क्षमता कितनी है निस्पृहता कितनी है कूटनीति कितनी है आदि। इस प्रकार की रिपोर्टों पर ऊच तथा विशिष्ट पदा पर अफसरा की नियुक्ति की जानी थी।

इंगलैण्ड वापस जाते समय हमारे य अधिकारी मुझ कुछ हस्तलिपि विज्ञान का साहित्य दे गए। कुछ नोटस थे हस्तलिपि विज्ञान के मूल तत्वो के विषय म। तब इस विषय का पहला परिचय मिला। बाद म उन्होने मुझे कुछ अधिकृत साहित्य भी इंग्लैण्ड से भेजा जो आज भी काम आता है। इसके बाद लिखावटो की तलाश निरन्तर होती रही और दूसरी एक लिखावट मिली जिसका चित्र लिखावट सख्या २७ म प्रस्तुत है।

चित्र २७

इसका पहला चित्र श्री दुर्गादत्त पंत के हस्ताक्षर हैं और दूसरा उनकी सहज लिखावट का उदाहरण है।

हस्ताक्षर एक चक्रव्यूह के समान हैं जिसमें प्रवेश पा सकना दुरूह है।

श्री पंतजी मसूरी के पास एक पाठशाला में मुख्य शिक्षक थे। शहर से दूर हिमालय पर्वत की गहराई में पाठशाला स्थित थी और उसके निकट ही उनका बँगला था जिसमें उनका प्रायः सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हुआ था। अधिकतर समय अध्ययन में तथा चिंतन में व्यतीत हुआ था। आत्म चिन्तन का विशेष रुचि थी या बन गई थी।

हस्तलिपि में व्यक्त है कि श्री पंतजी बड़े ही प्रतापवान् विचारवान्, जीवन शक्तिवाले और दृढ़ आत्म विश्वास वाले व्यक्ति हैं। इनके जीवन अथवा विचार क्रिया की शैली शुद्ध सबल और स्पष्ट है निर्णय निश्चयात्मक है।

यह एक दूसरा महान् व्यक्तित्व था जिसने प्रभावित किया और उनके हस्ताक्षर ने पुनः विश्लेषणा की समस्या प्रस्तुत कर दी जो आज तक वास्तव में अच्छी तरह से सुलझ नहीं सका है। स्वाक्षरों का संचय करना एक बहुत ही मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद प्रिय कार्य कहा जाता है। बालकों तथा युवा विद्यार्थियों को बहुधा स्वाक्षर प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। श्रेष्ठ व्यक्ति भी उनको अपने स्वाक्षर प्रदान कर दिया करते हैं। यह स्वाक्षर-पुस्तिका बहुमूल्य तथा रखने की अमूल्य वस्तु है। मुझे इन स्वाक्षरों की वास्तविक आवश्यकता रही है। और साथ ही यह देखने को भी कि यह महान् व्यक्ति लिखते कम हैं तथा इनके अन्य आचरण कम हैं।

एक बालक को स्वाक्षर दे देना सहज है। उसका स्वार्थ केवल स्वाक्षर सम्बन्ध में है परन्तु एक प्रौढ़ हस्तलिपि विज्ञान के विद्यार्थी को अपनी लिखावट का स्वलिखित उदाहरण दे देना दूसरी बात है।

अनुभव ने यह सिखाया कि कुछ लोग यद्यपि महत्व के पद पर सुशोभित हैं अपनी लिखावट का उदाहरण दे देना उचित नहीं समझते। यदि केवल नमूना हस्ताक्षर हों तो दूसरी बात है, वे ले लिए जाएँ क्योंकि इसमें जोखिम का डर है। परन्तु सहज लिखावट या साधारण स्वाक्षर भी प्रदान करने से परहेज करते हैं। सम्भवतः आशय यह है कि उनका वास्तविक व्यक्तित्व जो जाना हुआ है उतना ही पर्याप्त है। यह चिन्तन का विषय है मेरे लिए।

दूसरी ओर वे महापुरुष उदार हृदय व्यक्ति हैं जो स्वलिखित अक्षर तथा हस्ताक्षर देने में प्रसन्नता प्रदर्शित करते हैं।

काशी में श्री सम्पूर्णानन्दजी का अभिनन्दन-ग्रन्थ छपा था उनकी साठवीं वर्षगाँठ पर। इसमें उनकी हस्तलिपि के आधार पर एक छोटा सा अभिनन्दन लिखने का अवसर मिला था। यह घटना सन् १९५० की है। उसके सम्पादक

मण्डल म श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी भी थे। श्री चतुर्वेदीजी की उदारता एव सहानुभूति प्रसिद्ध है। उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार की और सहर्ष अपना आशीर्वाद

चित्र २८

प्रदान किया। यह पत्र मेरे पत्र सचय म श्रेष्ठ है। उस पर किये गए हस्ताक्षर का चित्र लिखावट सख्या २८ म प्रस्तुत है।

यहा हस्तलिपि विज्ञान के सदर्भ म इनके लिए कुछ कह सकना सम्भव नहीं है। अपने क्षेत्र के यह महान् स्तभ हैं तथापि इनके विषय म सम्भवत ऐसे कोई व्यक्तिगत गुण नहीं हैं जो प्रकाशित नहीं हैं। परन्तु इतना चिन्ता आज भी लगी हुई है कि इन्होंने अपने हस्ताक्षर के नीचे इतनी बहुत सी गोलाकार रेखाए क्यों खीच दी थी (जिनकी वास्तव म आवश्यकता नहीं थी)। यह सम्भवत

Keep Your Chin up
Happen what may

चित्र २९

श्री चतुर्वेदीजी की विनोदप्रियता का एक उदाहरण है।

श्री पृथ्वीराज कपूर माने हुए अभिनेता हैं। इनका नाटकीय व्यक्तित्व अच्छी तरह प्रशंसित और प्रसारित है। सम्भवतः भारतवर्ष में यह उन कुछ गिने-चुने व्यक्तियों में से हैं जो सर्वाधिक ख्यात हैं। लिखावट में विचित्रता है, हस्ताक्षरों में विलक्षणता। लिखावट इनके व्यक्तित्व का प्रतीक है, हस्ताक्षर प्रभावकारिता के। (देखिए चित्र २६)

लिखावट आकार में बड़े अक्षरों की है जिनमें स्थान काफी है। रेखाएँ माथा ऊपर नीचे जाती हैं, फैली हुई हैं और रेखाओं के अन्त में कहीं-कहीं तीर जैसे चिह्न बने हुए हैं।

यह एक शक्तिवान हठी कर्मठ व्यक्ति का प्रतीक है। इनको काफी बड़ा कार्यक्षेत्र चाहिए, जिसमें इनकी प्रसारित क्रियाशीलता सुगमता से फैल सके तथा इनको महान् प्रदर्शन क्रिया को व्यक्त किए जाने का अवसर मिल सके। इनकी लिखावट की तीव्रगति तथा भारी रेखाएँ दबाव से आगे बढ़कर अपना स्थान बनाने की शक्ति है और इसमें हठीलापन है। सीधी रेखाओं के अंतिम चिह्न तीरों के ढंग के होना के प्रतीक हैं। ऊँचा आदर्श है और उसको पूरी तरह से प्राप्त करने की शक्ति है।

ऊँचे, लम्बे हस्ताक्षर यथार्थ में अपनी आन्तरिक नाटकीयता के प्रतीक हैं। यह 'नेक' अभिनय की छाया है जो सारे प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध हैं और जिसके लिए यह अपने रंगमंच की प्रारम्भिक अवस्था से ख्याति प्राप्त करते आ रहे हैं। उनका नाम आज भी उनकी विशाल आकृति सामने ला देता है। चाहे चित्रपट हो अथवा नाट्य मंच इनके नाम से प्रत्येक कला प्रेमी खिंचा चला जाता है।

विशेष आवरण इनके हस्ताक्षर हैं भावुकता के लिए एवं प्रदर्शन करने के लिए।

साधारण आकार से कहीं अधिक बड़े आकार वाले एक और हस्ताक्षर हैं। यह रोमन लिपि तथा देवनागरी लिपि दोनों में उपलब्ध तथा प्रस्तुत हैं।

चित्र ३

यह लिखावट भी अपनी निजी विचित्रता रखती है और अपने निजी प्रकार से प्रभावशाली है। उस समय श्री चन्द्रभानजी गुप्त उत्तर प्रदेश के मन्त्रिमण्डल में मन्त्री थे। सीधी आये हुए थे और बहुत ही व्यस्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

थे। स्वाक्षर की याचना क लिए उनके पास तक पहुचना असम्भव नही तो कठिन अवश्य था। झांसी के तमाम सरकारी अधिकारी तथा नेतागण उनको घेरे हुए थ। एक नता मित्र क द्वारा किसी प्रकार अपनी स्वा र पुस्तक उनके पास पहुँचाई। हस्ताक्षर मिल गए हिन्दी म तथा रोमनलिपि म परन्तु उनक पास तक न पहुच सकने का खद मिट गया—उनके हस्ताक्षर इतन प्रभावकारी प्रतीत हुए कि उनको लिखते नहीं देख सकने की कोई बात नही रह गई।

15-8-49

चित्र ३ (ग)

हिन्दी क हस्ताक्षर का लिखावट काफी फैली हुई है बडे अक्षर है परन्तु स्पष्ट पढ़ने म नही आत। अग्रजी के हस्ताक्षर के प्रथम दो अक्षर स्पष्ट पढने म आते है। आगे के अ र अस्पष्ट हैं।

लखना म स्फूर्ति प्रचर मात्रा म है। प्रवाह है शक्ति ह बल है और साथ ही साथ प्रदर्शन की भावना है। हस्ताक्षरो की बनावट पूणतया तर्कसगत नहा ह विशेषकर हिन्दी म। एसा प्रतीत होता है कि इनका आत्मबल इनके मानसिक तर्क स अधिक है। पूरी ताकत लगा रह हैं चाहे उसकी आवश्यकता हो अथवा न हो। सन्तुलन बराबर नहीं है।

यह लिखावट पूणतया बहिर्मुखी प्रवत्ति प्रदर्शित करती है जिसम चलना फिरना अधिक और मानसिक विधिवत् क्रिया कम रहती है। इसम विधिवत् योजना और धययुक्त स्थिर लगन एव उद्योग का प्रवाह नियोजन नही है। इनकी लिखावट से यह पता लगाना कठिन है कि यह कौन-सी आदर्श रेखा का अनुसरण करते हैं अथवा इनका अपना निजी आदर्श है अपनी निजी कार्यशैली है। इनकी जीवन शक्ति तथा आन्तरिक प्रेरक बल अपनी विलक्षणता स अवश्य ही वर्णनीय है।

× × ×

जसा कि हम पहले कह चुके हैं लिखावट स्पष्ट शुद्ध और सहजगति म होना आवश्यक है। य लिखावट क मूल लक्षण हैं। कोई भी लिखावट विलक्षण बनाया जाना आवश्यक नही है तथा ससार म अनेकानेक व्यक्ति हैं जो वास्तव म महान् हैं और विलक्षण हैं इस प्रकार की शुद्ध लिखावटें लिखत हैं। अत असामान्य लिखावट जो कि विलक्षण दिखाई देता है, निश्चय ही बनावटीपन प्रदर्शित करती है। इसम वास्तविक शक्ति कितना है यह शकायुक्त है।

६

हस्तलिपि विज्ञान के उपयोग

हस्तलिपि व्यक्तिगत वस्तु है। इसका उपयोग भी व्यक्तिगत है। परन्तु कोई भी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत इकाई में उपयोगी नहीं है। समाज में ही उसकी व्यक्तिगत सामर्थ्य का वास्तविक उपयोग है। इसलिए यह सहज ही स्पष्ट है कि हस्तलिपि की उपयोगिता उसके लिखने वाले के लिए वह जितनी व्यक्तिगत है उतनी ही अथवा उससे भी अधिक उसकी सामाजिक उपयोगिता उस समाज के लिए है जिसकी वह एक इकाई है।

प्रत्येक व्यक्ति उद्योग करता है। उद्योग करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्म जात लक्षण है। हम सब कुछ-न-कुछ करते ही रहते हैं। परन्तु वास्तविक क्रिया तथा कर्तव्य वह है जिसमें हम पूर्ण सन्तोष प्राप्त होता है। हम उस काम को अधिक अच्छी तरह से करते हैं जिसके लिए हमारी आन्तरिक शक्तियाँ उपयुक्त हैं और जिस काम में हमारी अन्तवर्ती स्वाभाविक रुझान है। परन्तु समस्या यह उत्पन्न होती है कि हमारा रुझान क्या है? हमारी शक्तियाँ क्या हैं? और ऐसे कौन-से काम हैं जो कि हमारी शक्ति-सामर्थ्य के अनुकूल हैं और उनमें हमारी अन्तवर्ती स्वाभाविक रुझान भी है।

ऐसा देखा जाता है कि डाक्टर का बेटा डाक्टर बनना चाहता है। वकील का बेटा वकील बनता है। दुकानदार का बेटा दुकान करता है। और कभी ऐसा नहीं भी होता है। उपयुक्त शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद लोग अपने अपनाये हुए व्यवसाय में सफल नहीं होते।

ऐसा भी देखा जाता है कि बेटा अपने पिता के व्यवसाय से पूर्णतया विपरीत व्यवसाय अपनाता है और सफल होता है। किसान का बेटा सेना का उच्च अधिकारी बनता है अथवा इन्जीनियर डाक्टर का व्यवसाय अपनाता है और सफल होता है। यह एक अवसर की ही बात रहती है कि कौन-सा युवक अथवा युवती किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करते हैं और कौन-से व्यवसाय में पड़ते हैं। किसी

तरह म काम च ना दूसरी बात ह। अच्छ बुद्धि और बाल अधिक व्यवसाय एव परिस्थिति म अपना काम चला लते हैं और कुछ एक सफल ताएं भी प्राप्त कर लते है परन्तु इस व्यक्तियों का पूर्ण रूप स सदुपयोग हो गया ह। यह कह सकना कठिन होता ह।

शिक्षित एव समय व्यक्तियों की कमी नहीं ह। आज क प्रगतिशील युग म व्यक्तिगत विकास की सुविधाए तथा अवसर अधिकाधिक उपलब्ध हैं। साथ-ही साथ अनेकानेक व्यवसाय भी प्रकट हो गए हैं। औद्योगिक व्यावसायिक वैज्ञानिक कलात्मक आदि अनेक क्षत्रों का विधिवत् पृथक्करण हो चुका ह और प्रत्यक व्यव साय म विशष योग्यता क उम्मीदवार उपलब्ध हैं। प्रत्यक व्यवसाय का मनो वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता ह यह निर्धारण करन क लिए कि किस अन्तर्वर्ती योग्यता का व्यक्ति उसको सफलता स निभा सकगा। इसको व्यावसायिक योग्यता अथवा क्षमता कह सकते हैं।

इसी प्रकार प्रत्यक व्यक्ति जो कि उस व्यवसाय अथवा पद के लिए प्रार्थी है उसका भी मनोवैज्ञानिक विश्लषण किया जाता ह। मनोविज्ञान के विशषज्ञ इस तरह स दोनों का मिलान करते हैं और निष्कर्ष पर पहुचत है कि कौन-सा व्यक्ति किस प्रकार क व्यवसाय अथवा पद क लिए मनोयोग क अनुसार उपयुक्त ह। इस क्रिया म किसी एक निश्चित व्यवसाय तथा पद की व्यावसायिक एव स्वभावजन्य योग्यता का व्यक्तिगत स्वभावजन्य योग्यता स मिलान किया जाता ह।

मनोवैज्ञानिक विशषज्ञों ने इस प्रकार की जाँच क लिए विविध प्रयोगों का आविष्कार किया ह और निश्चय ही य उपयोगी हैं। इस प्रकार क प्रयोगों से व्यक्तिगत बुद्धि उपलब्धि विचार शक्ति कल्पनाशीलता उत्साह साहस निर्भीकता क्रियाशीलता मानसिक सन्तुलन भावुकता अनुशासनप्रियता जीवन शक्ति तथा व्यक्तिगत रुचि रुझान का पता लगाया जाता ह।

इसक उपयोग दो प्रकार स है

(१) व्यवसाय क लिए व्यक्तिगत चुनाव क लिए। अनेक प्रार्थियों म से किस व्यक्ति का सर्वोत्तम चुना जाए यह निर्णय करने के लिए और

(२) नवयुवक नवयुवती आदि प्रत्यक व्यक्ति को इस प्रकार की व्यावसायिक सलाह दन क लिए कि वह किस प्रकार के व्यवसाय के लिए उपयुक्त है। यह सलाह व्यवसाय क आवश्यक अन्तर्वर्ती लक्षणों का और व्यक्तिगत शिक्षा योग्यता एव स्वाभाविक चारित्रिक गुणों का दखत हुए दी जाती ह।

एस मनोवैज्ञानिक प्रयोग तथा सलाह देने क अनकानेक विज्ञापन तथा कार्यालय हैं। यह क्रिया यूरोप अमरिका क देशों म प्रचलित हो चुकी है तथा सरकार विभाग उद्योग विज्ञान आदि म भी मान्यता प्राप्त कर चुकी है। भारतवर्ष

म भी यह प्रयास काफी आगे बढ़ चुका है।

परन्तु इस वैज्ञानिक क्रिया में सबसे बड़ी समस्या एक यह है कि जिस व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक निरीक्षण होना है उसका उपस्थित होना आवश्यक है तथा उसके सहो और स्वेच्छापूर्ण सहयोग की आवश्यकता है। इसके बिना उसका वास्तविक एवं निर्णयकारी निरीक्षण किया जा सकना कठिन है।

दूसरी कठिनाई इस प्रयास में है व्यक्तिगत प्रभाव की। जब कोई व्यक्ति मनोवैज्ञानिक के समक्ष उपस्थित होता है उसको पूरा व्यक्तित्व प्रभावित करता है। यह व्यक्तित्व का वह भाग है जो सामने दृष्टिगोचर होता है। मनोवैज्ञानिक अपने विषय ज्ञान से प्रवृत्ति के अन्तवर्ती लक्षण का निरीक्षण करना चाहता है। इस मुलाकात में जो प्रभाव वाह्य वेश भूषा बातचीत आदि से होता है वह अन्तवर्ती जिज्ञासा की क्रिया में बाधा डालता है और इस तरह से किसी भी व्यक्ति का वास्तविक निरीक्षण एवं चरित्रांकन निष्पक्ष नहीं रह पाता। हो सकता है कि मनोवैज्ञानिक बुद्धि-अंक भावकता आदि कुछ एक चारित्रिक लक्षणों की जाँच निष्पक्षता से कर सके परन्तु स्थान अभिरुचि आदि अन्य अनेकानेक लक्षण हैं जिनसे सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनता है, उन सबकी जाँच निष्पक्षता से कदापि नहीं की जा सकती।

इस तरह की व्यक्तिगत समस्या बनी ही रहती है। मानव-स्वभाव दुरूह है, व्यक्तिगत चतुरता का अन्त नहीं और यह किसी भी व्यक्तिगत मुलाकात में कठिनाइयाँ एवं असुविधाएँ उत्पन्न करता रहती है। यही सबसे बड़ा कारण है कि कई अच्छे-से अच्छे चुनाव-मण्डल निष्पक्ष एवं निर्णयात्मक चुनाव करने अथवा मनोवैज्ञानिक सलाह देने में गलती कर जाते हैं। यह विविध विवरणों द्वारा अच्छी तरह से विदित होता रहा है।

तथापि मानव-स्वभाव की दुरूहता का निराकरण करने के प्रयास जारी रहे हैं और विचारक इस विषय में अग्रसर होने के प्रयत्न निरन्तर करते ही रहे हैं। वे इस प्रकार के मानवीय आधार की खोज करने में लगे रहे हैं जिसके द्वारा मनोवैज्ञानिक खोज की कठिनाइयों तथा असुविधाओं का निराकरण किया जा सके और इस प्रकार के साधन प्राप्त हो जाएं जिनसे मनुष्य के स्वभाव के निकट-से निकट पहुँचा जा सके।

इस प्रकार का निष्पक्ष मानवीय आधार हमें हस्तलिपि में मिलता है। हस्तलिपि किसी भी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का चित्र है जो कि एक तथा अनेक बार उपलब्ध किया जा सकता है। इसका निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण एक तथा अनेक विशेषज्ञ एक तथा अनेक बार कर सकते हैं।

हस्तलिपि प्राप्त हो जाने पर व्यक्ति की व्यक्तिगत मुलाकात किसी मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ से होने की आवश्यकता नहीं रहती। इसमें व्यक्तिगत प्रभाव के तत्व भी सामने नहीं आते। हस्तलिपि इस प्रकार का आधार प्रस्तुत कर देता है

जिससे चरित्रांकन का कार्य बहुत हद तक वैज्ञानिक विधि से किया जा सकना सम्भव है। इसके द्वारा चुनाव सम्बन्धी तथा व्यावसायिक सलाह निर्णयात्मक रूप से दी जा सकती है।

हस्तलिपि विज्ञान द्वारा इस प्रकार के विभिन्न प्रयोग किये गए हैं। यूरोप के विद्वान् डा० हैन्स जेकोबी तथा हैरी जो० टेलर आदि ने इस विषय पर बहुमूल्य तथा नवीन खोज करके पर्याप्त प्रकाश डाला है जिसमें हस्तलिपि विज्ञान का वैज्ञानिक स्तर प्राप्त हो सका और इसका मान स्थायी तथा विश्वसनीय मनोवैज्ञानिक स्तर पर होने लगा।

आपने समाचार पत्रों में देखा होगा कि अनेक सेवायोजक स्वामी आवेदन-पत्र हस्तलिखित मांगते हैं। ऐसा प्रकाशित होता है कि किसी पद की प्राप्ति के लिए आवेदक प्रार्थी अपना आवेदन-पत्र अपनी स्वयं की लिखावट में लिखकर भेजें जबकि टाइप द्वारा प्रेषित प्रार्थना-पत्र कहीं अधिक स्पष्ट हो सकते हैं फिर भी स्वलिखित आवेदन-पत्र ही मांगते हैं।

यूरोप आदि अनेक स्थानों में इस प्रकार के स्वलिखित आवेदन-पत्रों की जांच हस्तलिपि ज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा की जाती है और उसके उपरान्त आवेदक प्रार्थियों की विशेष योग्यता की जांच होती है उन अन्य अनेक योग्यताओं को देखने के लिए जो शिक्षा स्वास्थ्य आदि के अनुसार आवश्यक हैं। चरित्र स्वभाव ध्यान आदि सम्बन्धी जांच हस्तलिखित आवेदन पत्रों से ही हो जाती है।

हैरी ओ० टेलर जो कि पिछले महायुद्ध के समय से संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में निवास करते हैं लिखते हैं

> सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य हस्तलिपि विज्ञान ने दूसरे महायुद्ध में किया है जबकि इसका उपयोग संयुक्त राष्ट्र अमरिका के सेना-विभाग ने चरित्र एवं व्यक्तित्व की बारीक जांच करने के लिए सफलतापूर्वक किया था।[1]

इस महायुद्ध में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सेना के उच्च अधिकारी संसार के अनेक महत्त्वपूर्ण मोर्चों पर लगे हुए थे और इस महायुद्ध का अन्तिम निर्णय वास्तव में इन अधिकारियों की उच्च उत्तरदायित्व की भावना पर ही निर्धारित था। यह स्वतः स्पष्ट है कि इन अधिकारियों के बहुत ही ऊंचे चरित्र तथा कर्तव्य-परायण व्यक्तित्व के होने की आवश्यकता थी।

इस पुस्तक में टेलर ने अन्यत्र लिखा है कि हस्तलिपि विज्ञान सम्बन्धी कार्य करने के लिए वह स्वयं संयुक्त राष्ट्र अमरिका के प्रतिरक्षा विभाग में नियुक्त थे।

1 Hand Writing The Key To Successful Living published in London 1946

इस विषय में अन्य विशेषज्ञों के महत्वपूर्ण कथन निम्नलिखित हैं

डब्लू० एल० फ्रेंच लिखते हैं

प्राय एक शताब्दी से फ्रांस एवं जर्मनी में और बाद में इंगलैण्ड में भी हस्तलिपि विज्ञान का अध्ययन एवं प्रयोग किया जाता रहा है। इसका महत्व अपराध के मामलों में न्यायालयों में माना जाने लगा है। यह कार्य लिपि विज्ञान से भी कहा जाता है। (लिपि विज्ञान के विशेषज्ञ केवल लिपि की जालसाजी पहचानने तक सीमित हैं।) व्यावसायिक क्षेत्रों में हस्तलिपि विज्ञान का उपयोग विविध हस्तलिपियों से ईमानदारी शीलनिष्ठा प्रामाणिकता सूक्ष्म शुद्धता आदि अनेक व्यक्तिगत एवं परम श्रेष्ठ गुणों की जाँच करने के लिए किया जाता है। लेखनी तथा व्यक्तित्व ने इस प्रकार से सामूहिक महत्ता प्राप्त कर ली है।[1]

महत्वपूर्ण उद्योगों एवं व्यवसायों में व्यक्तिगत श्रेष्ठता पर ही सम्पूर्ण हानि लाभ निर्धारित रहता है तथा ईमानदार मन के निष्ठावान् एवं विश्वस्त कार्यकर्ताओं की नितान्त आवश्यकता रहती है।

इंगलैण्ड के हस्तलिपि विज्ञान के विशेषज्ञ हैन्स जकोबी का कथन है कि

'अभी कुछ काल से ग्रेट ब्रिटेन में भी बड़ी व्यापारी संस्थाओं द्वारा कर्मचारियों की नियुक्ति के सम्बन्ध में हस्तलिपि से मनोवैज्ञानिक व्यक्तिगत विश्लेषण का उपयोग किया जाने लगा है अथवा इस बात की खोज करने के लिए कि किसी अच्छे कर्मचारी की कार्यक्षमता का ह्रास होने का मनोवैज्ञानिक कारण क्या है।

सम्भवत यह प्रतीत होगा कि अधिकाधिक देशों से प्राप्त अंकों से पता चलता है कि ऐसे व्यक्तियों की गणना कहीं अधिक है जो कि मानसिक व्याधि के रोगी हैं अथवा रहित हैं मानसिक दुर्बलता के शिकार हैं तथा ऐसे व्यक्ति जिनकी मनःनियन्त्रण शक्ति हीन एवं अस्त व्यस्त हो गई हैं जो थोड़ी सी कठिन परिस्थिति में अपना मानसिक सन्तुलन त्याग देते हैं बनिस्बत उन व्यक्तियों के जो कि शारीरिक व्याधियों के वास्तविक रोगी हैं अतः शक्तिहीन हो गए हैं (जिसके कारण उनकी कार्यक्षमता कम हो गई है)।

हस्तलिपि विज्ञान का सफल उपयोग एक अन्य क्षेत्र में भी हुआ है। यह व्यापारी संस्थाओं के कर्मचारियों की अधिक गुणकारी कार्यक्षमता की तलाश करने में किया गया है जिसमें उनकी नियुक्ति अधिक ऊँचे पदों पर की जा सके (जिसमें सम्पूर्ण औद्योगिक संस्था

1 W L French Th Psychology of Hand Uniting

का उत्थान एव उसको अधिक लाभ हो सके।)[1]

स्विट्जरलैण्ड के माथ हस्तलिपि-वनानिक एरिक सिंगर ने भी इस विषय म महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है

> आजकल हस्तलिपि विज्ञान के अग्रगण्य अजयक स्विट्जरलैण्ड म हैं जहा कि प्रत्येक सामान्य नागरिक हस्तलिपि विज्ञान के हित एव विकास म अधिकाधिक रुचि प्रदर्शित करता है।[2]

× × ×

बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति अपनी अन्तवर्ती शक्तियो को बाहर निकालते हैं दूसरे व्यक्तियो के साथ सामाजिक सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं। उनकी सुख दुख की समस्याओ म उनका साथ देने के लिए उनम मिलना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने काय क्षेत्र तथा अपने व्यक्तिगत जीवन म अन्य अनेक व्यक्तियो का साथ चाहते हैं। अपनी भावनाओ का अपनी मनतरग के अनुसार स्वच्छन्दता स व्यक्त करना चाहते हैं और ऐसा करते भी हैं। एसे व्यक्ति एक स्थान पर जमकर बठना तथा काम करना नही चाहते। व चल फिरकर अपने सम्पर्क स्थापित करते हैं ससार की विविधताए देखना चाहते है। ऐसे व्यक्ति स्फूर्तिवान् दिखाई देते हैं उदार प्रकृति के होते हैं और अपने भावक विचारो का स्वतत्र व्यक्त करते रहते हैं।

इस प्रकार की भावना उनको अपने से आगे खीचती है जिससे स्वतत्र स्वच्छन्द गति से उनकी लिखावट आगे की ओर बढती है तथा अक्षर आदि लिखने के स्थान पर आजादी से फलते हैं अधिकाधिक स्थान घेरते हैं। लिखावट म ये चिह्न बहिर्मुखी प्रवृत्ति के हैं।

बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति इस प्रकार स एस काय क्षेत्र को अपनाना चाहते हैं जिसम उनको जन समुदाय की सेवा की आतरिक प्रेरणा का स्वतत्र गति प्राप्त होती है जन-समुदाय का प्रेम आकर्षण तथा उदार स्वभाव के आदर्श का पूरा करने का अवसर प्राप्त होता है। इस तरह स बहिर्मुखी प्रवृत्ति के वग म हम धार्मिक प्रचार करने वाले व्यक्ति प्राप्त होते हैं जो धर्य लगन तथा वास्तविक समाज प्रेम स जीवनपर्यन्त अपना काम करते रहते हैं।

व्यापार म नियुक्त बडे अधिकारी जिनको अन्य अनेक व्यापारियो से मिलने का अवसर रहता है तथा घर स बाहर अनेक काय क्षेत्रो म फिरना पडता है

वकील लोग जिनकी सामाजिकता प्रदर्शक वृत्ति है

चिकित्सक जिनका प्रेम मानवता स है

लेखक जिनम तुरन्त विचार स्पष्टता एव व्यक्त करने के स्वाभाविक गुण हैं

---

1 HANS JACOBY in his Book Analysis of Hand Uniting
2 ERIC SINGER in his book Graphology For Every Man

प्रकाशन एवं विज्ञापन करने वाले लोग जिनको किसी भी प्रकार का व्यावसायिक प्रकाशन करना है।

ऐसे सब व्यक्ति बहिर्मुखी प्रवृत्ति के ढंग से ही आते हैं तथा इस प्रकार के कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं।

यदि ये बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति किसी कारण से अन्तर्मुखी ढंग में ढकेल दिए जाते हैं अथवा वतन के काम में इस ढंग के काम में लग जाते हैं तो जीवनपर्यन्त उन्हें अपनी नियति से मुक्त व सन्तोष प्राप्त नहीं होता अपने भाग्य को कोसते रहते हैं। उनके काम में भी उतनी अच्छी सफलता प्राप्त नहीं होती जो कि उनका बहिर्मुखी प्रवृत्ति-सम्बन्धी कार्यक्षेत्र में प्राप्त हो सकती थी।

अन्तर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति अपनी आन्तरिक भावना की ओर मुखरित होते हैं। यह बहिर्मुखी प्रवृत्ति का बिल्कुल उल्टा है। बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति जिस स्फूर्ति को अपने से बाहर प्रसारित करता है, अन्तर्मुखी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति उस स्फूर्ति को अपनी ही ओर प्रेरित करता है। उसका ध्यान केवल अपनी ही समस्याओं की ओर केंद्रित रहता है। उसका अपना सुख दुख अपनी आवश्यकताएं अपना स्वार्थ निर्धारित होता है। अन्य सामाजिक समस्याएँ उसके लिए नहीं हैं। उस तरफ उसका ध्यान आकर्षित नहीं है। उसके चिन्तन का क्षेत्र अन्य व्यक्ति नहीं है वे वस्तुएं हैं वे विचार हैं जिनमें उसका स्वार्थ है। वह दूसरे लोगों को समझता नहीं है उनमें विश्वास नहीं करता अविश्वास की भावना अधिक है।

प्रखर बुद्धि वाले अन्तर्मुखी व्यक्ति अविश्वासपूर्ण तर्क शक्ति प्रदर्शित करते हैं। आलोचना तथा व्यंग्य उनका माध्यम है। उदारता या वास्तविकता उनके स्वभाव में नहीं है।

लिखावट में भी इस प्रकार की आन्तरिक वृत्तियां निहित हैं। इनकी स्वाभाविक लिखावट में स्वच्छन्द गति के विपरीत अवरोधसूचक चिह्न अधिक मिलते हैं जैसे कि छोटे आकार का सूक्ष्म लिखावट सकोण अक्षर गोल गाँठें मुख बन्द पीछे की ओर झुकने वाले तथा घुमाव वाले वृत्त एवं रेखाएँ आदि। अन्तर्मुखी प्रतिभा वाला व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से मुख मोड़ता है तथा अपने में ही छिपा रहना चाहता है। अतः उसकी लिखावट भी इसी प्रकार से पीछे बाई ओर जाने वाले चिह्नों से बनी हुई होती है। उसमें प्रत्यक्ष चिह्न नहीं होते। यदि होते भी हैं तो ऐसे ही जिनमें वह अपने व्यक्तित्व को अपनी शक्ति के अनुसार आवरण में छिपाए रहना चाहता है।

इस समाज में ऐसे अनेकानेक व्यक्ति हैं जो वास्तव में अन्तर्मुखी हैं परन्तु प्रतिकूल परिस्थितिवश बहिर्मुखी व्यक्तियों के वर्ग में पाए जाते हैं। अपने वास्तविक स्वभाव का समन्वय नहीं कर पाते और प्रतिक्रियावादी बन जाते हैं। इनके आचरण समान नहीं रहते और इनके व्यवहार में विश्वास एवं उत्तरदायित्वपूर्ण

आन्वामन क्दापि प्राप्त नहा होना।

जिस व्यक्ति को एक स्थान पर एकाग्र चित्त किसी विषय पर जमना अच्छा लगता है वह बाहर म जन क संपर्क म किस प्रकार स आनन्द प्राप्त करगा यह चिन्तन का विषय है।

अन्तमखी प्रतिभा वाले व्यक्तियो का काय क्षत्र इस प्रकार है

लखन-काय कार्यालयो क लिपिक तथा रुपये-पस का लखा जोखा रखने वाल लखपाल। य अपना काम म सूक्ष्म दष्टि विधिवत् काय व्यवस्था आदि पूण रूप स रख सकत है। इनका चित्त अपनी लखना आदि अन्य कार्यालय-सम्बन्धी वस्तुओ पर एकाग्र रहता है। इनका अन्य अनक व्यक्तियो स तथा उनकी व्यक्ति गत भावनाओ स सम्बन्ध नहा रहता।

वास्तुकला तथा अभियान्त्रिक काय मे सम्बन्ध रखने वाले व्यवसाय जिनम वस्तुओ स यन्त्रो स तथा उनक काम म आन वाली अनकानेक मशीनो मे काम पडता है। इनम भी मानव से सीधा सम्पक नहीं है। अपना चिन्तन एव क्रियाशीलता एकाग्र एव विधिवत् आचरण की आवश्यकता नहा है। एसे व्यक्ति बिना किसी लगाव क अपना काम करत रह सकते हैं।

समालोचक लखक जिनको बहुत ही निष्पक्ष होकर सोचना विचारना पडता है और जो अच्छे बुरे का तुलना कर सकते हैं तथा यथाथ शब्दो का प्रयोग कर सकते हैं।

वज्ञानिक एव कूटनीतिज्ञ आदि एस व्यक्ति जिनको अपना प्रत्यक आचरण पूव निधारित रीति क अनुसार साधना पडता है। इस प्रकार क व्यवसाय में बहुत सोच-समझकर काम करना पडता है और प्रत्यक क्रिया पूव निधारित होती है तथा इस काय का चुनाव बहुत ही सावधानी स करना पडता है। वज्ञानिक एव कूट नीतिज्ञ का आचरण वास्तविक अन्तमखी प्रवत्ति का उदाहरण है।

× × ×

उभयमुखी प्रवत्ति वाल व्यक्तियो म बहिर्मखी एव अन्तमखी का समन्वय रहता है। इनम बहिर्मखी की प्रखरता एव प्रभाव रुचि तथा अन्तमुखी की विचार शीलता एव तकसगत रुचि दोनो विद्यमान रहता हैं। आवश्यकतानुसार उभय मुखी प्रतिभावाल व्यक्ति अपनी आन्तरिक एव बाह्य वत्तियो का उपयोग कर सकत हैं। समस्वभाव होन क कारण य व्यक्ति लिखावट म भी समआचरण करते हैं। इनकी लिखावट क अक्षरो का आकार प्रकार उनकी आग तथा पीछे झुकाव आदि सब समअवस्था म रहती हैं। इनकी तत्परता की आवश्यकता नहा है भावा वश नहा है तथा किसी प्रकार का अवरोध भी नहीं है।

उच्च स्तर की बुद्धि प्रखरता क साथ उभयमुखी प्रतिभावाल व्यक्ति अच्छे प्रबन्धक सिद्ध होत हैं। प्रबन्धकारक प्रवति इनक समस्वभाव का प्रथम तथा मूल

रूपण है। अतएव स्वाभाविक है।

उत्तरदायित्व जिस व्यवसाय में आवश्यक है, उसमें उभयमुखी प्रतिभा सम्भव है।

× × ×

पद नियुक्ति के लिए बनाई गई चुनाव-समितियां बहुधा आवेदक व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार का आधार रखती हैं। यह मौखिक परीक्षा है। इस मौखिक परीक्षा का आशय जैसा कहा जाता है उम्मीदवार आवेदकों के व्यक्तिगत लक्षणों की जांच करना है जिससे उनकी उपयुक्तता का अन्दाज किया जा सके उस विशेष पद पर नियुक्ति के लिए जिसके लिए परीक्षा की जा रही है। इस प्रकार की परीक्षा में मानसिक प्रखरता सामाजिकता एवं नैतिक लक्षणों का पता लगाया जाता है जैसे कि मानसिक तत्परता समयदर्शी स्पष्ट एवं तर्कयुक्त विवेचन निर्णय का समन्वय रुचि ध्यान सामाजिकता नेतृत्व की शक्ति तथा नैतिक शक्ति आदि। इस प्रकार के लक्षणों को जानने की क्रिया इस प्रकार की विशेष बातचीत करने की है जो कि कमेटी तथा आवेदक व्यक्ति में कि ये लक्षण उभर आए।

इस प्रकार का व्यक्तिगत मुलाकात केवल कुछ मिनटों में पूरी हो जाती है क्योंकि आवेदक व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है अतः प्रत्येक को थोड़ा ही समय मिलता है। यह आश्चर्य का विषय है कि कुछ एक प्रश्नों में ही जांच कमेटियां यह निर्धारित कर लेती हैं कि किस आवेदक का व्यक्तित्व किस प्रकार है जबकि मानव-स्वभाव एक दुरूह समस्या कही जाती है। यह जांच की रीति आवेदकों के साथ केवल अन्याय है यदि अन्य साधन नहीं अपनाए जाते तो इसका परिणाम यह होता है कि विभिन्न पदों पर अनुपयुक्त प्रकार के व्यक्ति नियुक्त कर लिए जाते हैं जो कि व्यक्तिगत मनोयोग से उन पदों के लिए विपरीत हैं। जैसे कि निर्बल आत्म बल वाले व्यक्ति किसी व्यवसाय का अधिकारी नियुक्त करना किसी उग्र स्वभाव वाले व्यक्ति को समाज-कल्याण के पद पर नियुक्त करना किसी प्रलापक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति को ऐसे पद पर नियुक्त करना जहाँ कि बारबार गुप्त रखने की आवश्यकता है। जिस व्यक्ति को निर्णय लेने में स्थिरता है उसको नेतृत्व के पद पर नियुक्त करना जिस व्यक्ति में अन्तर्निहित भावना भोगविलास शारीरिक सुख एवं आराम से रहने की प्रवृत्ति है उसे शारीरिक परिश्रम के कार्य पर लगाना जो स्वभाव से स्वार्थी एवं धनलोलुप है उसे आय-व्यय का भार देना। ऐसे व्यक्ति ही हैं जो अपने स्वभाव से विपरीत कार्य भार पाकर अपने नैतिक उत्तरदायित्व को ले डूबते हैं और अपनी मानसिक चतुरता से अपना निजी बचाव भी करते रहने का प्रयास करते रहते हैं। कुछ भी हो, इस प्रकार के व्यक्तिगत साक्षात्कार से सही एवं उपयुक्त आवेदकों का चुनाव सम्भव नहीं है।

व्यक्तिगत स्वभाव की गहरी जांच का साधन हस्तलिपि विज्ञान ही है

जिससे स्वभावजन्य अनेक प्रवृत्तियाँ और शक्तियाँ लिखावट के विभिन्न चिह्नों से पहचानी जाती हैं। इस पहचान से किसी भी व्यापार, व्यवसाय, पद एवं उत्तरदायित्व के लिए व्यक्तिगत चुनाव किया जाना सम्भव है तथा व्यक्तिगत व्यावसायिक सलाह दे सकना भी सम्भव है। यही कारण है कि यूरोप के अनेक देशों में हस्तलिपि विज्ञान व्यावसायिक महत्ता प्राप्त कर चुका है और जिन विभिन्न क्षेत्रों में मानव स्वभाव महत्त्वपूर्ण समझा जाता है उन क्षेत्रों में इसका उपयोग किया जा रहा है जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है।

× × ×

बालकों का व्यक्तिगत चरित्रांकन बलवान तथा सुलझा हुआ व्यक्तित्व बनाने के लिए किया जाता है। उनकी लिखावट से पता चलता है कि उनमें अपने विचार एवं क्रियाशीलता का नियोजन करने की कितनी शक्ति जागरूक हो चुकी है। अनेक बालक बिना विचारे काम करने की आदत में पड़ जाते हैं, उतावलापन और अनियन्त्रित आचरण सहज प्रदर्शित होने लगते हैं। उद्दण्डता, अधीरता, नियम, अधिकार, आज्ञा की अवहेलना करना, नीति के विरुद्ध काम करना आदि अनैतिक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। यह क्रिया बहुत ही छोटी और प्रभावशाली अवस्था में प्रारम्भ हो जाती है। यदि इसकी सही पहचान प्रारम्भिक अवस्था में ही हो जाए तो उचित निर्देशन तथा मार्गदर्शन से बहुत हद तक ऐसी आदतों से बालकों को बचाया जा सकता है और उनमें इस प्रकार के स्वच्छ लक्षण प्रबल किये जा सकते हैं जिनसे उनका व्यक्तित्व क्रियाशील एवं उपयोगी बनाया जा सके।

व्यक्तिगत रुचि, रुझान एवं उपयुक्त आन्तरिक शक्तियाँ, प्रवृत्तियों के अध्ययन से उन्हें शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण-सम्बन्धी सलाह भी दी जा सकती है। बालकों के स्वभाव-सम्बन्धी मार्गदर्शन में इस विज्ञान का महत्त्व है जिसका परामर्श बालकों के माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक, निर्देशक आदि सामाजिक कार्यकर्ताओं को लाभान्वित कर सकता है।

× × ×

सबसे अधिक उपयोग हस्तलिपि विज्ञान का साधारण नागरिक को है जिसमें एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से काम पड़ता रहता है तथा उसे किसी अन्य व्यक्ति के साथ अपना व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक निर्वाह करना पड़ता है। प्रत्येक हस्तलिपि में लिखने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रदर्शित होता है। ऐसी लिखावटें हममें से प्रत्येक व्यक्ति के सामने नित्य ही आती रहती हैं, जैसे कि साथ में काम करते वाले अन्य व्यक्तियों के, उच्च अधिकारियों के हस्तलिखित पत्र, नेताओं की लिखावटें, मित्रों के पत्र, निकट सम्बन्धियों तथा अन्य व्यक्तियों के पत्र आदि। इनके साधारण मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में आश्चर्यजनक स्वभावजन्य आचरणों का निराकरण हो जाता है। हस्तलिपि विज्ञान का अधिकाधिक एवं सहज ज्ञान

सुगमता से उपलब्ध कर देता है।

साधारणतया जब हम किसी व्यक्ति विशेष के सम्पर्क में आते हैं उसके व्यक्तित्व के विषय में कुछ न-कुछ अपनी निजी धारणा बना लेते हैं। यह धारणा उस व्यक्ति के व्यक्तिगत चरित्र रुचि ज्ञान, विश्वासनीयता नैतिकता सामाजिकता समझदारी न्याय एवं उत्तरदायित्व की निजी वृत्ति आदि सम्बन्धी होती है। यह हम अपने सामयिक अनुभव द्वारा करते हैं। परन्तु अनेकानेक व्यक्ति अपने आचरण को प्रायः शुद्ध रूप में व्यक्त नहीं करते और ऐसा हो जाता है कि हमारी धारणा वास्तविक परिस्थिति के अनुकूल न होकर उसके विपरीत हो जाती है। अथवा किसी चतुर व्यक्ति के सौम्य आचरण से हम प्रभावित होकर उसका विश्वास करने लगते है। जो व्यक्ति हमें देखने में अच्छा लगता है प्रियभाषी है हम स्वतः उसकी ओर आकर्षित हो जाते है।

ऐसे अनेक प्रक्रिया से सम्पर्क गहरा होने पर हमारी प्रारम्भिक धारणा दृढ होती है और इसके विपरीत हमारी यह प्रारम्भिक धारणा परिवर्तित भी होती रहती है। जिस व्यक्ति को हम विश्वासपात्र समझते थे वह अविश्वासी सिद्ध होता है। जिसे हम समझदार समझते थे वह बेवकूफ हो सकता है। जिसको कर्तव्यपरायण समझते थे वह केवल बहुत अच्छी बात बनाने वाला सिद्ध हो सकता है। जिस व्यक्ति को हम समझते थे कि यह अपना वचन पूरा करेगा वह स्वार्थी और लोभी सिद्ध हुआ। जिस व्यक्ति की सुन्दरता से हम प्रभावित हुए थे वह क्रोधी निकला और जिसका साथ हमने करना चाहा था वह झगडालू और स्वाभिमानी निकला इत्यादि अनेक विपरीत परिस्थितियां प्रस्तुत होता है।

परस्पर स्नेह एवं सहयोग में समझदारी परस्पर सहायता सहृदयता सन्तशीलता समान दृष्टिकोण आदान प्रदान की अनुरूपता लक्ष्य की समानता अपने-अपने उत्तरदायित्व का समान भावना आदि ऐसे अनेक गुण हैं जो कि सफल एवं समान आचरण तथा सहयोग के लिए नितान्त आवश्यक हैं। ये समानता के लक्षण प्रत्येक व्यक्ति अंकित करता रहता है और अन्त में भी यह निश्चित नहीं कर पाता कि यह मित्रता तथा साझेदारी वास्तव में सफल उपयोगी एवं समान लाभ की रहेगी अथवा नहीं।

इस प्रकार के अध्ययन में दो व्यक्तियों के स्वाभाविक लक्षण रुचि ज्ञान व्यक्तिगत क्षमता मनोयोग व्यक्तित्व के अंग आदि मूल तत्त्वों का समन्वय नितान्त आवश्यक है। यह जांच लिपिज्ञ के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से सुगम हो जाता है।

अनेक यूरोपियन विचारकों ने, जो कि पारस्परिक सहयोग के पक्षपाती हैं विवाह सम्बन्धों के लिए, जिसमें एक व्यक्ति अपना जीवनसाथी तलाश करता है हस्तलिपि विज्ञान का प्रयोग उचित समझा है। इनका उल्लेख डब्लू०एल० फ्रन्च डेल्मार पडा मानफ्रेड लोवेन साइट लिटल एंडसन आदि अनेक लिपिज्ञों के

मनावनानिक याग्यानाओ ने अपन मुसयोजित अध्ययना म किया है। नका कथन है कि जीवन क सुख सनोष और शान्ति का प्राप्ति के लिए तथा आत्म मह योगी की प्राप्ति क लिए गहर चिन्तन एव छानबीन की आवश्यकता है और इसम स्वाभाविक समन्वय की समझदारी प्राप्त करन के लिए लिखावट का सहज मनो वैज्ञानिक अध्ययन पर्याप्त सहायता प्रदान कर सकता है। एस अनकानक विविधा जनक प्रश्न हैं जाकि लिखावट के माध्यम स सहज ही स्पष्ट हा जात हैं।

विवाह विच्छेद के कारणा क विषय म मिरत अल्मन का विवचन बहुत ही यथाथ एव विचारग्राही है। जो दो यक्ति कभी विवाह सूत्र म बध गय थ उनका पथक होना जो वचन दिय गए थ जीवनपय त सहवास क उनका टूटना जा घर बन चक थे जिस सुखी भविष्य की कल्पना की जा चुकी थी उसका मिट जाना कितना अधिक दु खान्त एव असफल सामाजिकता का प्रतीक हो सकता है इसका कल्पना कर सकना कठिन है। फिर भी यह हो रहा है और इसकी वद्धि भी होती जा रही है।

इसक कारण अनेक हो सकते हैं। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ और। आज का प्रगतिवाद महगाई उद्दण्डता स्वाथ आदि अनेक कारण प्रस्तुत किए जाते हैं। परन्तु वास्तव म कोई भी यक्ति साधारणतया ऐस बने हुए सम्पक तथा सम्बन्ध को तोडना नही चाहता। यथाथ म इसका कारण यक्तिगत मनायाग की असमानता ही है।

सामयिक भावक उद्वग की परिस्थिति म तक प्रवश नही कर पाता। लोग भूल जात है कि विवाह क प्रथम उल्लास एव रोमाच क उपरान्त दनिक जीवन का साधारण नित्यक्रम प्रारम्भ होता है इसम दो यक्तियो का पारस्परिक सम्बन्ध बन्धन ही निकट हो जाता है दो यक्तियो का निजी अपनापन मिट जाता है पथक जीवन नही रहता तथा दोनो व्यक्तियो का निजी रुचि रुझान स्पष्ट होकर सामने आन लगता है।

यदि इस प्रकार क दो यक्तियो के स्वभाव की यथाथ वास्तविकताए एव विषमताए विवाह क सम्बन्ध क पूव उनक सामन आ जाए जिनम विपरीतता के लक्षण प्रधान हो तो सम्भवत व विवाह क सम्बन्ध क प्रारम्भिक उद्वग मिट जाए और आगे आनवाल विच्छेद क कष्ट उत्पन्न न होन पाए।

एक यक्ति स्वभाव स बहुत सयमयुक्त है मितव्ययी है अल्पभाषी है सावधान है और पुरान रीति रिवाजो क अनुसार यवहारोचित आचरण करने वाला है। उसका सम्बन्ध एक एस व्यक्ति स हो जाए कि स्वभाव स उसक विपरीत भावक चचल रगीला अपव्ययी बहुभाषी है जिसक स्वभाव म प्रदशन की प्रवत्ति अधिक और सावधानी का कम अपयाप्त है। इस प्रकार क साझदारी क अवगुण दनिक जीवन म शीघ्र ही प्रदर्शित होन लगेंग और कितनी भी सहनशीलता

धय एव सौजन्यता इस विषय में पर्याप्त नहीं होगी। ये मूल विभिन्नताएँ सदा ही कष्टकारक रहेंगी।

दूसरा व्यक्ति अपने सहज स्वभाव से समाज प्रिय है अपने दैनिक जीवन में व्यवहार-कुशल है उसके सहगामी का आचरण यदि इसके विपरीत अकेलापन का हो और जिसको अन्य व्यक्तियों से समाज में मिलना जुलना प्रिय न हो तो जीवन सचमुच ही भारी हो जाएगा और स्वाभाविक विपरीतता के कारण शीघ्र ही मानसिक थकान उत्पन्न हो जाएगी।

इस प्रकार के अनेकानेक कारण हैं। लिखावट में अन्तर्मुखी बहिर्मुखी तथा भावुकता, मानसिकता प्रधान विचारधारा उदारता कृपणता अल्पभाषण तथा बहुभाषण आदि के लिखावट के चिह्नों द्वारा सहज ही भाव व्यक्त होता है। इन चिह्नों को पहचानना तथा इनको किन्हीं भी दो लिखावटों में सामंजस्य एवं विभिन्नता देखना कठिन नहीं है।

समाज में ऐसे सहनशील एवं लचीले व्यक्तिगत सामर्थ्य के उदाहरण मिलते हैं जो जीवन के विविध कारणों से कितना भी मानसिक विपरीत आचरण होते हुए भी अपना गुज़ारा कर लेते हैं। परन्तु ऐसे उदाहरण कम हैं। बहुत-से घरों में स्वाभाविक विपरीतता के कारण आपस में झगड़े होते रहते हैं।

इस प्रकार के उदाहरणों में जबकि दोनों व्यक्तियों का विवेचन स्पष्ट हो जाता है तो कुछ सम्भावना इस प्रकार की हो जाती है कि ये दोनों व्यक्ति अपने दृष्टिकोण में स्वच्छन्द होते हुए भी अपने लक्ष्य की एकता को ध्यान में रखते हुए, अपने दैनिक जीवन के आचरण में सहनशीलता के व्यवहार से अधिकाधिक सुगम सौजन्यता प्राप्त कर लें। इसमें वास्तविक व्यक्तिगत तथ्यों का विश्लेषण उनकी स्वच्छन्द स्वीकृति गहनचिंतन आत्म में विश्वास उत्तरदायित्व की उच्च भावना तथा रुचियुक्त आचरण प्रमुख तत्व हैं। व्यक्तिगत मनोयोग में इस प्रकार के मूल तत्वों का होना अथवा उनकी अनुपस्थिति लिखावटें स्वतः प्रदर्शित एवं प्रस्तुत करती हैं।

मनोवैज्ञानिक व्याख्याताओं ने अपने सुसयोजित अध्ययनों में किया है। इनका कथन है कि जीवन के सुख संतोष और शान्ति की प्राप्ति के लिए तथा आत्मा सह योगी की प्राप्ति के लिए गहरे चिन्तन एवं छानबीन की आवश्यकता है और इसमें स्वाभाविक समन्वय की समझदारी प्राप्त करने के लिए लिखावट का सहज मनोवैज्ञानिक अध्ययन पर्याप्त सहायता प्रदान कर सकता है। ऐसे अनेकानेक विविधा जनक प्रश्न हैं जोकि लिखावट के माध्यम से सहज ही स्पष्ट हो जाते हैं।

विवाह विच्छेद के कारणों के विषय में गिरार्ड अन्सन का विवेचन बहुत ही यथार्थ एवं विचारग्राही है। जो दो व्यक्ति कभी विवाह सूत्र में बंध गये थे, उनका पृथक होना जो वचन दिए गए थे जीवनपर्यन्त सहवास के उनका टूटना, जो घर बन चुके थे जिस सुखी भविष्य की कल्पना की जा चुकी थी उसका मिट जाना कितना अधिक दुखान्त एवं असफल सामाजिकता का प्रतीक हो सकता है इसकी कल्पना कर सकना कठिन है। फिर भी यह हो रहा है और इसकी वृद्धि भी होती जा रही है।

इसके कारण अनेक हो सकते हैं। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ और। आज का प्रगतिवाद महंगाई उद्दण्डता स्वार्थ आदि अनेक कारण प्रस्तुत किए जाते हैं। परन्तु वास्तव में कोई भी व्यक्ति साधारणतया ऐसे बने हुए सम्पर्क तथा सम्बन्ध को तोड़ना नहीं चाहता। यथार्थ में इसका कारण व्यक्तिगत मनोयोग की असमानता ही है।

सामयिक भावुक उद्वेग की परिस्थिति में तक प्रवेश नहीं कर पाता। लोग भूल जाते हैं कि विवाह के प्रथम उल्लास एवं रोमांच के उपरान्त दैनिक जीवन का साधारण नित्यक्रम प्रारम्भ होता है इसमें दो व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध बहुत ही निकट हो जाता है दो व्यक्तियों का निजी अपनापन मिट जाता है पृथक जीवन नहीं रहता तथा दोनों व्यक्तियों की निजी रुचि रुझान स्पष्ट होकर सामने आने लगती है।

यदि इस प्रकार के दो व्यक्तियों के स्वभाव की यथार्थ वास्तविकताएं एवं विशेषताएं विवाह के सम्बन्ध के पूर्व उनके सामने आ जाएं जिनमें विपरीतता के लक्षण प्रधान हों तो सम्भवतः वे विवाह के सम्बन्ध के प्रारम्भिक उद्वेग मिट जाएँ और आगे जानकारी विरुद्ध के कष्ट उत्पन्न न होने पाएं।

एक व्यक्ति स्वभाव से बहुत संयमयुक्त है मितव्ययी है अल्पभाषी है सावधान है और पुराने रीति रिवाजों के अनुसार व्यवहारोचित आचरण करने वाला है। उसका सम्बन्ध एक ऐसे व्यक्ति से हो जाता है कि स्वभाव से उसके विपरीत भावुक चंचल उन्मादी अपव्ययी बहुभाषी है जिसके स्वभाव में प्रदर्शन की प्रवृत्ति अधिक और सावधानी का क्रम अपर्याप्त है। इस प्रकार के साझेदारी के अवगुण दैनिक जीवन में शीघ्र ही प्रदर्शित होने लगेंगे और कितनी भी सहनशीलता

धय एवं सोजन्यता इस विषय में पर्याप्त नहीं होगी। ये मूल विभिन्नताएँ सदा ही कष्टकारक रहेंगी।

दूसरा व्यक्ति अपने सहज स्वभाव से समाज प्रिय है अपने दैनिक जीवन में व्यवहार-कुशल है उसके सहगामी का आचरण यदि इसके विपरीत अन्तर्मुखी का हो और जिसको अन्य व्यक्तियों से समाज में मिलना जुलना प्रिय न हो तो जीवन सहज ही भारी हो जाएगा और स्वाभाविक विपरीतता के कारण शीघ्र ही मान सिक तनाव उत्पन्न हो जाएगी।

इस प्रकार के अनेकानेक कारण हैं। लिखावट में अन्तर्मुखी बहिर्मुखी तथा भावुकता, मानसिकता प्रधान विचारधारा उदारता कृपणता अल्पभाषण तथा बहुभाषण आदि के लिखावट के चिह्न लगभग सहज ही भाव व्यक्त होना है। इन चिह्नों को पहचानना तथा इनका किन्ही भी दो लिखावटों में सामंजस्य एवं विभिन्नता देखना कठिन नहीं है।

समाज में ऐसे सहनशील एवं लचीले व्यक्तिगत सामर्थ्य के उदाहरण मिलते हैं जो जीवन के विविध कारणों से कितना भी मानसिक विपरीत आचरण होने हुए भी अपना गुजारा कर लेते हैं। परन्तु ऐसे उदाहरण कम हैं। बहुत-से घरों में स्वाभाविक विपरीतता के कारण आए दिन झगड़े होते रहते हैं।

इस प्रकार के उदाहरणों में जबकि दोनों व्यक्तियों का विवेचन स्पष्ट हो जाता है तो कुछ सम्भावना इस प्रकार की हो जाती है कि ये दोनों व्यक्ति अपने दृष्टिकोण में स्वच्छन्द होते हुए भी अपने लक्ष्य की एकता को ध्यान में रखते हुए अपने दैनिक जीवन के आचरण में सहनशीलता के व्यवहार से अधिकाधिक सुगम सौजन्यता प्राप्त कर लें। इसमें वास्तविक व्यक्तिगत तथ्यों का विश्लेषण उनकी स्वच्छन्द स्वीकृति गहनचिंतन आत्मा में विश्वास उत्तरदायित्व की उच्च भावना तथा रीतियुक्त आचरण प्रेरक तत्त्व हैं। व्यक्तिगत मनोयोग में इस प्रकार के मूल तत्त्वों का होना अथवा उनकी अनुपस्थिति लिखावटें स्वतः प्रदर्शित एवं प्रस्तुत करती हैं।

१०

विविध लिखावटें

इस अध्याय में हम ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों की लिखावटों का विवेचन करेंगे जिनको हमने देखा है अथवा जिनके विषय में हमने सुना या पढ़ा है।

इसमें हमारा लक्ष्य लिखावट के आवश्यक तत्त्वों को पहचानना, एकत्र करना तथा उनके मनोवैज्ञानिक महत्त्व को लेखक के व्यक्तित्व से सम्बन्धित करना है। लिखावट एवं व्यक्तिगत चरित्र में समानता स्थापित करना है।

प्रत्येक लिपि की पूर्व निर्धारित वर्णमाला तथा उसे रूप देने की निश्चित विधि है। प्रत्येक व्यक्ति इन अक्षरों तथा लिखने की विधि को अपनी निजी शैली में क्रियान्वित करता है। यह उसकी अपनी मौलिकता है।

लिखावट में मूल तत्त्व हैं जैसे कि लिखने का कोरा स्थान, लेखनी, स्याही की मात्रा एवं प्रकार, रेखाएं अग्रगामी, अधोगामी, सीधी, गोलाकार, आधार रेखा ऊपर अथवा नीचे तथा अनेक छोटे चिह्न जैसे कि मात्राएं, बिन्दु, विसर्ग, विराम तथा इनकी गति, प्रसार, अवरोध आदि। इसी प्रकार व्यक्तित्व के स्थायी लक्षण हैं प्रत्येक व्यक्ति की जीवन शक्ति, भावुकता, बुद्धि, प्रभावग्राहिता, प्रभावशीलता, रुचि, रुझान आदि। इनकी आन्तरिक प्रेरणा से व्यक्ति की क्रियाशीलता, कल्पना, प्रदर्शन, सामाजिकता, कलात्मकता व्यक्त होते हैं। इनसे सुनियोजित संयम से इनमें स्थायित्व, प्रखरता, प्रौढ़ता, आत्मविश्वास, लगन, क्षमता, दक्षता, उदारता आदि अनेकानेक व्यक्तिगत लक्षण प्राप्त होते तथा व्यक्त होते हैं जिनके समान आचरण से व्यक्तिगत स्वभाव, मनोवेग, प्रगति आदि चरित्र के लक्षण विकसित होते हैं जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति निजी आचरण एवं कृतित्व से सम्मानित होता है।

एक साधारण व्यक्ति वास्तव में अपनी शारीरिक एवं बौद्धिक शक्तियों का साधारण एवं सीमित प्रयोग करता है। विकसित एवं सफल व्यक्तित्व इससे कहीं आगे है। वह अपनी शक्तियों की वास्तविकता की खोज करता है तथा लगन, परिश्रम, धैर्य, उत्साह एवं जिज्ञासा से आगे बढ़ता है। अपनी अन्तर्वर्ती शक्ति का

विकास करता है तज्जनित शारीरिक मानसिक एवं भावुक प्रवृत्तियों को संतुलित सुसंयमित एवं सुनियोजित करता रहता है।



चित्र ३१

गुरुदेव की लेख लिपि उनके सौम्य व्यक्तित्व की चित्रवत् आत्मा है। चेतन, गम्भीर कलात्मक, सम्पूर्ण सुसंस्कृत तथा सहज सर्जनात्मक। उनकी चतुर्मुखी प्रतिभा के अनिवार्य गुण जैसे कि प्रज्ञा संतुलन, सहृदयता सहानुभूति शांतभाव लिखावट के समआकार यथोचित सम प्रवाह गोलाकार रेखाएं उनका विस्तार लेखनी की समरूपता में निहित हैं।

इस प्रकार की सम्पूर्ण और भरी हुई लिखावट में सहज सावधानी पूर्व निर्धारण औपचारिकता निपुणता आत्मविश्वास सर्वांगीण विकास, मैत्री की भावना कलात्मकता अपने स्वच्छन्द विचार व्यक्त करने की सुगमता आदि अनेकों नव पुष्ट लक्षण व्यक्त होते हैं।

महान् साहित्यकार की हस्तलिपि एवं हस्ताक्षर समान सीधे और स्पष्ट हैं। इन दोनों के आकार में समानता है। आडम्बर नहीं है। इसी प्रकार से इनके सम्पूर्ण कृतित्व में स्पष्ट रचनात्मकता है आत्मीयता है आत्माभिमान नहीं है।

बापूजी की स्मृति एक महान् प्रेरक वेग है, सर्वव्यापी है प्रभावशाली है। हम सब इसका अनुभव करते हैं। व्यक्त करना कठिन है भाषा की सामर्थ्य के बाहर है।

एक लिपि प्रस्तुत है। लेखनी की गरिमा और उसका प्रवाह अद्भुत है। इसमें आत्मविश्वास की दृढ़ता नैतिकता स्फूर्ति क्रियाशीलता हठ मानवीयता स्पष्ट है। सम्पूर्ण लिखावट में चिन्तनधारा एक है एक ही लक्ष्य है। एक ही आस्था है। संशय नहीं है। बाधा नहीं है। कोई अवरोधक चिह्न नहीं है। अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कष्ट सहन करने की आन्तरिक शक्ति है। कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने की क्षमता है। अपने विचार स्वच्छन्दतापूर्वक व्यक्त करने की निर्भीकता है।

सम्पूर्ण लिखावट आद्योपान्त सुसंगठित है। यह सफल आयोजक का प्रतीक है।

भाई रामनरेश जी,
आप का खत मिला है
और सटीक मानस भी
आज कल आराम के दिनो में
रोज आध घंटा रामायण
सुनता हूं। तीन दिन से
आप की पुस्तक पढता
हूं। जो प्रसंग चल रहा
है सो तो पढता ही हू और
भूमिका से आरंभ किया
है अब जीवनी चलती है
मेरा तो आप के अनुवाद
पर भरोसा है

वर्धा आपका
५-३-३६ मोहनदास गांधी

चित्र ३२

जिन्ना साहब का हस्ताक्षर श्रमयुक्त है प्रगतिशील है और स्पष्ट है। यह विधिवत् हस्ताक्षर प्रतिभाशाली तार्किकता विलक्षणता औपचारिक आचरण

की प्रतीक है।

इस लिखावट में दो चिह्न प्रधान हैं। पहला, हस्ताक्षर के अन्त का अक्षर पूरा शुद्ध बना हुआ और उसका अन्य अक्षरों से बना होना। अविस्तीर्ण सकरी लिखावट में जिसमें कि अक्षर एक-दूसरे से मिले हुए और पास-पास बने होते हैं और जिसका प्रभाव सतर्कता, गोपनीयता, बुद्धि प्रधान चतुरता एवं अवरोध का है एवं अन्तिम अक्षर की स्पष्टता अद्भुत है। इसका अर्थ है कि लिपि-लेखक अपनी लगन में पहले से अन्त तक लगा रहे। अपने कार्य की सफलता के प्रयास में सतत क्रियाशील रहे। इसके साथ ही इसमें आत्म प्रदर्शन की भावना भी अनिवार्यतः निहित है।

M A Jinnah
15/4/47

चित्र ३३

दूसरा चिह्न हस्ताक्षर के प्रथम अक्षर का आदि भाग है। इसमें इस अक्षर को प्रारम्भ करने वाली रेखा एक गोलाकार सुन्दर आकृति बनाती है। इसका तात्पर्य भी पहले चिह्न के समान है। यह आत्म अभिमान एवं गोपनीयता का लक्षण प्रस्तुत करता है। लिपि-लेखक अपने व्यक्तिगत विचार को व्यक्त नहीं करना चाहता। सावधानी तर्कयुक्त है एवं पदस्थान-सहित नीतियुक्त है।

म० प्र० द्विवेदी
दौलतपुर
12-5-35

चित्र ३४

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की इस लिपि अद्भुत सदा प्रगति लगन एवं नेतृत्व की स्वाभाविक भावना का सजीव उदाहरण है।

लिखावट के सीधे लम्बाकार खड़े हुए अक्षर तीव्रगति में शुद्ध स्पष्ट अक्षरों का बड़ा आकार आदि अनेक चिह्न सम्पन्नता, निर्णयकारक प्रवृत्ति उत्साह आत्मविश्वास, विविधता लगन मन्तव्यता आत्मसंयम नीतियुक्त निर्णय

निष्पक्षता आदि प्रदर्शन लक्षण व्यक्त करते हैं। ऊपर से नीचे की ओर आती रेखा भारी तथा लम्बी पाइयाँ निश्चयात्मक हठीलापन स्वच्छन्द प्रकृति तथा अटूट प्रदर्शन शक्ति की द्योतक हैं।

शिवाजी की लिखावट में शिरोरेखाओं का अक्षरों के साथ मिलते हुए अग्रसर होना प्रभावशाली लक्षण है। यह स्वाभाविक चिंतनधारा के प्रवाह में नीतियुक्त अवरोध का चिह्न है। सतर्कता एवं जागरूकता प्रदर्शित करता है। यह पूर्व परिचित आदर्श नियमों का पालन करना है, प्रगति में भी उनको न त्यागने की प्रवृत्ति है तथा इनके माध्यम से अपनी प्रगतिवादी स्वच्छन्दता को रूप देना है। यह प्रचलित एवं नवीन विचारों का संतुलित समन्वय है मानसिक चातुर्य का प्रतीक है। इस संयम नियम के दृढ़ विश्वास एवं आधार को मानते हुए शिवाजी ने अपनी नवीनता को स्पष्ट किया। यह सफल हुआ आत्मिक अभिरुचि लगन अथक परिश्रम त्याग एवं साधना के कारण। एक नवीन युग का सृजन हुआ।

हस्ताक्षर में प्रथम अक्षर म एवं द्वितीय अक्षर प्र के उपरांत बिन्दु के स्थान पर छोटे वृत्तों के चिह्न बने हैं। ये पुनः स्पष्टता पर जोर देने के स्मारक हैं। इनके व्यक्तिगत कृतित्व में भी समान आचरण है स्पष्ट करना तथा पुनः स्पष्ट करना। यह एक ऐसी नैतिक शक्ति है जो निश्चित एवं गंतव्यता की सफलता को लक्ष्य करती है उसकी प्राप्ति का पुनः स्पष्टीकरण चाहती है।

अक्षर एवं अनेक रेखाओं का वक्रयुक्त एवं कोणाकार होना स्वाभाविक अधीरता व्यक्त करते हैं। इसमें रीतियुक्त तार्किकता अधिक मानसिकता परिश्रम हठी एवं उग्रस्वभाव आलोचना तथा तुरन्त निर्णय लेने की विशेषता है। प्रतिकूल परिस्थिति का निर्भीकता से मुकाबला करना सहज गुण है।

चित्र ३८

जाकिर हुसैन साहब का व्यक्तित्व गम्भीर चिन्तनशील एवं अन्तर्मुखी है। गहन गम्भीर शान्त विवेचन तथा निष्पक्षता इनके महान् पथ प्रदर्शक गुण हैं। इनके हस्ताक्षर के अनवरत सूक्ष्म अक्षर सम तथा रीतियुक्त मिलकर अग्रसर होते हुए इनकी अन्तर्वर्ती सूक्ष्म दृष्टि आलोचनात्मक तर्क तथा नीतियुक्त आचरण व्यक्त करते हैं। इनके ज्ञान एवं क्रियाशीलता का क्षेत्र वृहद् है। परन्तु उसमें लगन की वास्तविकता तथा एकाग्रता अधिक तथा प्रभावकारिता कम है। जो कुछ

व करन हैं उसम मूलतत्व सद्‌भावना है उच्च आदर्श है तथा लक्ष्य प्राप्त करने की गति है। उसम शान्त भाव है वास्तविकता है आडम्बर नहीं है।

सम्भव है कि इनकी शान्तिप्रियता म कुछ दार्शनिक-निष्क्रियता क आभास का धोखा हो और ऐसा प्रतीत हो कि इनको सांसारिकता से अलगाव हो गया है। परन्तु वास्तविकता इसस नितान्त विपरीत है जैसा कि इनक हस्ताक्षर की रचना एव गति प्रस्तुत करता है। डा० जाकिर हुसन की लिखावट उनक वास्तविक अन्तमन की शुद्ध प्रतिच्छाया है। यह बहुत ही सचेष्ट सक्रिय मनक है। शारीरिक मानसिक एव भावात्मक स्फूर्ति है। हस्ताक्षर क पहल दोनो अक्षर ज एव ह काफी बडे और फैले हुए हैं। यह अन्तमन की विशालता है जो सर्वव्यापी है और बड क्षत्र म फैली हुई है। इनके ध्यान का प्रसार भी बहुत फैला हुआ है। कोई बात ऐसी नहीं होगी जो इनकी दृष्टि म न आ जाए। कोई विषय ऐसा नहीं होगा जो इनस छूट गया हो। विशेषता यह है कि क्रियाशीलता म य सब एकाग्र हो जाते हैं तथा गन्तव्य प्राप्त करन म एकचित्त हो जाते हैं। हस्ताक्षर के नीचे बनी हुई स्पष्ट एव निर्णयात्मक सीधी रेखा म इनक गन्तव्य की निर्णयात्मक शक्ति है। बहुत ही निष्पक्ष होकर गम्भीर चिन्तन से अपना लक्ष्य एक बार निर्धारित करना तथा उसको शान्तिप्रियता म ध्यान म सहयोग म प्राप्त करन म लगे रहना ही इनक व्यक्तित्व की महानता है।

राष्ट्र की नीति एव उसके सचालन का भार इनक गम्भीर वास्तविक सृजनात्मक एव शान्तिप्रिय व्यक्तित्व म सुरक्षित है। यह ऐसी सन्तुलित गरिमा है जिसका प्रभाव सर्वव्यापी है सर्वप्रिय है सर्वमान्य है। इनकी स्वाभाविक मधुरता म शक्ति है।

चित्र ७६

यह लिखावट छोट सम अक्षरो से बनी है। कोमल और स्पष्ट है। कहीं-कहीं निरोरखाए भी बनी हैं। स्वभाव म सहज सरलता मधुरता सवेदनशीलता सहयोग एव मत्री की भावना आदि अनेक कोमल मानवीय गुण व्यक्त हैं। रुचि स्थान मे विविधता है। व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न क्षत्रो म इनका ध्यान आकर्षित है।

भावुकता पर मस्तिष्क की प्रधानता है। इसलिए अक्षर कुछ पीछे की ओर झुक हुए प्रतीत होते हैं। यह झुकाव स्वाभाविक है। परन्तु भारी और कम विषय मस्तिष्क को शीघ्र ही थका देते हैं। इनस सतर्क रहना है दूर रहना है। अपने

वास्तविक विचार एवं भावना को अपने तक ही सीमित रखना है। उसका प्रदर्शन करना उचित नहीं है।

सहज और सुखद विषय आकर्षित करते हैं जिनसे सहानुभूति का सामाजिक सुख प्राप्त होता है। जीवन की सुखद कलात्मकता सुन्दर वस्तुओं का संचय घर एवं स्त्रियोचित आचरण में आकर्षण स्वाभाविक है। प्राकृतिक वस्तुओं से प्रेम है—अच्छा घर बच्चे और व्यक्तिगत जीवन सहज कारण है छोटी कोमल एवं गोलाकार लिखावट की रेखाओं का।

आलोचना प्रिय नहीं है उत्साह निष्क्रिय करने वाली है प्रतिक्रियात्मक है सामाजिक प्रोत्साहन की आवश्यकता है अन्तिम अग्रगामी रेखा स्पष्ट है। यह अपना निर्णयसूचक चिह्न है जो कि निश्चित है और निश्चय ही स्वरक्षा की भावना स्पष्ट व्यक्त करती है।

(लाल बहादुर) (Lal Bahadur)

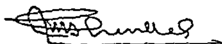
चित्र ३७

दोनों हस्ताक्षरों की रचना रेखाएं प्रसार आदि समान है। छोटे नम्र गोलाकार अक्षर हैं। शान्तभाव अल्पभाषण मृदुभाषण महानुभूतिपूर्ण मृदु व्यवहार मैत्री की भावना मानवता की मूर्ति सहृदय दयालु।

दोनों हस्ताक्षरों की रेखाएं अधिकांश मिली जुली हैं तथा प्रगतिशील वर्ग में हैं। अंतिम रेखाएं आगे की ओर बढ़ी हुई हैं। यह क्रियाशीलता है। उत्साही आगे बढ़कर काम करने वाले। सत्व समान शान्त भाव मानसिक सन्तुलन रखने वाले जिनमें रीतियुक्त अथक परिश्रम करनेवाले निष्पक्ष परन्तु सदैव दूसरे व्यक्तियों तथा परिस्थितियों को समझने में चिन्तनशील। अक्षरों के सम आकार से अधिक ऊपर-नीचे की रेखाओं में प्रसार नहीं है। अंग्रेजी तथा हिन्दी के सब अक्षर समान आकार में छोटे हैं। व्यक्तिगत क्रियाशीलता निकट परिस्थिति पर केन्द्रित है। भावुक कल्पना विवेचन जिसकी नितान्त आवश्यकता है उसमें आगे नहीं है। स्फूर्ति उस काम में लगी है जो अभी हाथ में है।

इस लिखावट में एक निधि विशेषता है। वह है लेखनी को गोलाकार में चलना गोल मुलायम गाँठें बनाना। यह अवरोध अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का एक प्रधान चिह्न है। सहज सद्भाव उदार चित्त होते हुए भी कोमल स्वभाव होते हुए भी शास्त्रीजी के मन की थाह पा लेना असम्भव है। न इस अनेक विचार एवं भावनाओं को जिनको वह वास्तव में व्यक्त नहीं करना चाहते व्यक्त करेंगे।

उतना ही भाषण करेंगे उतना ही प्रभाव आचरण करेंगे जितना कि नितान्त आवश्यक है।



चित्र २८

लेख साहब के हस्ताक्षर में अनेक रेखाएँ हैं प्रगतिवादी हैं और निर्णयात्मक तट रेखा भी है। इसमें उत्साह है जीवन शक्ति है स्फूर्ति है।

इस प्रगतिशील लिपि लेख में स्वच्छ योग्य चिह्न अवरोध के चिह्न हैं जाति अनेक हैं। मध्य पहले आदि में कम-से-कम तीन गोल चक्कर हैं यह भावना कि आगे बढ़ें अभी अथवा कुछ ठहरकर। अक्षर पीछे की ओर मुड़े हुए हैं यह दूसरा चिह्न है सुरक्षा की भावना एवं चिन्तायुक्त चिंतन। अन्त की रेखा वाद और घूमता है। तट रेखा यद्यपि सीधा है इसमें गरिमा नहीं है और इसका भी अन्त भाग पीछे की ओर घूमता है। ये अनेक लक्षण सहज प्रभाव प्रगति स्फूर्ति आदि क्रियाशील आचरण के विरुद्ध हैं तथा इसमें मनोवैज्ञानिक आचरण लिपि लेखक के अन्तर्मन में निहित हैं छिपे हुए हैं।

यह व्यक्तित्व के विपरीत लक्षणों के संगम का उदाहरण है जिसमें सहज शक्ति का प्रदर्शन है वास्तविकता गुप्त भावना स्वार्थचिन्तन एवं स्वार्थ साधन का है।

रा। अविनाश/मधु/मर्द

चित्र ६

यह लिपि-लेख स्वतः प्रयत्न है। व्यक्तित्व भी स्वतः व्याख्यान है।

लिपि-लेख का प्रथम प्रभाव एवं आकर्षण अक्षरों का बड़ा आकार है। यह अत्यधिक जीवन शक्ति का परिचय है। इसमें अत्यधिक स्फूर्ति है सक्रियता है। इसमें क्रिया-क्षेत्र विशाल है। आत्म विश्वास है, निर्भीकता है उद्योग है, अनेक ओर ध्यान देने की वृत्ति एवं क्षमता है।

गति प्रदर्शित है। यह शक्ति का परिचय है भावुक आवेग है। स्थिरता है दृढ़ता है। यह सशक्त भावना को सन्तुलित रखने की मानसिक दृढ़ता है। कुछ अक्षरों का आर-पार झुकाव दाएँ हाथ में स्थिरता का प्रभाव प्रकट होता है। भिन्न-भिन्न अक्षरों में अक्षरों की रेखाओं मात्राओं एवं शिरोरेखाओं का सन्तुलित सामञ्जस्य विषय सामंजस्य प्रखर बुद्धि तत्परता प्रत्यक्ष है। शिष्टाचार आद्योपान्त सम्पूर्ण एवं

सुसस्कृत है। यह नियात्मक क्षमता है तथा व्यक्तित्व की नतिकता एव शुद्धता है।

बडे अक्षर द्रुतगामी सतुलित आगे की ओर बढते हुए मिले जुले स्पष्ट एव सम्पूर्णता के लिपि चिह्नों का योग एक बहुत ही स्वस्थ व्यक्तित्व प्रस्तुत करते हैं। इसमे प्रतिभा बहुमुखी है विचार स्वच्छन्द हैं काय शली स्वतन्त्र है नवीनता है एकीकरण स्वतन्त्र एव स्पष्ट है।

इस प्रकार के महान् व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियो की वास्तविकता तुरन्त समझ लेते हैं। उचित-अनुचित आवश्यक अनावश्यक का निणय स्वत एव तुरन्त कर सकते हैं। अपने विचार शुद्धता निष्पक्षता एव विश्वास से व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं। समाज म इनका मनोयोग सहानुभूति उदारता मित्रता की भावना का रहता है। शक्ति प्रखर है। कुछ-न-कुछ अवश्य करते रहते हैं। अनेको नक काय एक साथ ही हाथ म लिए रहते है। इनके अन्य गुण उत्साह प्रसन्नचित्त मिलनसारी भविष्य की सुखात्मक आशावादी कल्पना मानवता के सद्गुणो की कल्पना एव उत्तम विश्वास विश्वासी प्रकृति का सीधापन आदि हैं। एक नितान्त अपरिचित भी इनके पास पूण स्वतन्त्रता तथा आत्मविश्वास से पहुच सकता है और उसे निराशा नही होगी। ऐसे शुद्ध एव स्वय पूण व्यक्तित्व के दशन कम होते हैं।

चित्र ४

यह महानुभाव मानवता के आदश हैं। कोमल खुले हुए अक्षर आपस मे सुरुचि एव स्वच्छन्दता से मिले-जुले एव अग्रसर होते हुए इनके शुद्ध विशाल-हृदय प्रेरणा सक्रियता के सहज लक्षण हैं।

यह लिखावट सरल एव इसकी रचना प्रवाहयुक्त है। व्यक्तित्व भी व्यापक है। सक्रियता सामाजिकता प्रवाह आदि व्यक्तिगत लक्षण उत्साह लगन एव सवहित के कार्यों म लगे रहने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे व्यक्ति कभी फुरसत म नही रहते। अनेकानेक काय उनके हाथ म रहते हैं। क्रियाशीलता इनका विशेष गुण है। लोगो से मिलना जुलना उनकी समस्याओ को समझना तथा तत्सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करना व्यक्तिगत वृत्ति है।

हस्तलिपि विज्ञान के प्रारम्भिक काल म मुझे इनके दशन करने तथा इनके निकट सम्पक में आने का अवसर प्राप्त हुआ था। उन दिनो यह भारतीय मन्त्रिमण्डल के सदस्य थे तथा मसूरी म थे। कुछ अवकाश म थे। मैं उन दिनो विविध लोगो के लिपियो का सचय कर रहा था। १९४८ का समय था। आपसे मिलने म कठिनाई नही हुई।

तब से बातचीत करना कठिन था। आपका स्वभाव एवं ज्ञान विलक्षण है। नवीनता का प्रोत्साहन देते हैं। दार्शनिक तत्त्वज्ञानी भी हैं। अतः स्वच्छन्दता पूर्ण उनकी लिपि का उदाहरण प्राप्त हो गया। भाग्यवश उनके साथ ही डा० बालकृष्ण केसकर भी ठहरे हुए थे। उनके दर्शन तो नहीं हो सके। परन्तु उनकी भी लिखावट लिखाकरजी के आग्रह से प्राप्त हो गई।

लिखाकरजी का मानव पक्ष विकसित एवं श्रेष्ठ है उनकी सहानुभूति शुद्ध सहृदय एवं व्यापक है। सामाजिक तत्त्व का प्रतिपादन इनके व्यक्तिगत स्वभाव में है।

चित्र ४१

डा० नगेन्द्र प्रसिद्ध समालोचक हैं। उनकी सूक्ष्म दृष्टि गम्भीरता विचारात्मकता एवं विश्लेषकता सुप्रसिद्ध है और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्वतः सिद्ध है।

लिपि-रेखा छोटा और संक्षिप्त है देखिए उसका उदाहरण। इसमें सूक्ष्म दृष्टि अन्वेषण तर्कशीलता एकाग्रता एवं निर्णयात्मक निश्चय है। भावुक उत्साह पर प्रतिबन्ध है।

विचार चिन्तन गम्भीर संयत और प्रौढ़ हैं जैसे कि स्वलिखित हस्ताक्षर हैं। अन्तिम रेखा आदि लहरियादार काफी लम्बी है और नीचे तक चली गई है, स्वतन्त्रता से आत्म प्रदर्शन-सूचक व्यक्त होती है। परन्तु वास्तव में इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव इस लिखावट में उल्टा है। नगेन्द्रजी का स्वभाव शुद्ध अन्तर्मुखी है। प्रदर्शन की वृत्ति इसमें है नहीं। यह इसका एक ऐसा चिह्न है विचारक के लिए उनसे भिन्न या अन्य व्यक्ति के लिए कि इससे आगे कुछ मत कहो। नगेन्द्रजी यद्यपि कभी स्पष्ट कहेंगे परन्तु सही नीतियुक्त और रीतियुक्त कहेंगे। उनके विचार सूक्ष्म पने स्पष्ट एवं सम्पूर्ण हैं।

इन्दिराजी के विषय में जो कुछ भी सुनने तथा पढ़ने में आता है उसमें उनके स्वर्गीय पिता जवाहरलाल नेहरू का उल्लेख अवश्य होता है। उनके व्यक्तित्व की छाप उनके स्वभाव की छाया, प्रभाव आदि लक्षणों का विवरण दिया जाता

है इंदिराजी के व्यक्तित्व के विषय में। यह एक तुलनात्मक विवरण होता है, जबकि यह सत्य है कि श्रद्धेय पण्डितजी के महान् सर्वव्यापी व्यक्तित्व की छाया उसका प्रभाव इन्दिराजी के व्यक्तित्व पर होना अनिवार्य एवं उचित है। यह इन्दिराजी के निजी व्यक्तित्व के प्रतिपादन, निरूपण के लिए न्यायपूर्ण नहीं है। श्रद्धेय पंडितजी एक महान् आत्मा थे। उनका प्रभाव सर्वव्यापी था। संसार के अनेकानेक सक्रिय व्यक्ति उनसे प्रभावित हैं। परन्तु इन्दिराजी का व्यक्तित्व जिसमें समाज सहज समर्पित है अपना निजी है व्यक्तिगत है स्पष्ट है तथा पर्याप्त है।

Yours sincerely
Indira Gandhi

चित्र ४२

इंदिराजी के व्यक्तित्व का निरूपण हम उनकी लेख लिपि में पर्याप्त मात्रा में पाते हैं। इन्दिराजी का व्यक्तित्व शुद्ध है स्पष्ट है स्थिर है स्वयं पूर्ण है तथा प्रभावशाली है।

छोटे आकार के सीधे अक्षर बिन्दु आदि चिह्न यथास्थान सुव्यवस्थित तथा गोलाकार रेखाएं अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के शुद्ध चिह्न हैं। इनमें किसी प्रकार का उद्वेग प्रदर्शन की भावना तथा अतिरिक्त व्यक्तीकरण नहीं है।

लिखावट स्थिर है प्रौढ़ है जमी हुई है अक्षर स्वावलम्बी सीधे खड़े हुए हैं प्रगति स्वाभाविक है। शब्दों के बीच रिक्त स्थान अधिक है शब्दों में अक्षरों का संयमित प्रतिपादन है।

स्पष्ट है कि इंदिराजी अपने व्यक्तित्व में आत्मविश्वासी है स्वतन्त्र हैं और क्रियात्मक हैं। जिज्ञासु हैं छानबीन करना चाहती हैं। वास्तविकता को समझना तथा उसके अनुसार निष्पक्ष कार्य करना अपना स्वतन्त्र निर्णय देना इनका स्वाभाविक गुण है। वह सदा ही साफ बात करेंगी। उनमें चतुरता नहीं है। स्पष्ट बोलेंगी। जमकर काम करेंगी। अपना उत्तरदायित्व नतिकता और पूरी तरह से समझेंगी एवं सम्पन्न करेंगी। उनका विशेष गुण स्वावलम्ब है निष्पक्षता है क्रियाशीलता है आडम्बर नहीं है निरर्थक भाषण नहीं है सिद्धान्तों पर अटल रहना है। इनकी स्वतन्त्र सुनियोजित सुसंस्कृत एवं संक्षिप्त लिखावट इसकी साक्षी है।

उनके प्रधानमन्त्री होने के विषय में आलोचना की जाती है कि उनमें बुद्धि चातुर्य नहीं है। यह कहना अधिक उचित है कि उनमें दिखावा नहीं है। यह भी कहा जाता है कि इनमें अपने पूर्ववर्ती प्रधानमन्त्री का शक्ति उत्साह, पहुंच

प्रखरता एवं निर्भीकता की कमी है। इस प्रकार की समानता उचित नहीं है। पंडितजी में जितनी वास्तविक शक्ति थी उससे अधिक उनकी प्रदर्शनकारिता थी। वह व्यक्त करने के अभ्यासी थे तथा अपने उत्साह से कहीं भी पहुँचकर अपना प्रभाव प्रदर्शित करते थे। यह एक युक्ति है। परन्तु सफल व्यक्तित्व एवं नेतृत्व की केवल यही एक युक्ति नहीं है।

सरलता, यथार्थता, मौलिकता तथा प्रतिपादन की प्रवृत्तियाँ भी इसी प्रकार की दूसरी युक्तियाँ हैं जो कि सफल नेतृत्व के मार्ग की अग्रगण्य विशेषताएँ हैं।

चित्र ४३

मोरारजी देसाई ने अपनी सामर्थ्य, कार्यक्षमता एवं सरलता का ऊँचा स्तर स्थापित कर लिया है। यह नई बात नहीं है। उनके प्रारम्भिक जीवन से ही इस प्रकार के निपुणता के गुण प्रदर्शित हैं। इससे अधिक इनका आत्मविश्वास है जो निश्चित एवं सबल है। यह आदर्शजीवी हैं। जीवन में अपना आदर्श एक ही बार स्थापित होता है। उसके उपरान्त वे आचरण अनुकरण करते हैं।

लिपि-लेख में लेखनी पर दबाव अधिक, अग्रगामी रेखाएँ, स्वच्छन्द एवं सुविस्तृत बड़े अक्षर, मात्राएँ ऊँची और लम्बी, स्पष्ट और सीधी नीचे रेखा महत्त्वपूर्ण हैं। ये स्पष्टता एवं गहनता के लक्षण हैं। व्यक्तिगत जीवन में शक्ति एवं गरिमा के लक्षण हैं।

मोरारजी देसाई का व्यक्तित्व अपने में स्वतन्त्र, बलशाली प्रेरक व्यक्तित्व का उदाहरण है। इसमें आत्माभिमान है जो कि किसी भी न्याययुक्त क्षमतायुक्त सफल व्यक्तित्व में होता है परन्तु सामाजिकता एवं सहयोग भी है। लिखावट का वेग ऐसा है जो स्वच्छन्द आचरण करता है और चाहता है। परन्तु उसका सन्तुलित प्रतिपादन भी है जो कि अनेकानेक परिस्थितियों से युक्तियुक्त सहयोग भी प्राप्त कर सकता है। यदि स्वाभाविक हठीलापन न हो तो व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना किस प्रकार से किया जा सकता है, परिस्थितियों पर विजय किस प्रकार से पाई जा सकती है।

लिखावट का सीधा आकार स्पष्टता एवं स्थिरता, निर्णयात्मक आत्मबल के प्रतीक हैं। इसकी शुद्धता एवं कलात्मकता सौन्दर्य-आकर्षण एवं भावात्मक संवेदनशीलता के भी स्रोत हैं।

चित्र ४४

एक लक्ष्य, क्रियाशीलता, व्यावहारिकता तथा लगन वसकरजी के व्यक्तित्व के सरल साधन हैं। स्वच्छ स्पष्ट साधारण अक्षर इसके उदाहरण हैं। समगति चित्त की स्थिरता, शान्तभाव, गम्भीरता एवं सौम्यता प्रदान करती हैं। प्रत्येक आचरण के छोटे-से छोटे लक्षणों को समझना, उसका उपयोग करना तथा उससे अपनी क्रियाशक्ति को पर्याप्त सम्पूर्णता देना वसकरजी की विशेषता है। यह व्यक्तित्व मुख्यतः अन्तर्मुखी है, चिन्तनशील, शिष्ट, अल्पभाषी एवं व्यावहारिक। अपने काम में ध्यान लगाए रहना सहज स्वभाव है। व्यक्तिगत भावना, रुचि, रुझान, आचार विचार आदि का प्रदर्शन करना इनके अन्तवर्ती मनोयोग के बाहर है। ये विद्वान् पण्डित के विशेष गुण हैं जिसमें पाण्डित्य की मात्रा महान् तथा भावुक प्रदर्शन आडम्बर की मात्रा न्यून है।

चित्र ४५ ४६

पण्डित रामचन्द्रजी रिछारिया की सुन्दर लिपि की स्पष्टता आदरणीय है। प्रत्येक अक्षर पूर्ण एवं मात्रा शुद्ध तथा सम्पूर्ण है, रचना में गति है, वजन है, दृढ़ता है। इनका साहस, लगन तथा व्यक्तिगत निर्णयात्मक शक्ति अपार है। जिस काम में लग जाते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। उसके पीछे लग ही रहते हैं। बाधा

एक कष्ट जैसी वस्तु से इनका परिचय ही नहीं है। किसी प्रकार का भय एवं आडम्बर इनको छूकर नहीं निकला है। सरल शुद्ध मित्रता की भावना मन में इनकी सामाजिकता को प्रोत्साहन देती है। सहानुभूति एवं उदारता इनके महान् गुण हैं। साधारण बिन्दु के स्थान पर वृत्त का निर्माण इनकी नवीनता एवं ध्यान करने की शक्ति का परिचय है। क्रोध सकता भी है परन्तु यदि इनका मनोवेग बिगड़ जाए तो यह अपनी जिद पर आ जाते हैं तथा उस समय इनको समझ सकना कठिन ही नहीं दुस्साध्य है जैसा कि इनके दूसरे हस्ताक्षर के उदाहरण में व्यक्त है।

परन्तु जब यह अपने दूसरे हस्ताक्षर की मानसिक अवस्था में आ जाते हैं परिस्थिति अनुकूल हो जाती है। क्रियाशीलता अपनी वास्तविक निश्चलता पकड़ लेती है। उस समय इनके मनोयोग का सामना कर सकना कठिन हो जाता है।

(V.V. Giri)

चित्र ४७

इस लिखावट की मुख्य रेखाएं स्पष्ट हैं अधोगामी तथा अग्रगामी रेखाएं बराबर एवं काफी लम्बी हैं। जीवन शक्ति तथा क्रियाशीलता का बाहुल्य है चन्द्रमहल है। लिखावट के अक्षर लम्बाकार होते हुए कुछ संकर हैं विस्तार अधिक नहीं हैं तथा कोणाकार हैं। इसमें मानसिकता अधिक है भावुकता भी बहुत है परन्तु आत्मसंयम से सुसम्मिलित है। तर्क विवेचना प्रत्येक छोटी-बड़ी बात पर ध्यान देना एवं लगन से परिश्रम करना आदि क्रियात्मक लक्षण हैं। स्वभाव में उग्रता निश्चयता अपने निर्णय पर जमे रहना आदि व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण प्रतीत होते हैं।

मुख्य रेखाओं का अक्षर लिखाओं में पड़ना बड़े कार्यक्षेत्र विस्तृत ज्ञान एवं विचारों का प्रदर्शन करता है। स्वतन्त्रता-संग्राम के प्राय प्रारम्भ से ही श्री गिरिजी के नेतृत्व कृतित्व एवं व्यक्तिगत विद्वत्ता से भारतीय जनगण परिचित है।

चित्र ४८

प्रथम हस्ताक्षर अंग्रेजी में हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि हस्ताक्षर का वास्तविक मनोयोग यही है। अतः हम इसका ही मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने का

प्रयास करेंगे। समस्या कठिन है। इस लिपि लेख को बड़े आकार का नहीं कह सकते क्योंकि इसका अन्तिम भाग छोटे अक्षरों का है। छोटे आकार भी नहीं कह सकते क्योंकि इसका आदि भाग बड़े आकार का है। फिर इसमें सब अक्षर मिले हुए हैं। केवल एक जगह लेखनी उठाई है सम्भवतः सुगमता के लिए। अन्तिम अक्षर की अन्तरेखा आगे नहीं बढ़ती पीछे भी नहीं जाती सीधी नीचे की ओर चली जाती है। हिन्दी में हस्ताक्षर की पूरी लेख लिपि छोटे अक्षरों के आकार की है।

दोनों हस्ताक्षर प्रगति में ऊपर की ओर उठते हुए हैं। दोनों हस्ताक्षरों के नीचे छोटी परन्तु दृढ़ निश्चयात्मक तलरेखा बनी हुई है।

बड़े अक्षर एवं ऊपर उठती लिखावट उत्साह आत्मविश्वास स्फूर्ति के लक्षण हैं। जैसा कि श्री चह्वाण व्यक्तिगत सामाजिक जीवन में हैं प्रसन्नचित्त और मिलनसार। क्रियाशीलता का दृष्टिकोण भिन्न है। इसमें एकाग्रता है लगन है और दृढ़ता है। किसी भी कार्य की योजना हाथ में लेने के बाद एकाग्रता अधिकाधिक बढ़ती जाती है जिसमें प्रचार एवं प्रदर्शन वृत्ति नहीं है। और जब तक यह योजना सम्पूर्ण न हो जाए उनका ध्यान इधर उधर विचलित नहीं होता। इस प्रकार के काम में तथा अपनी कार्य-वृत्ति में वह किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होने देंगे। उनके मन की बात जान सकना कठिन है। यह गुप्त मन्त्र है सम्भवतः सरदार पटेल का जो कि अपने कर्तव्य के विषय में व्यर्थ एवं अतिरिक्त वाद विवाद करना तथा अपनी क्रिया शैली व्यक्त करना पसन्द नहीं करते थे। जो काम करना है उसके विषय में अधिक बात करना व्यर्थ है। जहाँ तक गम्भीर विषयों का सम्बन्ध है चह्वाणजी से रहस्योद्घाटन की आशा नहीं है। यह निश्चयात्मक हैं दृढ़ हैं।

पूरी लिखावट गम्भीर एवं निश्चयात्मक शैली की प्रतीक है।

विनीता,

सुशीला नैयर

(सुशीला नैयर)

चित्र ४६

सुशीलाजी की लेख लिपि स्वच्छन्द बड़े आकार की तथा स्पष्ट है लेखनी का दबाव हल्का है परन्तु स्थिर है।

स्वभाव में सुशीलाजी सरल उत्साही प्रसन्नचित्त हैं। बहिर्मुखी प्रतिभा के लक्षण स्पष्ट हैं। अनेकानेक परिस्थितियों में सम्पर्क रखने में समर्थ हैं। समाज

प्रिय हैं। समाज के विभिन्न स्तरों में लोगों से मिलना जुलना उनकी बात को समझना उनके लिए सहज है।

क्रियाशीलता में उनकी लगन पक्की है अनेक कार्यों का सचालन कर सकने में समर्थ हैं।

अपने उत्साही सरल उदार स्वभाव से समाज में प्रभावशाली एवं प्रिय हैं। भावुकता के चिह्न अधिक हैं। मनोवेग संवेदनशील है।

विविध लिखावटों के प्रस्तुत उदाहरणों से तथा उनकी मनोवैज्ञानिक समीक्षा से प्रस्तुत है कि लिपि-लेख केवल बौद्धिक एवं शारीरिक क्रिया नहीं है। इसमें वास्तविक मौलिकता है और यह मौलिकता व्यक्तिगत मनोयोग से प्रभावित होती है तथा यह ऐसा सुसम्मिलित चित्र प्रस्तुत करती है जिसमें लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण लक्षण प्रस्तुत एवं प्रदर्शित रहते हैं।

हस्तलिपि विज्ञान इस लिखावट की रचना विलक्षणता एवं व्यक्तिगत संस्कार के माध्यम से व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विवेचन का प्रयास करता है। यह कितना सफल है तथा इसे कितना सफल बनाया जा सकता है यह व्यक्तिगत पाण्डित्य प्रतिभा एवं दक्षता पर निर्भर है। परन्तु इतना तो मानना ही पड़ता है कि लिपि-लेख एवं व्यक्तित्व की सफलता स्वच्छन्द विचार एवं आचरण अथवा भाग्यपक्षी धारणा पर निर्धारित नहीं हैं। सफल लेख लिपि एवं व्यक्तित्वसंयम लगन दृढ़ निश्चय जीवन शक्ति समझ आदि रीतियुक्त आचरण की शक्ति की साधना का फल है।

ज्ञान एवं विवाद में आगे ये लिपि-लेखों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रदर्शित करते हैं कि सफल व्यक्तित्व की प्राप्ति लगातार दृढ़ निश्चय एवं संघर्ष से प्राप्त होती है। जिन व्यक्तियों की जीवन शक्ति जाग्रत तथा सुसस्कृत है वे अपनी वृत्तियों के समुचित विकास के संकल्प में लगे ही रहते हैं जिनसे उनका अधिकाधिक निखार होता रहता है तथा उनकी क्रियाशील क्षमता, दक्षता एवं व्यक्तिगत प्रतिभा में प्रगति होती रहती है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य एक बार केन्द्रित कर लेते हैं तथा उसके मार्ग पर निरन्तर धैर्य चतुरता एवं निश्चयात्मक शक्ति से लगे रहकर अपनी सफलता की चरम सीमा पर पहुंचते हैं।

लिपि-लेख व्यक्तित्व की क्षमता मनोयोग एवं सजीव सतर्कता अपने सहज छायावत् स्वभाव से सदैव व्यक्त रहते हैं।

• • •

GERMAN

(1) Graphologische Praxis von Alfred German
(2) Der Wille in der Handschrift von Mercel De Trey
(3) Trieb und Verbrechen in der Handschrift Ausdrucksbilder asozialer Personlichkeiten von Dr Max Pulver
(4) Kleines Handbuch moderner Graphologie Praktische Einfuhrung in die Handschriften—Deutung von Dr Kurt Rohner Berne
(5) Intelligenz im schrift ausdruck von Max Pulver Zurich

FRENCH

(1) Initiation Graphologique by Charles Dietrich Paris
(2) L Ecriture Ne Ment Pas Preface De J Crepieux Jamin Tradint Par Ivan Goll by Raphael Schermann Parix
(3) La Graphologie mise a la portee de Tous Texte orne de 800 modeles d ecritures Paris
(4) Graphologie Georges de B auchamp Paris

परिशिष्ट—२

सस्थाओं की सूची

INSTITUTIONS

Graphology is studied in various Universities in Europe and in other Institutions given exclusively to Graphology Some of these are as follows

West Germany

Institute of Psychology University Mainz Saarstrasse Mainz

Association of German Graphologists Detsche Graphologische Vereinguing V Berufsverband deutscher Graphologen —M3 3 Manheim

University of Hamburg

University of Munich

Facilities for studies in graphology are available in almost every University in Germany as a part of studies in Psychology

FRANCE

La Societe de Graphologie 6 rue Casimir—Delavigne Paris VI

The activities of this society consist of Publishing a Quarterly known under the title of La Graphologie—and offering courses at the end of which a diploma is delivered

SWITZERLAND

University of Zurich

Institute of Angewandte Psychologie Zurich

A student who wants to go in for examinations and Diploma in Graphology has to attend eminar lectures in Graphologie as well as other courses of Psychology for three years

Schweizerische Graphologische Gesellschaft Luisenstr—46 Bern

A strict examination in Graphology can be taken A student who passes the exam can become a member of the above society The only requirement for this examination is the talent the ability and the knowledge of Graphology as well as some knowledge of Psychology

Z ntral institute for Schrift Psychologie Berlin Zehlendrof Am Fuchspass 44

Institute for Psychology and Characterology at the Freiburg University Freiburg I Br Belfortstrasse—11

United Kingdom

The Insight Institute—School of Personal Analysis and Development New Malden Surrey

Offers postal tuition courses and thereafter Associate Membership of the Institute

U S A

The New School for Social Research 66 West 12th Street New York 11 NY

This school has two courses on graphology

(a) Graphology I Handwriting Analysis

(b) II Advanced

The first course is designed to introduce the student to the Fundamental concepts and techniques of graphological analysis Competence in at least one other projective method is pre requisite Students who complete the course in handwriting analysis in the previous year may enroll for the second year only for one point of credit at a fee of 25 s

The pre requisite for the advanced course is a basic course in graphology some Psychology or clinical training or equivalents

It is concerned with the problems of screening personnel and analyzing p rsonality for individual productivity Empha sis is on the practical application of graphological procedure

परिशिष्ट—३

जेकोबी का मौलिक कथन

The science of graphology is based on the fundamental principle that every single handwriting has a character of its own and claims that this manifoldness of handwriting apart from minor influence of writing materials of various school models etc is primarily due to the uniqueness of its writer s personality

Therefore the question arises whether the properties of handwriting are numerous enough for the structure of every individual handwriting to be different from that of all others

In order to avoid intricate details the problem shall be reduced to the question How many different ways of shaping a single stroke are possible ?

The following procedure was adopted from two hundred addressed envelopes the I s of W C I were cut out and pasted side by side as illustrated in Fig 1 and Fig 2 The read r may carefully compare these strokes with each other but he will not be able to discover two strokes which are completely identical or even conspicuously similar to each other It may be pointed out that these samples were by no means selected on account of their dissimilarity they were cut out from envelopes just as they happened to arrive

he result however is interesting enough The considerable ence between these two hundred strokes displays the ldness of shaping a single trok The strokes differ in width writing angle pressure decisiveness and other cteristics Some strokes are drawn tapier like downwar other th ckening towards the ba e some show un teady and some even pressure some strokes are facile and tender

A strict examination in Graphology can be taken A student who passes the exam can become a member of the above society The only requirement for this examination is the talent the ability and the knowledge of Graphology as well as some knowledge of Psychology

Z ntral institute for Schrift Psychologie Berlin Zehlendrof Am Fuchspass 44

Institute for Psychology and Characterology at the Freiburg University Freiburg I Br Belfortstrasse—11

United Kingdom

The Insight Institute—School of Personal Analysis and Development New Malden Surrey

Offers postal tuition courses and thereafter Associate Membership of the Institute

U S A

The New School for Social Research 66 West 12th Street New York 11 NY

This school has two courses on graphology

(a) Graphology I Handwriting Analysis

(b) II Advanced

The first course is designed to introduce the student to the Fundamental concepts and techniques of graphological analysis Competence in at least one other projective method is pre requisite Students who complete the course in handwriting analysis in the previous year may enroll for the second year only for one point of credit at a fee of 25 s

The pre requisite for the advanced course is a basic course in graphology some P ychology or clinical training or equivalents

It is concerned with the problems of screening per onnel and analyzing personality for individual productivity Empha sis is on the practical application of graphological procedure